आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 जुलाई, 2015
वर्ष : 73 ★ अंक : 07 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 जुलाई, 2015 ★ द्वितीय आषाढ़, 2072

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :

Rajeev Nita Daga Foundation Houston

Jai Guru Hasti

Jai Guru Heera Jai Guru Maan

।। जैनं जयति शासनम् ।।

दान से पुण्य होता है, पर संयम से कर्मों की निर्जरा होती है।
दान हृदय की सरलता है, पर संयम हृदय की शुद्धता है ।।

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

31878

।। महावीराया नमः ।।

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा

जय गुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

S. .D. GEMS &
SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

FC51, Bharal-Diamond Bourse, Bandra Kurla Complex,
Bandra (E), MUMBAI-400051 (MAH.)
Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429
Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Heera Jai Guru Hasti Jai Guru Maan

व्यसनी से उसी प्रकार बचना चाहिये, जिस प्रकार छूत के रोगी से बचा जाता है।

- आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी
हिन्दी-मासिक

卐 **संरक्षक**
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **प्रधान सम्पादक**
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in
E-mail : editorjinvani@gmail.com

卐 **सह-सम्पादक**
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जगनिस्सिएहिं भूएहिं,
तसनामेहिं थावरेहिं च।
नो तेसिमारभे दंडं,
मणसा वयसा कायसा चेव।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 8.10

जितने त्रस-स्थावर जीव जगत् के,
आश्रय में रहने वाले।
मन-वचन-काय से कभी नहीं,
उनको वध-बन्धन में डाले।।

जुलाई, 2015
वीर निर्वाण संवत्, 2541
द्वितीय आषाढ़, 2072

वर्ष 73 अंक 7

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986
IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता
'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	हमारा आहार	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	11
विचार-वारिधि-	अन्तरंग-शुद्धि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	12
प्रेरक-संदेश-	आचार्यप्रवर श्री हीरा का संदेश	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	13
प्रवचन-	दृष्टि बदलने का कमाल	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	15
आत्म-मंथन-	संयमी भी रोगी और महारोगी क्यों ?	-श्रद्धेय श्री उदयमुनिजी म.सा.	24
शोधालेख-	जैन दर्शन में मन का प्रबन्धन	-डॉ. ज्योति सेठी	31
जीवन-व्यवहार-	यतना धर्म महान्	-श्री अरुण मेहता	39
अध्यात्म-	दुःख-मुक्ति एवं सुख-समृद्धि के सूत्र (5)	-श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	45
युवा-स्तम्भ-	जो सत्य है वही मेरा है	-आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरिजी	47
तत्त्व-चर्चा-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (94)	-श्री धर्मचन्द जैन	49
आ.पद रजतवर्ष-	आचार्य श्री हीरा पर भावाभिव्यक्तियाँ	-संकलित	53
नारी-स्तम्भ-	महिलाओं की असुरक्षा : एक ज्वलन्त राष्ट्रीय मुद्दा	-श्री एन.एम रांका	56
काव्य-	वीर प्रभु की अंतिम वाणी (12)	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	62
बाल-स्तम्भ -	चरण स्पर्श के लाभ/हमारी लाइफ एक नोट बुक है	-श्री अभयकुमार जैन/श्री मोहन कोठारी 'विनर'	65
स्वास्थ्य-विज्ञान-	प्रभावशाली चुम्बकीय चिकित्सा	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	69
चिन्तन/विचार-	चिन्तन की मनोभूमि	-श्री सम्पतराज चौधरी	44
	Nice Lines	-Sh. Dinesh Jain	74
	एक अच्छे विचार की विशेषता	-श्री मनीष उज्ज्वल	103
कविता/गीत-	हिम्मत और मेहनत	-श्री शिखरचन्द छाजेड़	23
	सांसारिक जीवन	-डॉ. रमेश मयंक	29
	सच्चे अनुयायी कहाएँ हम	-श्री दिलीप गाँधी	30
	संघ हमेशा बड़ा रहेगा	-डॉ. दिलीप धींग	89
	जीवन-बोध क्षणिकाएँ	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी	123
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	75
शिविर-रिपोर्ट-	नूतनता से संवलित रहे इस बार भी ग्रीष्मकालीन शिविर	-श्री जितेन्द्र डागा	77
समाचार विविधा-	चातुर्मास सूची-2015	-संकलित	90
	समाचार-संकलन	-संकलित	104
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	121

सम्पादकीय

हमारा आहार

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

कुछ दिनों पूर्व देश में एक विस्मयजनक निर्णय लिया गया। बच्चों को एवं बड़ों को भी पसन्द आने वाली मैगी-नूडल्स के विक्रय पर देश में रोक लगा दी गई। दोष बताया गया कि इसमें सीसा (Lead) की मात्रा जरूरत से कई गुनी अधिक है। दूसरी बात यह है कि इसमें मोनो सोडियम ग्लुटामेट (MSG) की मात्रा पाँच गुनी होते हुए भी इसे MSG से रहित बताया गया। सीसा एवं MSG की उपलब्ध मात्रा शरीर के लिए अत्यधिक हानिकारक है। भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण ने मैगी ब्राण्ड के 9 प्रकार के नूडल्स को सेहत के लिए खतरनाक एवं असुरक्षित पाया है। मैगी नूडल्स की भाँति अन्य उत्पादों में भी, जाँच करने पर किसी न किसी प्रकार का हानिकारक तत्त्व ज्ञात हो सकता है। इसलिए ऐसे उत्पादों का सेवन किया जाए या नहीं, यह प्रश्न आज जनमानस को कुरेद रहा है।

हम आहार का सेवन शरीर के पोषण के लिए करते हैं। आहार से ही हमें जीवनी शक्ति प्राप्त होती है। बिना आहार के दीर्घकाल तक नहीं रहा जा सकता। अब प्रश्न यह है कि हम आहार किस प्रकार का करें? बाजार में हमें दो प्रकार की आहार-सामग्री प्राप्त होती है- 1. शरीर का समुचित पोषण करने वाली, 2. स्वाद के प्रति आकर्षित करने वाली, किन्तु विटामिन, प्रोटीन आदि से रहित। आज लोगों की पोषण की अपेक्षा स्वाद के प्रति अधिक रुचि है। बालक हो या बड़े, आहार का सेवन करते हुए शरीर के स्वास्थ्य एवं पोषण का विचार नहीं करते, मात्र आसानी से उपलब्ध बाजारू वस्तुओं को अपना आहार बनाते जा रहे हैं। घर में बनाया गया आहार स्वादिष्ट भी होता है एवं स्वास्थ्य का पोषक भी। समय की कमी के कारण एवं बाजार में फास्टफूड एवं जंकफूड की उपलब्धता के कारण घर में आहार बनाने की अपेक्षा इन्हें पसन्द किया जा रहा है। बाजार में पैकेज्ड फूड पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है।

विकास के इस युग में सबके पास समय की कमी है। गृहिणियाँ भी अत्यन्त व्यस्त हैं। कुछ गृहिणियाँ कार्य स्थल पर जाने से व्यस्त हैं तो कुछ घर में टी.वी. आदि देखने के कारण या अन्य कार्यों को अधिक प्राथमिकता देकर अपनी व्यस्तता प्रकट करती हैं। इसलिए बाजार में निरन्तर ऐसी वस्तुएँ बढ़ती जा रही हैं जो फास्टफूड एवं जंकफूड के नाम से जानी जाती हैं। अब बाजार में तरोताजा आहार पर नहीं, पैकिंग में उपलब्ध वस्तुओं के प्रति अधिक आकर्षण है। जो मिनटों में तैयार हो जाये उसे फास्टफूड कहा जाता है तथा जंक फूड

वह है जिसमें कैल्शियम, विटामिन, आयरन, फाइबर और प्रोटीन जैसे आवश्यक तत्त्वों की भारी कमी होती है तथा अनावश्यक व हानिकारक ट्रांसफैटी एसिड, सेच्यूरेटेड फैटी एसिड, शुगर और सोडियम जैसे तत्त्वों की मात्रा अधिक होती है। इस जंक फूड के अन्तर्गत पिज्जा, समोसा, बर्गर, तेल में तली हुई वस्तुएँ आदि सम्मिलित होती हैं। फास्टफूड के अन्तर्गत आहार का वह सभी प्रकार सम्मिलित होता है जो शीघ्र तैयार किया जाता है। किन्तु इसमें भी आवश्यक विटामिन, खनिज लवण, प्रोटीन आदि की कमी रहती है। आजकल फास्टफूड का जमाना है। तुरन्त तैयार होने वाली भोजन सामग्री बाजार में इस प्रकार तैयार की जाती है कि उसका एक बार सेवन करने के पश्चात् बार-बार लोग उसे चाव से खाते हैं।

पिज्जा, बर्गर आदि का मार्केट बढ़ता जा रहा है। कोल्ड ड्रिंक में हानिकारक रसायन तो होते ही हैं, चीनी की मात्रा भी अत्यधिक होती है जो शरीर को नुकसान पहुँचाती है। किसी भी कोल्ड ड्रिंक कम्पनी ने यह दावा नहीं किया है कि इससे स्वास्थ्य को लाभ होता है। चीनी के अतिरिक्त इसमें कैफिन भी होता है। हार्वर्ड विश्वविद्यालय में किये गये अध्ययन से यह सामने आया है कि कोल्ड ड्रिंक पीने से डायबिटीज, हृदय रोग तथा शरीर में गांठें बनने का खतरा उत्पन्न हो जाता है।

बाजार में आलू की चिप्स भी पैकिंग में उपलब्ध है। इसमें चिप्स नौ गुनी महंगी भी पड़ती है और स्वच्छता का एवं शुद्ध मसालों के प्रयोग का अभाव रहता है। घर पर बनी चिप्स सस्ती भी होती है एवं गुणवत्ता की दृष्टि से भी अच्छी होती है। फिर भी बाजार में सुलभ होने से पैकिंग की चिप्स अधिक खरीदी जा रही है। घर की सेवइयाँ बाजार के नूडल्स से बेहतर होती हैं, किन्तु अब यह श्रम कौन करे? घर में इन्हें बनाना बन्द सा हो गया है। विश्वसनीय गृह कुटीर उद्योग में बनी सेवइयाँ, पापड़, बड़ियाँ, राबोड़ी आदि का उपयोग पैकिंग में मिलने वाली वस्तुओं से कहीं बेहतर है।

जंकफूड एवं फास्टफूड से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं जिनमें हृदय रोग, मधुमेह एवं कैंसर जैसी बीमारियाँ भी संभव हैं। इन भोज्य सामग्रियों के प्रचलन के मुख्यतः तीन कारण हैं- 1. माता-पिता के पास समय नहीं होना, 2. दूरदर्शन पर निरन्तर विज्ञापन आना, 3. जिह्वा पर उस स्वाद का प्रभाव रहना। दूरदर्शन पर विज्ञापनों को देखकर नई पीढ़ी इन वस्तुओं के प्रति आकर्षित होती है। इससे इन भोज्य सामग्रियों का भविष्य भले ही अच्छा हो, किन्तु भावी पीढ़ी का स्वास्थ्य खतरे में है। चॉकलेट, कुकीज, स्नेक्स आदि के बच्चे गुलाम हो गये हैं। जंक फूड का अधिक मात्रा में सेवन करने से बच्चों का मोटापा बढ़ रहा है, तथा मधुमेह का खतरा जल्दी उपस्थित हो जाता है। शरीर को लाभ नहीं पहुँचाने वाली खाद्य सामग्री लोगों की जिह्वा पर इतनी हावी हो गई है कि वे घर में बनने वाले दलिया, खिचड़ी,

राबड़ी, हलवा, ढोकला, मूंग, मोठ, सत्तू आदि को भूलते जा रहे हैं।

चीनी एवं नमक का प्रयोग भोजन का आवश्यक अंग है, किन्तु इनका अधिक प्रयोग शरीर के लिए हानिकारक है। चीनी से कैलोरी मिलती है, किन्तु यह मोटापा बढ़ाने एवं मधुमेह उत्पन्न होने में कारण बनती है। अधिक नमक का सेवन करने से उच्च रक्तचाप होता है तथा धमनियों के रुकने एवं हार्ट अटैक होने की आशंका उत्पन्न होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार एक व्यक्ति के लिए पाँच ग्राम नमक पर्याप्त होता है। तेल में तली हुई अधिक वस्तुओं का सेवन भी शरीर के लिए हानिकारक होता है। शरीर को हानि पहुँचाने वाले पदार्थों में दो प्रकार के फैटी एसिड भी कारण हैं। वनस्पति घी में सबसे अधिक ट्रांस फैटी एसिड होता है। इसका प्रयोग बेकरी के बिस्किट आदि के उत्पादों में होता है। इसका प्रयोग करने से अच्छे कॉलेस्ट्रोल की मात्रा घट जाती है तथा बेड कॉलेस्ट्रोल की मात्रा बढ़ जाती है, जो हृदय सम्बन्धी रोगों को उत्पन्न करता है। डिब्बा बंद एवं प्लास्टिक पॉलीथिन के कवर वाले खाद्य पदार्थों में सेचुरेटेड फैटी एसिड अधिक होता है। इसका अधिक उपयोग हृदय के लिए हानिकारक है तथा धमनियों के रुकने में कारण बनता है। लम्बे अध्ययन एवं शोध के पश्चात् यह पाया गया है कि ट्रांस फैट से हृदय की धमनियों में वसा का जमाव बढ़ता है, जो हृदय रोग की बीमारियों का प्रमुख कारण है। अमेरिका के फूड एण्ड ड्रग्स एडमिनिस्ट्रेशन विभाग ने 3 वर्षों के भीतर सभी खाद्य पदार्थों से हाइड्रोजेनिटेड ऑइल से बने ट्रांस फैट की मात्रा समाप्त करने के निर्देश दिये हैं। किन्तु अभी भारत में यह प्रतिबन्ध नहीं है। एक जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिल्ली उच्च न्यायालय ने दिल्ली सरकार को निर्देश दिया है कि विद्यालयों एवं उनसे पचास मीटर की दूरी तक फास्टफूड जैसे चिप्स, तले हुए उत्पाद, मीठे कार्बोनेटेड शीतल पेय, नूडल्स, पिज्जा, बर्गर, तले हुए आलू और कन्फेक्शनरी उत्पाद की ब्रिकी को प्रतिबन्धित किया जाय। इनके स्थान पर फल, सलाद और परम्परागत भोजन कैन्टीन में उपलब्ध कराने का आदेश दिया गया।

शरीर की प्रकृति अन्न एवं वनस्पति को पचाने में समर्थ है, किन्तु सिंथेटिक वस्तुएँ शरीर में पच नहीं पाती हैं। जब तक शरीर स्वस्थ रहता है, इन अनावश्यक वस्तुओं को बाहर फैंकता रहता है। किन्तु एक अवस्था के पश्चात् जब इन्हें बाहर फैंकने में शरीर असमर्थ हो जाता है, तब यह सामग्री शरीर के विभिन्न स्थानों पर एकत्रित होकर गांठों एवं कैंसर के रूप में शरीर को हानि पहुँचाती है।

एक वेबसाइट में जंक फूड एवं फास्ट फूड से होने वाली हानियों को इस प्रकार बताया गया है– 1. इससे मधुमेह का खतरा रहता है। 2. पाचन की समस्याएँ बढ़ती हैं। 3. थकान और कमजोरी उत्पन्न होती है। 4. किशोरों में डिप्रेशन उत्पन्न होता है। 5. मस्तिष्क की

कार्यप्रणाली प्रभावित होती है। 6. हृदय रोग का खतरा बढ़ता है। 7. किडनी रोग उत्पन्न होता है। 8. लीवर को नुकसान हो सकता है। 9. कैंसर का खतरा बढ़ता है। 10. रक्त में शूगर का स्तर कम-अधिक होता रहता है।

शीघ्रता, सुविधा और सुलभता के कारण हम लोग जंक फूड और फास्ट फूड एवं गलियों में मिलने वाले खाद्य पदार्थों के प्रति भले ही आकर्षित हो रहे हों, पर इनसे हम नई-नई व्याधियों को आमन्त्रित कर रहे हैं। पहले यह कहा जाता था कि तम्बाखू, गुटखा, धूम्रपान आदि से कैंसर उत्पन्न होता है, किन्तु अब शीघ्र सुलभ हो जाने वाले जंक फूड और फास्ट फूड भी कैंसर का कारण बन रहे हैं। इसीलिए पहले की अपेक्षा कैंसर के रोगी अधिक देखे जा रहे हैं। रासायनिक पदार्थों एवं कीटनाशकों के प्रयोग से भी कैंसर बढ़ रहा है, इसलिए आहार की शुद्धि हेतु समाज एवं देश के स्तर पर चिन्तन करने की आवश्यकता है। तथा ऐसे उत्पादों के विज्ञापनों पर विक्रय पर रोक लगाई जाने की आवश्यकता है जिनसे हजारों अस्पताल खुल जाने के बावजूद भी निरन्तर शरीर रोगाक्रान्त रहने की संभावना है।

मात्र स्वाद, सुलभता एवं सुविधा को महत्त्व देकर जो हम हमारे एवं नन्हे बच्चों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं, उस पर पुनश्चिन्तन की आवश्यकता है। सुविधा एवं सुलभता के स्थान पर स्वास्थ्य को अधिक महत्त्व देना होगा। अतः जहाँ तक सम्भव हो पौष्टिक एवं सुपाच्य आहार को घर की प्रथा बनाया जाए। उसमें जो स्वाद होता है वह स्वास्थ्य प्रदान करता है। भोजन का भूख के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। भूख हो तो सूखी रोटी भी स्वादिष्ट लगती है और भूख न हो तो स्वादिष्ट भोजन में भी कमियाँ ढूँढ लेंगे। दूसरी बात यह है कि प्रतिदिन शारीरिक श्रम भी जीवन का अंग होना चाहिए। शारीरिक श्रम से सब अंगों में शक्ति बनी रहती है तथा शरीर का पाचन तंत्र भी सही कार्य करता है। भांति-भांति की चॉकलेट, पिज्जा, बर्गर, चिप्स, बिस्किट, कोल्डड्रिंक आदि के सेवन एवं बाजारू पैकेज्ड भोजन का परिहार कर कैंसर, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग आदि से बचने में ही बुद्धिमत्ता दिखाई देती है। जैन धर्म का भोगोपभोग परिमाण-व्रत भी हमें यही संदेश देता है।

सात्त्विक एवं शुद्ध आहार की भी विविधता है, पोषक व्यंजनों की कमी नहीं है। सूखे मेवे, फल, सब्जियाँ, अन्न, दालें, चावल आदि तो उपलब्ध हैं ही, उनसे निर्मित घर का भोजन श्रेष्ठ है। जंकफूड एवं फास्ट फूड हमारी रसोई एवं घर में प्रवेश न करें तो हम अनेक घातक रोगों से बच सकेंगे तथा नई पीढ़ी को भी खाद्य वस्तुओं के सम्बन्ध में सही संस्कार दे सकेंगे। शीघ्रता, सुविधा एवं सुलभता की अपेक्षा धैर्य एवं समझपूर्वक स्वास्थ्य पर ध्यान दिए जाने की नितान्त आवश्यकता है। ★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-अज्जे णाममेगे अज्जे, अज्जे णाममेगे अणज्जे, अणज्जे णाममेगे अज्जे, अणज्जे णाममेगे अणज्जे। एवं अज्जपरिणए, अज्जरूवे अज्जमणे अज्जसंकप्पे, अज्जपण्णे अज्जदिट्ठी अज्जसीलाचारे, अज्जववहारे, अज्जपरक्कमे, अज्जवित्ती, अज्जजाती, अज्जभासी अज्जोवभासी, अज्जसेवी, एवं अज्जपरियाये अज्जपरियाले एवं सत्तरस्स आलावगा जहा दीणेणं भणिया तहा अज्जेण वि भाणियव्वा।

-स्थानाङ्गसूत्रम्, चतुर्थ स्थान : द्वितीय उद्देश, आर्य-अनार्य सूत्र 211

अर्थ- पुरुष चार प्रकार के कहे गए हैं, जैसे- 1. कोई पुरुष जाति से आर्य एवं गुण से भी आर्य होता है। 2. कोई पुरुष जाति से आर्य, किन्तु गुण से अनार्य होता है। 3. कोई पुरुष जाति से अनार्य, किन्तु गुण से आर्य होता है। 4. कोई पुरुष जाति से अनार्य और गुण से भी अनार्य होता है। इसी प्रकार आर्य परिणत, आर्य रूप, आर्यमन, आर्य संकल्प, आर्य प्रज्ञ, आर्यदृष्टि, आर्य शीलाचार, आर्य व्यवहार, आर्य पराक्रम, आर्यवृत्ति, आर्य जाति, आर्यभाषी, आर्यावभासी, आर्यसेवी, आर्य पर्याय, आर्य परिवार- इस प्रकार सतरह आलापक जिस प्रकार 'दीन' शब्द के साथ कहे गए हैं वैसे आर्य के साथ भी कहने चाहिए।

विवेचन- स्थानाङ्गसूत्र एक विशिष्ट अंग आगम है, जिसमें एक से दश तक की संख्याओं के आधार पर विषय वस्तु का निरूपण किया गया है। चतुर्थ स्थान में चार की संख्याओं में विषय का प्रतिपादन हुआ है। मानव समुदाय के सम्बन्ध में अनेक सूत्र दिए गए हैं। प्रस्तुत सूत्र में पुरुष का आर्य-अनार्य के आधार पर विवेचन किया गया है। इस सूत्र के पूर्व 'दीन' शब्द के आधार पर 17 आलापक कहे गए थे, उसी प्रकार यहाँ 'आर्य' शब्द को लेकर 17 आलापक कहे गए हैं।

'आर्य' शब्द का प्रयोग श्रेष्ठता, शुचिता, सभ्यशालिता आदि के अर्थ में होता है। आर्य कुल में जन्म लेने (जाति) से भी कोई आर्य कहलाता है, किन्तु वह गुणों से आर्य हो यह आवश्यक नहीं है। कुछ लोग जाति से भी आर्य होते हैं एवं गुणों से भी आर्य होते हैं। तो कोई जाति एवं गुण दोनों से अनार्य होते हैं। इसी प्रकार जो मनुष्य पहले अनार्य था वह आर्यरूप में परिणत हो सकता है तथा जो आर्य था वह अनार्य रूप में परिणत हो सकता है। कोई जाति से आर्य होता है, किन्तु रूप से अनार्य दिखता है कोई रूप से अनार्य दिखता है, किन्तु जाति से आर्य होता है। किसी का मन पवित्र होता है तो वह मन से आर्य कहलाता है।

(शेषांश पृष्ठ संख्या 14 पर)

विचार-वारिधि

अन्तरंग-शुद्धि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- अगर हमारे चित्त में किसी प्रकार का दम्भ नहीं है, वासनाओं की गंदगी नहीं है और तुच्छ स्वार्थ-लिप्सा का कालुष्य नहीं है तो हम वीतराग के साथ अपना सान्निध्य स्थापित कर सकते हैं।
- जिनशासन में तप का महत्त्व है, पर ज्ञानशून्य तप का नहीं।
- ज्ञान न मिलने का अन्तरंग कारण तो है ज्ञानावरण कर्म और ज्ञान न मिलने का बाहरी कारण है ज्ञानीजनों की संगति का अभाव।
- ज्ञानावरण का जोर रहा और बाहरी साधनों-संगति, पुस्तक आदि का संयोग नहीं मिला तो ज्ञान प्राप्त नहीं होगा। ज्ञानावरण का जोर घटा, क्षयोपशम हुआ और ज्ञानी की संगति मिली तो ज्ञान प्राप्त होगा।
- जिस तत्त्व के द्वारा धर्म, अधर्म, सत्य, असत्य जाना जाय, उसको ज्ञान कहते हैं। ज्ञान आत्मा का गुण है।
- जिन व्यक्तियों में सदाचार तथा सद्गुणों की सौरभ नहीं होती, वे संसार में आकर यों ही समय नष्ट कर चले जाते हैं।
- दुर्लभ नर-जीवन को व्यर्थ में गंवाना, अज्ञानता की परम निशानी है।
- मोह के कारण ही त्याग की बुद्धि उत्पन्न नहीं होती है।
- गुणों का महत्त्व भूलकर गुणी का तिरस्कार करना उचित नहीं।
- आत्मा की कीमत सोने के आभूषणों से नहीं वरन् सदाचार, प्रामाणिकता और सद्गुणों से है।
- यदि जीवन का निर्माण करना है तो प्रत्येक को स्वाध्याय करना पड़ेगा। स्वाध्याय के बिना ज्ञान की ज्योति नहीं जलेगी।
- हमारे शिक्षणालयों का उद्देश्य होना चाहिए कि उनमें अध्ययन करने वाले छात्र सदाचारी एवं ईमानदार बनें।
- आज के अध्यापक का जितना ध्यान शरीर, कपड़े, नाखून, दांत आदि बाह्य स्वच्छता की ओर जाता है, उतना छात्रों की चारित्रिक उन्नति की ओर नहीं जाता।
- बाह्य स्वास्थ्य जितना आवश्यक समझा जाता है, अन्तरंग स्वास्थ्य उससे कहीं अधिक आवश्यक है।
- संत लोगों का काम तो उचितानुचित का ध्यान दिलाकर सर्चलाइट दिखाना है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रेरक-सन्देश

आचार्यप्रवर श्री हीरा का संदेश : साधु-साध्वियों के लिए

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्य पदारोहण का यह रजतवर्ष चल रहा है। संघ एवं समाज के हर वर्ग के सम्बन्ध में उनका विशिष्ट चिन्तन रहता है। हमारे निवेदन पर 22 जून 2015 को उन्होंने साधु-साध्वियों के लिए वैर ग्राम में जो भाव अभिव्यक्त किए, उन्हें यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि पूज्य आचार्यप्रवर के निर्देश से संघ के सभी साधु-साध्वी प्रतिदिन पंचमहाव्रतों की सजग पालना करते हैं एवं डायरी भरते हैं।-**सम्पादक**

1. ''साधु-साध्वी संघ-समुन्नति के लिये, संगठन और एकता के लिए एवं आत्मविकास के साथ-साथ धर्म की प्रभावना के लिए अप्रमत्त रहकर स्व और पर का उत्थान कैसे हो सके? इसका सतत चिन्तन करें।'' आचार्यप्रवर का चिन्तन है कि साधु-साध्वी का जीवन लक्ष्योन्मुखी होना चाहिए। उन्हें आत्म-विकास के साथ-साथ धर्म की प्रभावना के लिए अप्रमत्त रहकर प्रयत्नशील होना चाहिए। स्व एवं पर का आत्मिक उत्थान किस प्रकार हो, इसका सतत चिन्तन करना चाहिए। उनके शुद्ध आचार-विचार से ही संघ की समुन्नति सम्भव है। संघ में संगठन एवं ऐक्य बना रहे, इसके लिए भी सतत सावधान रहना अपेक्षित है।
2. ''साधु-साध्वी समय को पास करने की बजाय समय को सार्थक करें।'' पूज्य आचार्यप्रवर इस सन्देश से जीवन में अप्रमत्त बने रहने का सन्देश दे रहे हैं। जीवन का हर क्षण हर पल स्वाध्याय, ध्यान एवं सजगता की साधना में व्यतीत हो। इधर-उधर की वार्ता में समय पूर्ण न हो।
3. ''जाए सद्धाए णिक्खंतो.....। जिस श्रद्धा से तुम निकले हो, उसी श्रद्धा के साथ ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की आराधना एवं अनुपालना अन्तिम श्वासोच्छ्वास तक करते रहें।'' जिनेन्द्र प्रभु एवं उनके द्वारा प्रज्ञप्त धर्म पर संसार से वैराग्य के समय जो श्रद्धा रही तथा जिस वीरता के साथ प्रव्रज्या अंगीकार की, उसी श्रद्धा एवं वीरता के साथ सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन एवं सम्यक् चारित्र की आराधना जीवन के अन्तिम समय तक उत्साहपूर्वक की जानी चाहिए। इसी में अपना कल्याण है। चित्त यदि चंचलता के कारण विचलित भी हो तो उसे स्वाध्याय, सच्चिन्तन एवं ध्यान के माध्यम से स्थिर

करने हेतु सजग रहना चाहिए।

4. "विषम वातावरण में सम रहना ही साधुता है।" साधु-साध्वियों के समक्ष ऐसे कई प्रसंग आते हैं, जिनमें विषमता, द्वन्द्व, कलह आदि की स्थिति बनती है। ऐसे अवसर पर चित्त में उद्विग्नता, वाणी में विषाक्तता एवं व्यवहार में कुटिलता आ सकती है। साधु-साध्वी ऐसे विषम वातावरण में भी अपने लक्ष्य एवं कर्त्तव्य से विमुख न हों तथा समभाव में रहकर साधुता की रक्षा करें।

5. "प्रभु के द्वारा उववाई सूत्र में 22 उपमाएँ दी गई हैं। कांस्य पात्र के समान निर्लेप, शंख के समान उज्ज्वल इत्यादि। साधु-साध्वी प्रभु की दी हुई इन उपमाओं को अपने जीवन में सार्थक करें।" आचार्यप्रवर इस कथन के द्वारा जीवन को निर्मल, निर्लेप, समुज्ज्वल, अप्रतिहत, उत्तम, तेजस्वी, निर्दोष चारित्र प्रतिपालक, निश्छल, इन्द्रियजित्, सौम्य, गम्भीर, अविचल, आत्मनिष्ठ एवं जागरूक बनाने का सन्देश दे रहे हैं।

आगमवाणी का शेषांश

कोई व्यक्ति जाति से अनार्य होकर भी मन से आर्य हो सकता है। कोई पुरुष संकल्प से आर्य होता है, उसका संकल्प शुभ होता है। वह अपनी बुराई को छोड़कर अच्छाई को अपनाना चाहता है। कोई जाति (जन्म) से आर्य होने के साथ प्रज्ञा (समझ) से भी आर्य हो तो अत्युत्तम है। कई लोग जाति से आर्य होकर भी प्रज्ञा से निम्न या अनार्य होते हैं। कुछ लोग जाति से आर्य होकर भी दृष्टि से कुत्सित होते हैं। उनकी दृष्टि ठीक नहीं होती। कुछ लोग जाति से अनार्य होकर भी दृष्टि से ठीक होते हैं। इसी प्रकार कुछ लोग जन्म से आर्य होकर भी शील आचार की दृष्टि से हीन होते हैं। आर्य कुल में जन्म लेना ही पर्याप्त नहीं होता, स्वयं का आचरण भी श्रेष्ठ बनाना होता है। जन्म से आर्य होकर भी कोई व्यवहार में अनार्य होते हैं। दोनों में श्रेष्ठ या आर्य होना ही श्रेयस्कर है। कुछ लोग आर्य कुल में जन्म लेकर भी पराक्रम में हीन होते हैं। कुलीन जन्म के अनुरूप पराक्रम-पुरुषार्थ करने का वैशिष्ट्र्य मनुष्य को महान् बनाता है। आजीविका का साधन भी आर्य होना चाहिए। जिस आजीविका के साधन में हिंसा का आधिक्य होता है, वह अनार्यवृत्ति है। आर्य व्यक्ति को अनार्य आजीविका से बचना चाहिए। कोई आर्य कुल में जन्म ग्रहण करके भी अनार्य के साथ विवाहादि के कारण अनार्य जाति वाला हो जाता है। किसी का मातृकुल भी अनार्य हो सकता है। कोई जन्म से आर्य होकर भी भाषा से अनार्य होता है। कोई आर्य होकर भी आर्य के समान अवभासित नहीं होता। कोई आर्य होकर भी अनार्य सेवी होता है। इस प्रकार स्थानांग सूत्र में मनुष्य के विभिन्न पक्षों को चार भंगों में प्रस्तुत किया गया है। चार भंग है- 1. दोनों पक्षों से आर्य, 2. एक पक्ष से आर्य दूसरे पक्ष से अनार्य, 3. एक पक्ष से अनार्य तथा दूसरे पक्ष से आर्य, 4. दोनों पक्षों से अनार्य। इन विभिन्न पक्षों से जीवन में सुधार का मागदर्शन प्राप्त होता है कि व्यक्ति को जन्म से ही नहीं अपने मन, वाणी एवं कार्य सभी स्तरों पर पवित्र आचरण कर आर्य बनना चाहिए।**-सम्पादक**

प्रवचन

दृष्टि बदलने का कमाल

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा बालकेश्वर-मुम्बई (महा.) में 18 अगस्त 2002 को फरमाए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक जिनवाणी, जोधपुर द्वारा किया गया है।-**सम्पादक**

कृतज्ञता और अनुकम्पा का विवेचन चल रहा है। अनुकम्पा दो तरह की है- एक द्रव्य अनुकम्पा और दूसरी भाव अनुकम्पा। दुःखियों के दुःख को मिटाने के लिए बाहरी साधन और सामग्री उपलब्ध कराना 'द्रव्य-अनुकम्पा' है। विषय-विकार और अज्ञान-अंधकार से हटाकर, अपने समान दूसरों को समझकर उनमें आत्म-भाव जगाना 'भाव-अनुकम्पा' है।

विनय के अन्तर्गत आचार्य भगवन्तों के गुणों में चार प्रकार के विनय की बात कही जा रही है। निक्षेप विनय की बात चल रही है। जो लोग अज्ञान-अन्धकार में, मिथ्यात्व के घने अंधकार में डूबे हैं उन्हें सही ज्योति- सही दृष्टि का, दूसरे शब्दों में अपने-आपको बदलने का तरीका बताया जाय। जिस दिन व्यक्ति की दृष्टि बदल जायेगी, उस दिन उसके लिए बंधन के कारण भी निर्जरा के निमित्त बन जाएंगे। जैसा कि आचारांग सूत्र के प्रथम श्रुत स्कन्ध के चौथे अध्ययन के दूसरे उद्देशक का पहला सूत्र है- **''जे आसवा ते परिस्सवा, जे परिस्सवा ते आसवा।।''**

जिन-जिन निमित्तों से, जिन-जिन वस्तुओं से और जिन-जिन व्यक्तियों को देखकर कर्म का बंध होता है, दृष्टि परिवर्तित हो जाय तो उन निमित्तों, वस्तुओं एवं व्यक्तियों के माध्यम से निर्जरा हो सकती है। बंध बाहर के निमित्त में नहीं है, बाहर की वस्तु में नहीं है, दूसरे व्यक्ति में नहीं है। बंध का मूल स्थान क्या? अपना मलिन अध्यवसाय। जैसा अध्यवसाय है वैसा ही बंध होने वाला है। व्यक्ति नहीं बदलता। बदला क्या जाता है? अध्यवसाय- मन के परिणाम।

महाराजा भर्तृहरि की सबसे प्यारी रानी पिंगला। कभी किसी समय जब आसक्ति बढ़ी थी, भोग भावना बढ़ी थी, वासना बढ़ी थी, तब वह बंध का कारण थी। किन्तु दृष्टि बदली तो वहीं पिंगला साधुत्व का निमित्त बन जाती है। विक्रमादित्य जो छोटा भाई है, उसने कहा था-''भैय्या! भाभी से थोड़ा सावधान रहने की जरूरत है।'' पर भाई के कहने

से पहले पिंगला ने कहा- इनकी नज़र अच्छी नहीं है। ऐसा कहकर उल्टी चाबी भर दी। चाबी भरी हुई थी, अतः जिस सहयोगी भाई का सम्मान करना चाहिये था वह, भाई वैरी लगने लगा। भर्तृहरि ने भरी सभा में भाई को लात मारकर निकाल दिया। वासना की दृष्टि होने से भाई को निकाल दिया तो राज काज सूना हो गया।

उधर एक गरीब ब्राह्मण ने तपस्या करके अमरफल प्राप्त किया। इस अमरफल को खाकर कोई अमर हो सकता था। ब्राह्मण ने सोचा- "यदि मैंने इसे खा लिया तो गरीबी अमर हो जायेगी, दीर्घायु वाला होकर गरीबी का जीवन कैसे जीऊँगा।" अतः उस ब्राह्मण ने यह अमरफल महाराजा भर्तृहरि को भेंट करने का चिन्तन किया। वह थाली में रखकर अमर फल ले गया और कहा- "महाराज! इसको खाने वाला रोगी नहीं होता। यह शरीर की कांति-सौन्दर्य घटने नहीं देता। यह देव द्वारा दत्त अमरफल है। जो भी इसे खायेगा, अमर हो जायेगा। मेरे खाने से गरीबी अमर हो जायेगी, आप खायेंगे तो न्याय अमर हो जायेगा। आपके अमर होने से हजारों-लाखों की पीड़ा मिटेगी। इसलिए मैं यह फल आपके चरणों में समर्पित करने लाया हूँ।"

राजा ने फल ले लिया, ब्राह्मण की गरीबी मिट गई। राजा को फल मिल गया, ब्राह्मण को प्रतिफल मिल गया। राजा का चिंतन चला अमर कौन होना चाहिये? मैं अमर हो गया और पिंगला चली गई तो फिर मुझे सुख कहाँ से मिलेगा? अमर तो पिंगला रहनी चाहिये। प्रायः ऐसा सोच होता है कि सुख देने वाली पत्नी अमर रहनी चाहिये, आज्ञापालक सेवा करने वाला पुत्र अमर रहना चाहिये, साधन जुटाने वाला धन अखूट रहना चाहिये। (आचार्य श्री ने सभासदों को कहा-) आपको क्या प्यारा लगता है?

राजा को वासना प्यारी थी। पिंगला उसका साधन थी। अमरफल पिंगला को देने के लिए राजा उसके पास पहुँचा। रानी ने भक्ति, आदर और सम्मान के साथ वह फल ले लिया। राजा सहर्ष विदा हुआ। राजा के विदा होने के बाद पिंगला ने सोचा- "मेरा प्रेम महावत पर है। मैं खा लूँगी और वह चला जायेगा तो फिर क्या मजा।" उसने फल महावत को दे दिया। महावत का किसी वेश्या के साथ सम्बन्ध था। उसने अपनी प्रेमिका वेश्या को वह फल दे दिया। वेश्या ने चिन्तन किया कि मैं अगर इस फल को खा लूँगी तो पाप अमर हो जायेगा। उसने फिर से थाली में सजाकर फल राजा को भेंट कर दिया।

मुझे एक बात कहनी है। पिंगला बदली नहीं है, पर अमरफल दुबारा देखने के साथ भर्तृहरि की दृष्टि बदल गई। जिस पिंगला के कारण विक्रम को लात मारकर निकाला था, आज वही पिंगला के राग को ठोकर मारकर निकल गया। अतः कहा गया है- व्यक्ति बंध का कारण नहीं है, बंध का कारण है 'दृष्टि'। चोरों को देखकर दूसरे लोग घृणा करते हैं, पर

समुद्रपाल को अपने अशुभ-कर्मों के फल शूली को देखकर वैराग्य आ गया। दृष्टि बदलने की जरूरत है। आज सबसे बड़ी समस्या है, विपरीत सोच। हम सामने वाले को बदलना चाहते हैं, अपने-आपको नहीं। मेरी पत्नी मेरे कहे से चले। मेरा लड़का मेरी आज्ञा माने। मेरा मुनीम मेरा सत्कार करे, सम्मान दे। माता-पिता मुझसे प्रेम करें। वह सबसे कुछ-न-कुछ चाहता है। बस नहीं चाहता है तो अपने-आपको बदलना।

यदि आप अपनी दृष्टि बदल लें तो ये सब सुख देने वाले हो सकते हैं। ससुराल से एक बहिन पीहर जा रही है। प्रातःकाल का समय है। रिंया-पीपाड़ की बात कहो या विजयनगर-गुलाबपुरा की। बीच में मात्र एक नदी पड़ती है। वह ग्राम के किनारे पर पहुँची ही थी कि अचानक हार्ट अटेक हुआ, धड़कन तेज हुई और एक झटका लगने के साथ वह पेड़ के सहारे बैठ गई, और चल बसी।

शव पड़ा हुआ है। वह लाश है। नारी का कलेवर है। एक वासना का प्रेमी उधर से निकला। नज़र पड़ी। पत्नी तो मेरे भी है। वह काली-कलूटी है। रात-दिन झगड़ा होता रहता है। मुझे ऐसी पत्नी मिले तो मैं सुखी हो जाऊँ। वह मिलने वाली नहीं, वह तो कलेवर है, पर उसकी दृष्टि वासना वाली है इसलिये वह उस लाश को देखकर क्या चिंतन कर रहा है? विकार का, वासना का।

उधर रात भर से घूमता-घामता एक चोर निकला। उसकी नज़र लाश के गहने पर है। चोर वहीं खड़ा हो गया। वह सोच रहा है कि यह आदमी यहाँ से निकल जाय तो मेरा काम मिनटों में हो जायेगा। मैं इसके सारे गहने लेकर धनवान बन जाऊँगा। दोनों व्यक्ति अपनी-अपनी दृष्टि से सोच रहे हैं।

इतने में एक सियार आ गया। वह भूखा एवं माँस का लोभी था। जीभ लपलपाने लगा। सोचा- ये लोग यहाँ से चले जायें तो मुझे ताजा मांस खाने को मिल जायेगा।

वस्तु एक है। देखने वाले तीन हैं। एक रूप पर आसक्त है, एक धन पर और एक माँस पर। सूर्योदय हो चुका था। एक संत विहार करके उधर से निकल रहे थे। तपस्या का पारणा था। अचानक नज़र पड़ी। अरे, इस युवावस्था में मानव जन्म, आर्य क्षेत्र, उत्तम कुल, नीरोगी काया, पाँचों इन्द्रियाँ सब जोगवाही पाकर भी यह जीव आया और चला गया। कितने पुण्योदय से यह अनमोल अवसर पाया था और खाली हाथ चला गया। इस आयुष्य का क्या ठिकाना? यह हंसा न जाने कब उड़ जाय। महाराज के पचोले का पारणा करना था, पारणा करने के बजाय नश्वरता का चिन्तन चल पड़ा एवं पारणे का विचार त्याग दिया।

उन चारों ने कलेवर देखा। न उपदेश सुना और न ही गुरु का सान्निध्य। आप भी शायद यह सोचकर तप कर रहे हैं कि महाराज आए हुए हैं, अभी भी नहीं किया तो फिर कब

करेंगे। आप ध्यान दीजिए वहाँ प्रेरणा करने वाला कोई नहीं था। बस, दृष्टि प्रेरणा कर रही है। शव को देखकर तीन व्यक्ति कर्म का बंध कर रहे हैं और उसी को देखकर संत काया का सार निकालने हेतु तप की प्रेरणा ले रहे हैं।

एक ही वस्तु के प्रति व्यक्तियों के अध्यवसायों का अंतर हो सकता है। इसीलिए कहा जा रहा है- **'जे आसवा ते परिस्सवा, जे परिस्सवा ते आसवा।'** जो निमित्त बंध के कारण हैं उनसे निर्जरा भी हो सकती है। ऐसे अनेक दृष्टान्त दिये जा सकते हैं। चक्की पीसने वाली बहिन प्रातःकाल चक्की पीसती है। उस समय आज जैसी यंत्रों की चक्कियाँ नहीं थी। खाने के लिए आटा चाहिये। पहले घर-घर में घट्टियाँ होती थीं। बहिनें जल्दी उठकर अनाज पीसतीं। चक्की, कर्म बंध के बजाय कर्म तोड़ने का निमित्त भी हो सकती है। हिंसा में अहिंसा कैसे? धान सूला हुआ (जीवयुक्त) तो नहीं है? मेरे कारण से किसी जीव की विराधना न हो, इसलिए वह बहिन पाटों को अच्छी तरह से देखती है, कील को देखती है कि उसमें कोई जीव तो नहीं। अच्छी तरह देखकर चक्की चलाती है। चक्की चलाते-चलाते मीरा के भजन गाती है। चक्की चलाना आस्रव का काम है, पर वह जीवों की विराधना न हो इसका उपयोग रखती है तथा मन भजन में लीन है, इसलिये आस्रव के समय में भी निर्जरा कर सकती है।

सुमेरुप्रभ हाथी ने आग से बचने के लिए घासफूस रहित मंडल में खाज खुजालने को पैर ऊपर किया। अचानक उस स्थान पर उछलकर एक खरगोश आ बैठा और हाथी ने तीन दिन पैर ऊपर अधर में रखा। हाथी ने अपना पैर सूज जायेगा, मुझे कष्ट पीड़ा होगी, यह नहीं सोचा, अपितु चिन्तन चला- "मेरे कारण से इस जीव को कष्ट नहीं हो।" इस अनुकम्पा से मेघकुमार के जीव ने हाथी के भव में खरगोश की रक्षा की और सम्यक्त्व रत्न की प्राप्ति की।

आचार्य भगवन्त (हस्तीमलजी महाराज) दृष्टान्त दिया करते थे। दो मित्र थे। अलग-अलग विचारधारा थी। एक राग-रंग का शौकीन था तो दूसरा सत्संग का प्रेमी। रविवार को छुट्टी का दिन आया। साथ-साथ निकले। एक ने कहा- भले आदमी सात दिन में एक दिन छुट्टी का मिलता है। चलो संत आए हुए हैं, उनका व्याख्यान सुनने चलें। दूसरे ने कहा- व्याख्यान सुनकर क्या मिलेगा? वहाँ तो वही बाते हैं, नाच देखने चलते हैं। दोनों को एक-दूसरे की बात जंची नहीं। वे अपने-अपने स्थान पर पहुँच गये। स्थानक और नृत्य स्थान पर पहुँचने के बाद दोनों का चिन्तन चलता है। मेरा दोस्त नाच देख रहा होगा, संगीत का आनन्द ले रहा होगा। सत्संग में बैठा व्यक्ति विपरीत सोचकर कर्म बंध कर रहा है और जो नाच देखने गया वह सोचता है- यह संसार स्वयं एक रंगमंच है। कोई धन के लिए तो कोई रूप के लिए तो कोई तृष्णा के पीछे नाच रहा है। मेरे दोस्त ने ठीक किया वह

सत्संग में भगवान की वाणी सुन रहा है। जीवन का सच्चा आनन्द, सच्चा ज्ञान प्राप्त कर रहा है। वह बैठा कहाँ? नाच-गाने में बैठा, आस्रव का स्थान है, पर वह निर्जरा कर रहा है और जो संवर के स्थान पर बैठा है वह आस्रव एवं बंध कर रहा है।

आस्रव और निर्जरा धर्मस्थान में नहीं, धर्मियों के बीच नहीं, राग-रंग में नहीं, यह तो अपनी भावना में है, दृष्टि में है। आगमवाणी में कहूँ- मृगापुत्र अपने रंगमहल में बैठा है, जहाँ नृत्य हो रहा है, इन्द्रियों की तृप्ति करने वाले विषयों की पूर्ति हो रही है। झरोखे पर बैठे हुए को अचानक संत दिखते हैं। संत को देखकर चिंतन चलता है- मैंने ऐसा क्षमा-समाधि का स्वरूप देखा है। जाति स्मरण ज्ञान होता है और वैराग्य जागता है, वे शांत-दांत मुनिराज बन जाते हैं। आप भी संतों को देख रहे हैं। किसी का चिन्तन चला क्या?

इस मानव जीवन का सार दृष्टि बदलने में है। यह जब तक नहीं बदलेगी तब तक 'पैसा' परमेश्वर रहेगा, जायदाद जगदीश्वर होगी, सम्पत्ति सर्वेश्वर होगी। जब पैसे को आप साधन न मान कर साध्य मानेंगे तब आपकी सारी भाग-दौड़, आना-जाना, कमाना, वकीलों के पास जाना, डॉक्टरों के पास आना-जाना चलता रहेगा। किन्तु पैसा साध्य नहीं, ध्येय नहीं है। इस नश्वर पैसे के प्रति विपरीत विचार को बदलिए तभी आप 'बंध' को 'संवर' में परिवर्तित कर सकेंगे, किन्तु आप दूसरों को बदलना चाहते हैं। पत्नी नहीं बदलेगी, पुत्र नहीं बदलेगा, परिस्थितियाँ नहीं बदलेंगी, किन्तु यदि आप बदल गये तो फिर शान्ति है, समाधि है। एक व्यक्ति के घर की स्थिति प्रतिकूल है, पत्नी बीमार है, भाई पागल है, छोटा लड़का नासमझ है। कमाने वाले पुत्र का स्वर्गवास हो गया। स्वयं बीमार है। मुश्किल से दो टाइम मेहनत करके जीविका चलाता है। फिर भी सत्संग में जाता है, सेवा करता है और महाराज को कहता है- ''महाराज! कोई सेवा का काम हो तो मुझे भी कहना।'' कौन? कमाने वाला पुत्र नहीं, पत्नी बीमार, बेटा छोटा, भाई पागल है फिर भी सोचता है मेरे हाथ से जो हो जाय कर लूँ। कुछ दान का काम मेरे को मिले तो एक टाइम का भोजन छोड़ दूँ।

बदलनी क्या चाहिये? दृष्टि। पूनिया श्रावक के पास कितने पैसे थे? क्या लाखों-करोड़ों की सम्पदा थी? उसके मन में स्वधर्मी के लिए भावना क्या थी और आपके मन में क्या है? कभी तुलना करना। मैं आपसे तोल-मोल नहीं कर रहा, पूछ भी नहीं रहा। आपको बस इतना ही कहता हूँ कि कभी तुलना करना। पूनिया श्रावक बारह आने की पूँजी में घर चला रहा है। एक दिन खुद उपवास करता है, दूसरे दिन पत्नी। एक दिन वह स्वधर्मी भाई को खिलाता है तो दूसरे दिन धर्मपत्नी किसी बहन को खिलाकर आनन्द मानती है।

आप में से कइयों के पास करोड़ों की जमाबंदी है। जीवन भर बैठे-बैठे खायें तो खा

सकते हैं। आप स्वधर्मी भाई के लिए खर्च नहीं कर सकते, लेकिन प्रदर्शन का मौका आये तो शायद खर्च हो जायेंगे। जब यह द्रव्य धन नहीं दिया जा सकता तो द्रव्य तन से सेवा कब हो सकती है? प्रमोदमुनिजी अनुकम्पा की बात कह रहे थे, मैं दृष्टि बदलने की बात कह रहा हूँ। दोनों में समानता है। अनुकम्पा वाले भी दूसरों को अपने समान समझते हैं। उनका सोच होता है- ''मैं भूखा होता तो क्या करता। मेरे पास आया है तो कुछ दूँ। मेरी अन्तराय टूटी हुई है, पुण्यशीलता से मुझे कुछ मिला है तो दूँ।''

मैंने एक दृष्टान्त पढ़ा था। ऊँट री गर्दन लम्बी होवे तो काटण री थोड़ी होवे। मेरे पास धन है तो वह बांटने के लिए नहीं है। यह तो पाप से आया है और पाप में जायेगा। नाचने वालों को सौ-सौ रुपये के नोट दिये जा रहे हैं। बरात में चार-चार बैण्ड बुलाये जा रहे हैं। बरातियों को हवाई जहाज से भेजा जा रहा है। क्यों? बात यह है अभी दृष्टि नहीं बदली- **जे परिस्सवा ते आसवा**। जिस तन से तप, जिस धन से अभयदान-सुपात्रदान किया जा सकता है, जिन वचनों से धर्म की प्रभावना की जा सकती है, जो निर्जरा के स्थान है, जिनसे बंधन काट सकते हैं, कर्म खपाये जा सकते हैं, उन्हीं साधनों से आस्रव के कारण बंध किये जा रहे हैं।

एक संत बोलता है, बोलने के साथ पूछता है कि मेरा आज का व्याख्यान कैसा रहा? मैंने भजन सुनाया वह कैसा लगा? यह निर्जरा कर रहा है या बंध कर रहा है। यह प्रश्न किसलिए किया? क्या मधुर गायक की उपाधि लेने को? क्या मधुर वक्ता का खिताब लेने के लिए? यश-प्रशंसा प्रसिद्धि के लिए नहीं? एक सन्त की भावना हो कि इस वीतराग वाणी से आपकी दृष्टि भौतिक पदार्थों से हटे। संत कभी यह नहीं पूछे कि व्याख्यान कैसा लगा? घुमाकर भी नहीं पूछे कि व्याख्यान में कोई गलती तो नहीं थी? लोकैषणा वाला चतुर संत कई दृष्टियों से पूछता है। मेरी बात में कहीं कमी तो नहीं थी? अगर कमी नहीं है तो सामने वाला स्वयं प्रशंसा करेगा। कई-कई हैं जो कहते हैं- देखा, मैंने कैसा व्याख्यान दिया! सभी लोग प्रभावित हो गए, हजारों का ढेर लग गया, सोना बरस गया।

आचार्य भगवन्तों के 36 गुणों में एक निक्षेप-विनय है। मिथ्यात्व से होने वाला अनादि काल का भव-भ्रमण, कर्मों की उत्कृष्ट स्थिति का बंध-क्रिया करते भी उसका निर्जरा रूप फल नहीं मिलता आदि समझा कर सम्यक् दृष्टि बनाना निक्षेप विनय है। आरम्भ-परिग्रह की हानियाँ समझा कर अणुव्रती-महाव्रती बन सके, इसकी प्रेरणा कर व्रती बनाना यह कर्त्तव्य है। यह प्रशंसा प्राप्त करने के लिए नहीं, धर्म में स्थिर करने परिस्सवा यानी निर्जरा के लिए है। लेकिन कभी ये महाव्रत भी, लोकैषणा-पद प्रतिष्ठा के प्रति राग के कारण भी निर्जरा के बजाय आस्रव का कारण हो सकता है।

मैंने सुना है, पढ़ा है, आगमों में लिखा है- ''अग्लान भाव से जो आचार्य देव संघ का नेतृत्व करते हैं तो वे उसी जन्म में अथवा दो-तीन भवों में मोक्ष चले जाते हैं।'' आचार्य-उपाध्याय पद को शोभित करने वाले सन्त संघ की अग्लान भाव से सेवा करें, जो ज्ञान भूले हुए हैं उनका ज्ञान जगायें, जो मिथ्यात्वी हैं उनको सम्यक् दर्शनी बनायें; जो राग में फंसे हैं उनको त्याग मार्ग में लायें तो निर्जरा करते हैं। लेकिन जो इसके लिए संघ में भेद डालते हैं, राजनीति की तरह वोट नीति काम में लेते हैं, अथवा जिसको दिया जाय उसको अयोग्य घोषित करते हैं अथवा मर्म प्रकाशित करते हैं तो निर्जरा के, सेवा के इस पद को भी बंध का निमित्त बनाते हैं। आचार्य पद किसलिए? वह संघ की सेवा के लिए है या विघटन के लिए? एक श्रावक भी किसी का मर्म उद्घाटित नहीं करता, पर आचार्य पद के लिए लड़ने वाले भी हैं।

हाँ, हम सब छद्मस्थ हैं। छद्मस्थ से गलती हो सकती है, दोष लग सकता है। गलती श्रावक से भी होती है, साधु से भी। एक आचार्य भी गलती कर सकता है तो चौदह पूर्वधर से भी हो सकती है। निर्दोष तो केवलज्ञानी हैं, जिन्होंने घनघाती कर्मों का क्षय कर लिया। ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय कर्म का जिन्होंने नाश कर दिया, वे निर्दोष हैं, बाकी सब में यथाख्यात चारित्र नहीं होने से दोष हो सकता है। किन्तु हमारी दृष्टि किस पर है? यदि पद दें तो गुरुदेव 'भगवान'। पद नहीं तो गुरु की आलोचना, गुरु में भूल निकालते नहीं चूकते। क्या संयम को पद के लिए, साधना के लिये या निर्जरा के बजाय बंध के लिए स्वीकार किया है?

रत्नवंश में कैसे निस्पृह विनयशील साधक हुए हैं। आज श्रावण शुक्ला एकादशी है। आज ही के दिन इस परम्परा के पूज्य दुर्गादास जी महाराज संथारे के साथ स्वर्गस्थ हुए। दशमी को संथारा किया, आठ प्रहर बाद आज ही के दिन उनका महाप्रयाण हुआ। मारवाड़ जंक्शन के पास सालरिया में विक्रम संवत् 1806 में आज से 253 वर्ष पूर्व उनका जन्म हुआ। वे शिवराज जी ओस्तवाल के यहाँ जन्मे। माता का नाम था- सेवादेवी। पन्द्रह वर्ष की उम्र में पूज्य कुशलो जी महाराज का संसर्ग पाकर दीक्षा ग्रहण की और मात्र एक वर्ष बाद योग्यता बढ़ाकर भगवान महावीर के शासन की सेवा करने के लिए, चमकाने के लिए, अन्य धर्मियों को धर्म में लगाने के लिए पृथक् विचरण किया। विक्रम संवत् 1854 में भोपालगढ़ में क्रियोद्धार हुआ आषाढ़ कृष्णा द्वितीया को। विक्रम संवत् 1858 में कार्तिक कृष्णा अष्टमी को आचार्य श्री गुमानचन्दजी महाराज का स्वर्गवास हो गया। उन्होंने पीछे संघनायक के रूप में रत्नचन्द्र जी को मनोनीत किया। संघ आचार्य श्री के चरणों में पहुँचा और निवेदन किया कि आप संघनायक का भार संभालें। आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने

कहा- सब तरह से योग्य गीतार्थ वय दीक्षा में ज्येष्ठ मेरे काका गुरु इस पद के योग्य हैं वे संभालें। पूज्य श्री दुर्गादासजी महाराज आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी महाराज के संसार पक्ष में भी काका थे। भले ही आचार्य श्री गुमानचन्द्रजी महाराज ने मुझे इस पद के लायक समझा हो, पर पूज्य श्री दुर्गादासजी महाराज सब तरह से योग्य हैं, वे ही इस पद को संभालें। पूज्य दुर्गादासजी महाराज से कहा तो बोले मैं वृद्ध हूँ, अब मैं कितने दिन रहने वाला हूँ। यह पद पूज्य रत्नचन्दजी संभालें, वे युवा हैं, उन्हें पर्याप्त अनुभव है। पूज्य दुर्गादासजी महाराज को पूछते तो वे रत्नचन्द्र जी महाराज को पूज्य बताते और रत्नचन्द्रजी महाराज को पूछते तो वे दुर्गादासजी महाराज का नाम बताते। इस तरह चौबीस वर्ष बीत गये।

चार बीस संवत्सर लग यों, रखने को सम्मान।
रत्नचन्द्र गणी पद नहीं लीना, पूज्य दुर्ग को मान हो।
प्रतिदिन जप लेना त्यागी गुरुओं को भवियन भाव से।।

कैसी निस्पृहता थी? लोग राम के पास पहुँचे एवं कहा-''अयोध्या के महाराजा आप हैं, हम आपको चाहते हैं।'' राम कह रहे हैं- पिताजी ने अपने वर में भरत को राजा बनाया, इसलिए राजा भरत हैं। भरत 'राम' को और राम 'भरत' को राजा कहते हैं। एक किक इस पाले में दूसरी ओर से मारी तो इस पाले में। जिन्दगी जब तक रही भरत ने अपने आपको राजा नहीं कहा। सिंहासन पर कौन? राम के खड़ाऊँ। राम को पूछते तो कहते, मैं अयोध्या नरेश भरत का भाई हूँ।

यह कब होता है? जब दृष्टि बदले। जिस दिन दृष्टि बदलेगी वहाँ भाई-भाई में प्रेम रहेगा। उनके बीच में सम्पदा और कुर्सी नहीं आयेगी। आज दृष्टि बदली हुई है। आज पैसा अपना है, पद-मकान अपना है, किन्तु भाई पराया है। जो साधन आस्रव के हैं, दृष्टि बदलने पर निर्जरा के हो सकते हैं। जो साधन निर्जरा के हैं, दृष्टि बदल गई तो वहाँ पर भी आस्रव हो सकता है।

महाराज बनें किसलिए? प्रशंसा सुनने, सुन्दर रूप देखने, गरिष्ठ पदार्थों का सेवन करने, कीमती परिधान धारण करने, ऊँचे मकान में रहने के लिए? प्रवचन से पैसा इकट्ठा करने के लिए? यदि लोकैषणा के लिए और विषय लोलुपी बनकर अपनी प्रतिष्ठा जमाने के लिए कोई संयम धर्म का पालन कर रहा है तो कहना चाहिये वह निर्जरा नहीं कर्मबंध कर रहा है। श्रावक और साधु के व्रत एकान्त निर्जरा के कारण हैं, पर कब? जब कि हम आत्म-विकास में, भगवान महावीर के शासन में रहकर निस्पृह साधना से तिरते हैं। साधकों की दृष्टि भी बदले, श्रावकों की भी बदले। दृष्टि बदलेंगे तो अच्छी से अच्छी साधना कर अनासक्त रहकर हम निर्जरा कर सकेंगे। पारणक में खीर मिली है, पर उस पर

आसक्ति नहीं है। लेना पड़ता है, यह समझ कर लिया जा रहा है। क्या करें, निर्दोष भिक्षा में यही मिला। उड़द के बाकले भी निर्दोष मिलें तो उनसे भी निर्जरा हो सकती है।

आप याद करें, तपश्चर्या नहीं करने वाला एक संत रोज खाता है, यहाँ तक कि संवत्सरी को लाकर खा रहा है। लेकर आने पर गुरु को दिखाया। गुरु ने थूक दिया। लूखे अन्न में गुरु ने घृत डाल दिया, बड़ी कृपा की। उसे खीर-खांड समझ कर खा लिया। आपके भोजन में कभी विपरीत वस्तु आ जाय तो घर में महाभारत तो नहीं होता।

मैंने एक अखबार में पढ़ा- दाल में बाल, पत्नी का काल। दाल में एक बाल निकल गया। पति को गुस्सा आया, दे मारी थाली की। थाली की किनार पतली थी। पत्नी के गले में लगी, खून की धार निकली और प्राणांत हो गया। एक बाल से पत्नी की मौत हो गई।

आपकी दृष्टि भी बदल जायेगी तब सारे बन्धन टूट जायेंगे और दृष्टि नहीं बदली तो चाहे मुँहपति बांध लो, ये कपड़े पहन लो, उससे कुछ होने वाला नहीं है। आप दृष्टि बदल कर निर्जरा करने की ओर अपने कदम बढ़ायेंगे तो सुख-शांति प्राप्त कर सकेंगे। ■

हिम्मत एवं मेहनत

श्री शिखरचन्द छाजेड़

हिम्मत

हिम्मत न हो पस्त
शुभ कर्म में रहें व्यस्त
गम हों अनगिनत-
पर होना नहीं त्रस्त,
नियम है प्रकृति का
उदय हुआ भानु
होता ही है अस्त...
सुख में भी रोते हैं कई
हँसते रहना तुम
चाहे होते रहें कष्ट...
हिम्मत न हो पस्त
शुभ कार्य में रहें व्यस्त
शुभ कार्य में रहें व्यस्त...

मेहनत के बीज

गर हिम्मत
हार गया होता
जो भी हूँ
क्या मैं आज होता?
मुश्किलें आई
निराशा न छाई
रहा सदा-
मेहनत के बीज मैं बोता
गर हिम्मत
हार गया होता...
जो भी हूँ
क्या मैं आज होता....?

-'मंगल अनुभूति' पुस्तक से साभार

मेन रोड़, करही-451220 (मध्यप्रदेश)

आत्म-मंथन

संयमी भी रोगी और महारोगी क्यों?

श्रद्धेय श्री उदयमुनिजी

एक चर्चा में मुद्दा उठा कि गृहस्थ असंयमी जीवन जीता है। उसे घर-गृहस्थी, व्यापारादि के कारण कई प्रकार की चिंताएँ, परेशानियाँ, क्लेश, कलह, संघर्ष, दुःख, पीड़ाएँ, तनाव आदि निरन्तर सताते रहते हैं। उसमें कामनाएँ, वासनाएँ, तृष्णाएँ, भोगेच्छाएँ होती हैं। पूर्ति नहीं होने पर दुःखी रहता है। अशान्ति के कोई-न-कोई कारण आ ही जाते हैं। कभी-कभी पुरुषार्थ करते हुए भी विफलता मिलती है, जिससे निराशा, हताशा एवं अवसाद की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यह भोगवादी युग है। व्यक्ति कुसंग, प्रदूषित विचार-वातावरण से भी ग्रस्त रहता है। ऐसे कई कारण होते हैं कि जिनके कारण वह रोग या महारोगों से ग्रस्त हो जाता है। ये सभी कारण भगवान महावीर के संयमी साधु-साध्वियों के पास नहीं फटकते हैं, फिर इनके इतने रोग, महारोग क्यों होते हैं?

प्रायः उत्तर होगा- पूर्व के असातावेदनीय कर्म का उदय आता है। कर्म तो किसी को नहीं छोड़ता है। होने वाले अरिहंतों-तीर्थंकरों को भी नहीं छोड़ता। उदाहरण के लिए चक्रवर्ती सनतकुमार को रूप-लावण्य-कांति-बल-सौष्ठव और चक्रवर्त्तित्व पर महाभिमान से रोग हो गया था। उसी निमित्त से वैराग्य आया और सर्वविरति संयम ले लिया, परन्तु संयमकाल में सात सौ वर्षों तक वह रोग रहा। वह भी आत्मसाधना के सह-उत्पाद या सहज फल से मिट गया।

तीर्थंकर या अरिहंतों के जीवन में भी पूर्वबद्ध तीव्र से तीव्रतर असातावेदनीय कर्म के फल से देव-तिर्यंच-मनुष्यों ने उन्हें कष्ट या उपसर्ग दिए। उनसे वे लेशमात्र भी दुःखी (आर्त्त) नहीं हुए, उपसर्गदाता के प्रति कोई विकारीभाव नहीं आया। निर्विकारी आत्मस्वरूप प्रकट हो गया। शुद्ध, बुद्ध, मुक्त हो गए।

आज के चिकित्सा वैज्ञानिकों ने रोग-राजरोग-प्राणलेवा महारोग के कारणों की शोध के बाद निष्कर्ष दिया है कि सत्तर प्रतिशत रोग मन के विकारों से होते हैं। आत्मा में विकार के भाव उठते हैं, वे मन-वचन-काया से क्रियान्वित होते हैं। आत्मा के साथ शरीर बद्ध है। उन विकारों का प्रथम और सीधा असर शरीर पर पड़ता है। शरीर-विज्ञान और चिकित्सा-विज्ञान का नारा है- ''मन में विकार, तो तन में रोग।'' इसके विलोम में नारा है-'' मन या आत्मा निर्विकारी तो शरीर भी नीरोगी।'' यदि महावीर के अकाट्य सिद्धान्त

से जोड़ें तो जैसे ही आत्मा में विकार भाव उठे कि ज्ञानावरणादि सात या आठ कर्मों का आस्रव-बंध हो जाएगा। उनमें असाता वेदनीय कर्म भी बंधा। उसका तुरन्त फल आता है, कोई रोग, महारोग अथवा प्राण लेवा राज रोग।

मनोविज्ञान का अटल सिद्धान्त है कि मनोरोग से शरीर रोगी होता है। आज अवसाद (डिप्रेशन) एवं सघन अवसाद के कितने रोगी बढ़ते जा रहे हैं? कारण है- आपाधापी, छीनाझपटी के भोगवादी युग में कई मनुष्य पुरुषार्थ करते हुए भी विफल हो जाते हैं। महत्त्वाकांक्षा पूर्ण नहीं होती है तब निराशा आती है। वह सघन हताशा में बदलती है। वही अवसाद एवं सघन अवसाद में ले जाती है, जिसकी अन्तिम परिणति पागलपन और मृत्यु (आत्महत्या) होती है।

आज सर्वप्रचलित अंग्रेजी-चिकित्सा-पद्धति कुछ रोगों का उपचार करती है, किन्तु रोगियों का नहीं। रोगी को वह रोग किस कारण से हुआ, उसकी तह में जाती ही नहीं। रोगी के आचार-विचार, आदत-संस्कार, भोजन, कार्य-संव्यवहार आदि किसी पर भी वे चिकित्सक विचार नहीं करते। हाँ, रोगी की जेब अवश्य 'टटोल' लेते हैं। लाखों-करोड़ों का व्यय कर वह विद्या पाई हो तो ऐसा ही होगा। रोग के कारणों की खोज नहीं है। हम संयमियों के भी जब प्राणलेवा रोग आते हैं तो एक पका-पकाया सिद्धान्त आगे कर देते हैं- असातावदेनीय कर्म का उदय है। यह कथन कितना उचित है, इस पर विचार किया जा रहा है।

सन्त के विषम आचार-विचार-विहार-भोजन-निद्रा आदि के दोषों को ओझल कर भोले भक्त भ्रमित हो मान लेते हैं कि पूर्व भव-भवों के आसातावेदनीय कर्म के उदय में इन्हें अनायास रोग आया है। बस फिर उपचार हेतु वे जी जान से सेवा करते हैं। हजारों-लाखों भी लग जाएं, मेरे भगवान् रोगमुक्त हो जाएं, यही चिन्तन रहता है। फिर चाहे संयमियों के संयम में कितना ही असंयम आ जाए, अतिचार-दोष लग जाएं। चाहे कितने ही त्रस एवं सम्मूर्च्छिम जीवों की हिंसा-विराधना हो जाए। हम संयमी भी उसे अपरिहार्य मान लेते हैं। दण्ड प्रायश्चित्त भी लेते हैं।

रोग उत्पन्न ही न हो, इसके लिए चिन्तन आवश्यक है। सम्यक्त्वी (चौथे गुणस्थानवर्ती) का भी लक्ष्य संवर-निर्जरा कर मोक्ष प्राप्त करना होता है, शरीर गौण हो जाता है। छठे-सातवें गुणस्थानवर्ती संयमियों का लक्ष्य तो निश्चित ही आत्मा के परिष्कार का होता है। शरीर को बलिष्ठ करूँ, हृष्ट-पुष्ट करूँ, यह तो होता ही नहीं। फिर भी शरीर का नीरोगी रहना तो आवश्यक मानते हैं, क्योंकि रोगाक्रान्त होते ही आर्त्त (दुःखी) होने की सम्भावना से साधना में भारी बाधा आती है। रोगग्रस्त होने पर मैंने शरीर का जितने अंश में, जितनी तरतमता का सम्बन्ध मान रखा होगा, उतनी तरतमता-प्रमाण से वेदना का अनुभव

आएगा। वह आर्त्तध्यान है, कर्म का आस्रव और बंध है। अतः हम संयमी भी तो लक्ष्य रखें कि शरीर नीरोग रहे।

आगत रोग का कारण मात्र पूर्व का असातावेदनीय कर्म का उदय मान लेना भ्रांति है। वर्तमान का गलत-पुरुषार्थ भी दोषी है। यदि मेरा आहार दूषित-प्रदूषित है तो उसका सीधा प्रभाव शरीर पर पड़ेगा, विकृति आएगी ही। ब्रह्मचर्य-रक्षार्थ सात आगमों में मेरे लिए कड़ा निषेध आया है- 'हे संयमी! विगय (विकृत) आहार न ले।' 'गरिष्ठ आहार न ले।' समवायांग सूत्र के नवम अध्याय में, ब्रह्मचर्य की नौवाड़ के अन्तर्गत कहा गया है- 'प्रणीतरसयुक्त आहार न ले, कामोद्दीपक आहार न ले।' यहाँ स्पष्ट निषेध आया है। फिर भी मैं गलियाँ निकालने लगा। रसनेन्द्रिय की लोलुपता के कारण ऐसी गलियाँ बनने लगती हैं। ये आहार स्वयं में विगय (विकृत) नहीं हैं, परन्तु आत्मार्थी साधक के शरीर में जाकर विकृति, विकारभाव उत्पन्न करते हैं।

रोग आते ही गृहस्थ और हम संयमी भी असातावेदनीय कर्म का उदय मानते हैं। क्यों? मात्र असातावेदनीय को कारण मानने पर हम अपनी जिह्वालोलुपता एवं दूषित आहारचर्या की कारणता को गौण कर देते हैं। जबकि वर्तमान की दूषित आहार-चर्या से रोग उत्पन्न होते हैं। यदि आहार सात्त्विक, सुपाच्य, संतुलित, नियमित, सीमित-परिमित नहीं है तो उसका दुष्परिणाम है- कई रोगों का जन्म। हम संयमी, आगमोक्त आहार-चर्या से विपरीत जाकर रोगों को स्वयं बुलावा देते हैं। स्वयं की आत्मसाधना को दूषित करते हैं, आर्त्त होते हैं, नए कर्म बांधते हैं और धर्म-संघ पर आर्थिक बोझ बनते हैं, साथी संयमी पर भार डालते हैं। भीतर-बाहर हानि-ही-हानि। क्यों?

आगम आज्ञा है कि संयमी एक ही बार आहार ले (उत्तराध्ययन, दशवैकालिकसूत्र)। यथा समय उपवासादि करे, ऊणोदरी करे, रस-परित्याग करे। प्रत्येक तप-त्याग का लक्ष्य है- रसनेन्द्रिय विजय, शरीरासक्ति तोड़ना। उसका सहज सह-उत्पाद है- नीरोगी शरीर। यह है उत्कृष्ट आत्मसाधना का बाह्य-निमित्त। आहार एक बार से दो बार, अब कितनी ही बार, कितनी ही वस्तुएँ, कितने ही रस- एक साथ। पित्ताम्लता बढ़ी, डकारें-उगाल, अधोवायु, अपच, मलावरोध, मूत्र-रोग, तद्जनित मधुमेह, उच्च या निम्न रक्तचाप, हृदय पर दबाव से हृदयाघात, कैंसर आदि कितने ही रोग हो रहे हैं। वास्तविक भूख से कम खाना स्वरूप ऊनोदरी कैसे हो? रसनेन्द्रिय लोलुपता हो तो रस-परित्याग कैसे हो? रोगाक्रान्त हैं तो अनशन भी कैसे हो? फिर भिक्षाचरी (तप) भी कैसे हो?

हम संयमी कहते हैं- "हमें तो गृहस्थ के लिए बने आहार में से, जो सहज मिले वही लेना है। अन्यथा? वह निमित्त का होगा, आधाकर्मी होगा, नरकों में, चतुर्गति में भटकना

पड़ेगा।'' दूसरी तरफ गृहस्थ भोगी है, जिह्वा का दास है। वह पेट के लिए नहीं, अधिकांशतः जीभ के स्वाद हेतु खाता है। वह तो न जाने क्या-क्या, दुष्पाच्य, अभक्ष्य, असंतुलित, दूषित, चटपटा, गरिष्ठ, सड़ा हुआ मैदा, उससे बनी बेकरी की कितनी ही वस्तुएँ, उन्हें भी फिर खूब तल-भुनकर खाता है। त्वरित आहार के नाम पर कितने ही आहार, निसत्त्व, मृत, रोगोत्पादक आहार लाता, बनाता एवं खाता है। संयमी भोगी नहीं, आत्मसाधक होते हैं। यदि सहजोपलब्ध ऐसे आहार से मेरी आत्मसाधना में प्रमाद या रोगों के कारण बाधा पड़ती है तो मैं वह आहार नहीं लूँगा, साधक का ऐसा संकल्प एवं सजगता होनी चाहिए।

पानी यदि अस्वच्छ, अस्वास्थ्यकर-कीटाणुग्रस्त है तो प्रासुक पानी के नाम से ऐसा लेकर रोगों को आमंत्रण नहीं दूँगा। आज शरीर-वैज्ञानिक प्रमाण दे चुके हैं कि दूषित पानी से कई रोग होते हैं तो हम संयमियों को भी सावधान होना पड़ेगा। मैंने दूषित पानी पीकर शरीर भी रोगी बनाया, अपने को उत्कृष्ट एवं दूसरे को निकृष्ट समझकर आत्मा को भी रोगी बनाया। जब रोग आते हैं, तब तुरन्त असातावेदनीय को आगे करता हूँ।

विकारी भावों से कर्मबंध के साथ, शरीर में भी कई प्राणान्तक कष्टकारी रोग हो जाना प्रमाणसिद्ध है। यदि संयमी और संयमियों के बीच, संयमियों के एक समूह और दूसरे समूह या दूसरी सम्प्रदाय के बीच वैर-वैमनस्य है, कलह, क्लेश, संघर्ष, अनबोला-तिरस्कार, मनमुटाव है, घृणा, विद्वेष, वितृष्णा है, विरोध है, निंदा-बुराई है, टीका-टिप्पणी है, क्रोधावेश है, शुष्क ज्ञान या कोरी जड़क्रिया के आधार पर एक-दूसरे को नीचा दिखाने, निकृष्ट बताने तथा स्वयं को उत्कृष्ट सिद्ध करने हेतु विकार विद्यमान हैं तब क्या इन विकारों का सीधा दुष्प्रभाव शरीर में रोग होना, बढ़ना, विषम प्राणलेवा बन जाना नहीं होगा? जब ऐसा दुष्फल आता है तब मैं दोष देता हूँ- असातावेदनीय कर्म के उदय को। क्या मेरे वर्तमान के इन विकारों एवं विकृत-चर्या में मेरा स्वयं का दोष नहीं है?

विद्यालयीय कक्षाओं में शारीरिक-शिक्षक, कक्षा-प्रभारी शिक्षक, मेरी पोशाक, शरीर, नाखूनों की स्वच्छता देखते थे। अस्वच्छता पाई जाने पर सीख देते थे, न सुधरे तो दण्ड भी देते थे। जीवन भर वह सीख कायम रही। फिर जरावस्था में संयम लिया। सूत्रकार ने मुझे नया आदेश दिया- नाखून काटो तो, शरीर का मैल साफ करो तो, दांत सफाई हेतु अंगुलि रगड़ो तो (ऐसे कई) प्रत्येक में एक उपवास का दण्ड लेना पड़ेगा। वस्त्र धोकर शुद्ध-स्वच्छ रखो तो, शरीर स्वच्छ रखने में लगोगे तो श्रमणत्व ही चला जाएगा। मैं संकट में पड़ गया। बाह्य वातावरण भारी प्रदूषित, नगर-महानगर-राजधानी में दिन-रात इतनी कालिमा और दूषित वायु (गैसें) निकलती हैं, शरीर और वस्त्रों पर जमती जाती हैं। स्वास्थ्य-शिक्षक ने पाठ पढ़ाया- शरीर पर मैल जमने से रोमछिद्र बंद हो जायेंगे। विषैले

तत्त्व पसीने से बाहर नहीं निकल पायेंगे। गुर्दों पर दबाव बढ़ जाएगा। विषैले तत्त्व अन्दर जमा रहेंगे तो भयंकर प्राणलेवा रोग हो जाएँगे। सूत्रकार के पाठ और स्वच्छता-विज्ञान-शिक्षक के पाठ में भारी विपरीतता आई, तब मैंने कहा- संकट में पड़ गया। कभी लगता- मैले शरीर, मैले कमरे, मैले वस्त्र रखता हूँ तो भक्त की भक्ति जोर-शोर की सुनाई देती है। कभी स्वच्छ रख, नीरोगी रहने का कार्य करूँ तो 'शिथिलाचारी' की उपमा या भर्त्सना मिलती है। पाठकों से पूछता हूँ- आप हल बताओ।

छेदसूत्रकार (बृहत्कल्प, दशाश्रुत स्कन्ध, निशीथ सूत्र के रचयिता) आचार्य भद्रबाहु स्वामी से हल मिला- ''हे संयमी! भगवान् ने वर्ण-गंध-रस-स्पर्श गुणवाले पुद्गल-परमाणुओं के स्कंधस्वरूप इस सड़ने-गलने-नष्ट होने वाले माटी के पुतले से भिन्न अनन्त ज्ञानादि गुणसम्पन्न आत्मा की सिद्धि में लगना। इस पुतले की सज्जा-विभूषा में नहीं लग जाना।'' तदनुसार कहा गया- ''नाखून का मैल नहीं, आत्मा का मैल निकालने में पुरुषार्थ करना। नाखून काट कर-तराश कर, हाथों-अंगुलियों की विभूषा में मत लग जाना। वस्त्र-पात्र को चमकाने में मत लग जाना, आत्मा को चमकाना (ज्ञान प्रकाश से)।''

मैंने इसका कुछ अर्थ ऐसा समझ लिया कि शरीर-वस्त्र मैले रखने में ही उत्कृष्ट संयमी दिखूँगा। जब मैंने 'उद्देश्य-वाक्य' समझा तो भ्रम टूट गया, अन्तर्द्वन्द्व मिट गया। फिर मैंने सूत्र के रचनाकाल को देखा। तब प्राकृतिक, सुरम्य, हराभरा, समशीतोष्ण जलवायु था। संयमी साधु उद्योगों की नगरियों में नहीं, नगरी-राजधानी के बाहर उद्यानों, वाटिकाओं में समूह में रह साधना करते या जंगलों-कन्दराओं-गुफाओं में एकाकी साधना करते, क्षपक-श्रेणी आरोहण कर मुक्त होते थे। गत औद्योगिक क्रान्ति के पचास वर्षों की विलासी (सर्वनाशी-सत्यानाशी) भोगवादी जीवन-शैली ने मिट्टी-पानी-वायु, फल-सब्जी-अनाज को विषाक्त कर दिया। लाखों टन ज़हर घोल दिया। वातानुकूलन के नाम पर कल कारखाने, वाहन, रेलें, वायुयान आदि आग उगल रहे हैं, विषैली गैसें उत्सर्जित कर रहे हैं। तब मैंने शरीर, वस्त्र, नाखून आदि स्वच्छ-स्वास्थ्यकारी रखना एक अनिवार्यता मानी। सावधानियाँ रखते हुए भी रोग आ जाएँ तो पूर्व कर्म निमित्त मानें।

मैं असावधानी से ठोकर खाकर गिर पड़ा। पसलियों में चोट लगी, घुटना टूटा, हड्डी टूटी, कहीं घाव हो गया। पात्री फूट गई। असातावेदनीय कर्म का उदय था। क्या मैंने ईर्या समिति भंग नहीं की? उसी में उपयोग क्यों नहीं रखा? वर्तमान में अनुपयोग- मेरे विकार का दोष नहीं है क्या? पाँवों में कंकरिया-कांच चुभ जायेंगे। थोड़ी किनार छोड़ मैं सड़क पर चलने लगा, वाहन टक्कर दे गया। अंग-भंग हो गया, आहत हो आर्त्त हो गया। क्या मात्र पूर्व के असातावेदनीय कर्म का ही दोष है।

रोग आने पर उपचार करने के स्थान पर रोग के कारणों से दूर रहना अधिक अच्छा है। उस हेतु नियमित वाणी, नियमित काया, संयमित आहार-विहार-निहारचर्या, समीचीन आसन, मुद्रा, योगसाधना, प्राणायाम, एक्यूप्रेशर, मुद्रा-चिकित्सा, स्वयं साध्य रेकी चिकित्सा को अपनाऊँ तथा स्वाध्याय-ध्यान से दृढ़ आत्मबली हो जाऊँ। आगत-रोगों से आर्त्त हो, हिंसाकारी बनने की बजाय एवं नए रोग देने वाली चिकित्सा पद्धति में न जाकर प्राकृतिक चिकित्सा, वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति को अपनाऊँ। ∎

सांसारिक जीवन

डॉ. रमेश 'मयंक'

सांसारिक जीवन में
राग-द्वेष, क्रोध-कषाय है
दुःखों की भरमार है
मुक्ति की पुकार है
प्रतिकूलता से बचते हुए
अनुकूल चिंतन की दरकार है।
जीवन वृक्ष की जड़ें
उधर फैलती जातीं
जिस तरफ नमी पातीं,
कठोरता से बचने की
सुरक्षित भाव अपनाने की
कलाएँ ही हमें संसार में मरण से बचातीं।
सांसारिक जीवन में सुख की खोज ने
सम्यग्दर्शन की तरफ बढ़ाया,
दुष्कर्म-बन्धनों से बचाया,
समता भावों को अपनाकर साधना का पोषण किया
ममता को हटाया
संयम को बढ़ाया
और- तपाराधन करते हुए
साधारण को भी महान् पुरुष बनाया।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

कविता

सच्चे अनुयायी कहाएँ हम

श्री दिलीप गाँधी

ऐसी शक्ति दो महावीर,
सच्चे अनुयायी कहाएँ हम,
जिनशासन का पालन कर,
जन-धर्म इसे बनाएँ हम।
हमने किया प्रचार अभी तक,
नगर-गाँव-गलियारों में,
सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह,
पहुँचें हर आँगन चौबारों में।
देकर अनेकान्त संदेश,
सम्यक् सोच बढ़ाएँ हम,
जिनशासन का पालन कर,
जन-धर्म इसे बनाएँ हम।
समता भाव भरे उर में,
भेद-भाव समूल नष्ट हो।
जीएं और जीनें दे सबको,
प्राणी मात्र को ना कष्ट हो।
मोक्ष का असली स्वरूप,
मानवता को दिखलाएँ हम।
जिनशासन का पालन कर,
जन-धर्म इसे बनाएँ हम।
मन का मंगलमय विचार अब,
दृढ़ संकल्प हमारा हो।
वीतराग की शरणागति से,
कायाकल्प हमारा हो।

-117, कैलाशपुरी, निम्बाहेडा रोड़, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

शोधालेख

जैन दर्शन में मन का प्रबन्धन

डॉ. ज्योति सेठी

वर्तमान युग मानसिक समस्याओं का युग है। प्रायः सभी की समस्या है कि मन स्थिर नहीं रहता, मन चंचल है। ध्यान करने बैठते हैं तो मन कहीं का कहीं चला जाता है। व्यक्ति मन की समस्या से मुक्ति पाना चाहता है। इसके लिए मन को वश में करना जरूरी है। मन पर अनुशासन करना, सम्यग्ज्ञान पूर्वक अपने मन को संयमित करना, मन को एकाग्र करना मन का प्रबन्धन है।

जो मनन करे, वह मन है। अनिन्द्रिय, अन्तःकरण और मन- ये एकार्थवाची हैं। संकल्प-विकल्प, कल्पना, स्मृति, चिंतन आदि मन के कार्य हैं। मन में विचारों का अव्यवस्थित प्रवाह चलता है। भूतकालीन घटना की स्मृति, पूर्वापर संबंध विचार, तर्क-वितर्क, शिक्षा, वार्तालाप आदि कार्यों में मन सहयोगी होता है।[1]

मन दो प्रकार के हैं- (1) द्रव्य मन और (2) भाव मन[2]।

द्रव्य मन- श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार द्रव्य-मन सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त रहता है। दिगम्बर मान्यता के अनुसार जो हृदय स्थान में आठ पांखुड़ी कमल के आकार वाला है तथा अंगोपांग नामकर्म के उदय से मनोवर्गणा के स्कन्ध से उत्पन्न हुआ है, उसे द्रव्य-मन कहते हैं।[3] रूपादि से युक्त होने के कारण यह पुद्गल द्रव्य की पर्याय है।[4]

भाव मन- संकल्प-विकल्पात्मक परिणाम तथा विचार-चिन्तन आदि रूप ज्ञान की अवस्था विशेष भाव-मन है। तत्त्वार्थराजवार्तिक के अनुसार भावमन ज्ञानस्वरूप है और ज्ञान जीव का गुण होने से आत्मा में अन्तर्भूत होता है। भावमन लब्धि और उपयोग रूप लक्षण वाला है।[5]

संकल्प-विकल्प करना, गुण-दोष का विचार, स्मरणादि करना आदि भाव मन के ही कार्य हैं। यहाँ इस प्रकरण में मन से तात्पर्य भावमन से ही है, क्योंकि द्रव्य मन तो पौद्गलिक है तथा भाव-मन ज्ञान स्वरूप है। मन को एकाग्र (स्थिर) करने से तात्पर्य अपने ज्ञान को एकाग्र करना है। मिथ्यात्व और अज्ञान के कारण मन के द्वारा जो ज्ञान की पर्याय विषय-कषायों में प्रवर्तित होकर चंचल हो रही है, उसे सम्यग्ज्ञान द्वारा स्वोन्मुख करना-आत्मोन्मुख करना ही मन का प्रबंधन है।

मन के प्रबन्धन की आवश्यकता-

मोक्षमार्ग में मन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मोक्षमार्ग का प्रारम्भ सम्यग्दर्शन से होता है

और सम्यक्त्व को ग्रहण करने के लिए 'संज्ञी होना' प्रमुख पात्रता है। गोम्मटसार जीवकाण्ड में सम्यक्त्व-ग्रहण के योग्य जीव की पात्रता इस प्रकार उक्त है-

चदुगदिभव्वो सण्णी पज्जत्तो सुज्झगो य सागारो।
जागारी सल्लेसो सलद्धिगो सम्ममुवगमइ।।[6]

चारों गतियों के भवी, संज्ञी, पर्याप्त, शुभध्यान, साकारोपयोग, शुभलेश्या एवं सद्लब्धि वाला जीव सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है। तत्त्वार्थ सूत्र में 'संज्ञिनः समनस्काः'[7] कहकर मन सहित जीवों को संज्ञी कहा है।

इस प्रकार मन वाले जीवों को ही मोक्षमार्ग प्रकट करने की, सम्यक्त्व प्रकट करने की योग्यता/पात्रता होती है, अतः 'मन' मोक्षमार्ग में कथंचित् साधक है। परन्तु जब तक मन मिथ्यात्व और राग-द्वेषादि विकारी भावों के वशीभूत होकर व्यग्र और चंचल रहता है, तब तक वह संसार की ही वृद्धि करता है।

समाधितंत्र के श्लोक 36 में कहा गया है- जिसका मन राग-द्वेष से विक्षिप्त नहीं होता, आकुलित नहीं होता, जो देहादिक में आत्मबुद्धि नहीं करता और आत्मस्वरूप में निश्चल रहता है, वह आत्मा के वास्तविक स्वरूप में रहता है। जिसका मन राग-द्वेषादि रूप में परिणमता है, उनसे विक्षिप्त होता है, जो देह और आत्मा के भेदज्ञान से रहित है और आत्मस्वरूप में स्थिर नहीं होता, वह व्यक्ति भ्रान्त है।

निम्नलिखित कारणों से मन को नियंत्रित करना (स्थिर करना) आवश्यक है- 1. भवभ्रमण को रोकने के लिए। 2. मन के विकारों को निगृहीत करने के लिए। 3. आत्म-साक्षात्कार (सम्यग्दर्शन) करने के लिए। 4. मूर्च्छा की तीव्रगति को रोकने के लिए। 5. इच्छा के परिष्कार के लिए। 6. बुद्धि के परिष्कार के लिए। 7. भोग और योग के संतुलन के लिए। 8. चेतना शक्ति के विकास के लिए। 9. स्वभाव परिवर्तन के लिए। 10. संसार पर जय पाने के लिए। (मनो यस्य वशे तस्य भवेत्सर्वं जगद्वशे। मनसस्तु वशे योस्ति स सर्वजगतो वशे।।) 11. स्वस्थ, सफल एवं शान्तिमय जीवन के लिए। 12. शारीरिक एवं आत्मिक स्वास्थ्य के लिए 13. संयम व नियम की दृढ़ता के लिए।[8] 14. ध्यान की सफलता के लिए।[9] 15. व्रत, तप, स्वाध्याय आदि की सार्थकता के लिए।[10] 16. भेदज्ञान की सिद्धि के लिए।[11]

मन की चंचलता के कारण-

मन को चंचल बंदर की उपमा दी जाती है, परन्तु मन स्वभाव से ही चंचल नहीं होता। मन की चंचलता/अस्थिरता के पीछे अनेक कारण हैं-

1. **मिथ्यात्व और अज्ञान-** वस्तु के सही स्वरूप को नहीं जानना, गलत जानना ही मिथ्यात्व और अज्ञान है। वस्तु स्वरूप की सच्ची जानकारी के बिना यह मन पर-द्रव्यों में हेर-फेर करने के लिए, उनमें परिणमन करने के लिए निरन्तर व्यग्र रहता है। जब हमें सच्चा ज्ञान हो जाता है, तब हमारा मन व्यर्थ की बातों में, विशेषकर जिनसे हमें हानि पहुँचती हो, ऐसी बातों में नहीं जाता है। उदाहरण के लिए किसी बिजली के स्विच में करंट है और हमें उसका ज्ञान है तो कोई कितना भी कहे, हम उसे छूने को तैयार नहीं होंगे, हमारा मन वहाँ नहीं जाएगा। उसी प्रकार सम्यग्ज्ञान- यथार्थ ज्ञान होने पर मन स्वयमेव चंचलता छोड़ देता है।
2. **शरीर आदि परद्रव्यों में आत्मबुद्धि-** शरीर आदि पर-पदार्थों को पवित्र, स्थिर और अपना मानना अज्ञान है, अविद्या है। उसकी पुनः-पुनः प्रवृत्ति रूप अभ्यास से उत्पन्न हुए संस्कारों से मन परवश होकर रागी-द्वेषी बन जाता है। विषयों और इन्द्रियों के अधीन होकर क्षुब्ध होता है, विक्षिप्त होता है। ऐसा ही समाधितन्त्र में कहा है-

अविद्याभ्याससंस्कारैरवशं क्षिप्यते मनः।
तदेव ज्ञानसंस्कारैः स्वतत्त्वेऽवतिष्ठते।।[12]

अविद्या के अभ्यास एवं संस्कारों से मन वश में नहीं होता। वही मन ज्ञान-संस्कारों से स्वतत्त्व में अवस्थित हो जाता है।
3. **अनर्गल इच्छाएँ-** इच्छाओं का उत्पन्न होना भी मानसिक चंचलता का कारण है। मनुष्य की इच्छाएँ अंतहीन हैं। एक पूरी होती नहीं, उससे पूर्व दूसरी इच्छा उत्पन्न हो जाती है, जिससे मन निरन्तर चंचल बना रहता है।
4. **राग-द्वेष-क्रोधादि कषाय-** परपदार्थों में इष्ट-अनिष्ट बुद्धि, क्रोध, अहंकार, घृणा, द्वेष, भय, लालच, कुटिलता, वासना आदि वृत्तियाँ एवं निषेधात्मक भावों का जितना अधिक दबाव होता है, उतना ही मन चंचल हो जाता है। मन की चंचलता इन वृत्तियों का ही परिणाम है। ज्ञानार्णव में कहा है-

यत्र रागः पदं धत्ते द्वेषस्तत्रेति निश्चयः।
उभावेतौ समालम्ब्य विक्रामत्यधिकं मनः।।[13]

जहाँ राग होता है वहाँ द्वेष भी होता है, यह निश्चित है। इन दोनों का आलम्बन लेकर यह मन धूम मचाता रहता है।
5. **पंचेन्द्रिय विषय-भोग-** पंचेन्द्रिय विषय-भोगों में अधिक तन्मयता मन की चंचलता को बढ़ाती है तथा मानसिक विकारों का भी कारण बनती है।
6. **असंयमित भोजन-पान-** मन की चंचलता से भोजन का गहरा संबंध है। भोजन

हमारे विचारों, आचार व व्यवहार को प्रभावित करता है। बार-बार खाने से, असंतुलित मात्रा में खाने से मन अधिक चंचल व विकार युक्त हो जाता है।

7. **अधीरता**– मन में धैर्य नहीं है। वह प्रतीक्षा करना नहीं जानता। यह जल्दबाजी और अधीरता मानसिक असंतुलन पैदा करती है।

8. **असहिष्णुता**– आज व्यक्ति में सहनशक्ति नहीं है। एक छोटा बच्चा भी सहन करना नहीं जानता। सहिष्णुता की कमी मन को व्यग्र कर देती है।

9. **आग्रह**– आग्रह की प्रकृति परिवार में बहुत तकलीफ देती है। इससे समूचे परिवार में कलह का वातावरण बन जाता है, जिससे मन भी अशान्त हो जाता है।

10. **एकांगी दृष्टिकोण**– किसी भी बात के एक ही पक्ष को देखना– यह भी अशान्ति का एक प्रमुख कारण है। एक विचार के पीछे अनेक अपेक्षाएँ होती हैं, परन्तु वक्ता की अपेक्षा न समझकर किसी बात को एकांगी दृष्टिकोण से ग्रहण करना भी मन को अशांत कर देता है।

11. **संशय**– जब हमारे मन रूपी वन में संशय की अग्नि प्रज्वलित हो जाती है, तब हमारे श्रद्धा और आस्था के वृक्ष लड़खड़ाकर गिरने लगते हैं। वैराग्य की लताएँ जलकर राख होने लगती हैं, जिससे भय, अनिश्चितता और अविश्वास रूपी धुएँ से हमारे मन में घुटन पैदा हो जाती है।

12. **दुर्विचार**– मन में जब एक बार दुर्विचार उदित हो जाते हैं, तो वे पुनः पुनः उपस्थित होकर मन को कंपायमान करते ही रहते हैं।

13. **भौतिक वस्तुओं के प्रति आसक्ति**– जब तक जीव के मन में भौतिक वस्तुओं के प्रति आसक्ति बनी रहती है, तब तक वह आत्मकल्याण की ओर अग्रसर नहीं हो पाता है। उनकी पूर्ति के लिए उसका मन निरन्तर व्यग्र रहता है और वह पापों में लिप्त हो जाता है।

14. **शारीरिक अस्वस्थता**– शारीरिक अस्वस्थता भी मन को स्थिर नहीं होने देती। व्याधि की पीड़ा में तथा उसे दूर करने की चिंता में मन निरन्तर व्यग्र और अस्थिर रहता है।

15. **नींद का असंतुलन**– जरूरत से ज्यादा नींद अथवा पर्याप्त नींद का न होना, दोनों ही मन को स्थिर होने में बाधक बनते हैं।

16. **प्रदर्शन का भाव**– बाहरी प्रदर्शन का परिणाम मानसिक अस्थिरता का कारण है। अपने रूप, ज्ञान, बल, ऐश्वर्य, तप आदि के प्रदर्शन का परिणाम भी मन को चंचल

बना देता है।

17. **आजीविका की अस्थिरता व अशुद्धता–** अन्याय अनीति से किए गए व्यापार में मन निरन्तर संकल्प-विकल्पों में उलझा रहता है, चंचल बना रहता है तथा यदि आजीविका की स्थिरता नहीं है तो भी मन स्थिर नहीं रह पाता।

18. **प्रतिकूल वातावरण–** हमारा पारिवारिक, सामाजिक वातावरण भी मन पर प्रभाव डालता है। प्रतिकूल वातावरण में मन स्थिर नहीं रह पाता।

19. **विचारों की भीड़–** मन में विचारों की अधिकता भी मन की चंचलता का कारण है। अधिक सोचना भी एक प्रकार की बीमारी है, उसके कारण मन स्थिर नहीं हो पाता।

20. **अत्यधिक विकल्प प्राप्त होना–** आज के इस भौतिकवादी युग में एक कार्य के लिए अनेक विकल्प उपलब्ध होते हैं। जैसे व्यक्ति बाजार में कोई एक वस्तु खरीदने जाता है तो उस वस्तु के अनेक ब्राण्ड, अनेक कम्पनियों के उत्पाद उसे मिलते हैं, जिससे वह असमंजस में पड़ जाता है और उसका मन अस्थिर हो जाता है।

21. **गलत संस्कार–** यदि व्यक्ति में झूठ बोलने के, चोरी के, कुशील सेवन के, हिंसा करने के संस्कार हैं तो उसका मन स्थिर नहीं हो सकता।

मन-प्रबन्धन के उपाय

मनुष्य चिन्तनशील प्राणी है। जिसकी मानसिक शक्ति जितनी तीव्र या उत्कट होती है, वह उतना ही विचारज्ञ, कार्यकुशल और दक्ष समझा जाता है। मन को शक्तिशाली बनाने तथा मन की चंचलता को रोकने के लिए मन को जीतना होगा, उस पर अनुशासन करना होगा। जब तक यह चंचल मन बाहर में दौड़ता रहेगा, तब तक हमारी लौकिक तथा पारलौकिक- दोनों ही उन्नति अवरुद्ध रहेगी। मन को नियन्त्रित करने का सबसे प्रबल उपाय है, ज्ञाता-द्रष्टा रूप वीतराग भाव से रहना, साक्षी भाव से रहना। जैन धर्म के मूलभूत सिद्धान्त मन पर अंकुश लगाने में सहायता प्रदान करते हैं-

1. **वस्तु स्वरूप की स्वतन्त्रता का ज्ञान–** प्रत्येक द्रव्य स्वतंत्र है। कोई किसी के अधीन नहीं है। ऐसा वस्तु स्वरूप का सम्यक् परिज्ञान होने पर और हृदय में इसकी दृढ़ श्रद्धा होने पर चंचल मन स्वयमेव भटकना छोड़ देता है। उस पर से कर्तृत्व का भार उतर जाने से मन अत्यन्त शान्त हो जाता है।

2. **इच्छाओं का नियमन–** इच्छाओं के नियमन से तात्पर्य इच्छाओं के निरोध से है। मन में इच्छाएँ उत्पन्न ही नहीं होने देना इच्छा का निरोध है। इच्छा का निरोध करना ही तप है। जब मन में संयमित वृत्ति उत्पन्न होगी, अनासक्ति और अपरिग्रह की भावना उत्पन्न होगी तो स्वयमेव अनर्गल इच्छाएँ उत्पन्न नहीं होंगी। इच्छाओं पर नियन्त्रण

होने से मन की चंचलता स्वयमेव कम हो जाएगी।

3. **संयम का पालन–** जैन दर्शन में संयम दो प्रकार का कहा गया है- इन्द्रिय-संयम और प्राणी-संयम। छह काय के जीवों की दया पालना प्राणी-संयम है तथा पाँच इन्द्रिय और मन को वश में करना इन्द्रिय-संयम है। जैसा कि कहा गया है-

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्रिय मन वश करो।
संजम रतन सँभाल, विषय चोर बहु फिरत हैं।।

निम्नांकित रूपों में संयम का पालन करके मन को स्थिर किया जा सकता है- 1. काया का संयम, 2. वाणी का संयम, 3. मन का संयम, 4. आहार का संयम, 5. इच्छा का संयम, 6. श्वास का संयम, 7. इन्द्रियों का संयम, 8. भावों का संयम।

4. **अपरिग्रह की भावना–** संतोषी सदा सुखी- यह कहावत लोक प्रसिद्ध है। हमें जो कुछ मिला है, उसी में संतुष्ट रहने की आदत डाल लें तो परिग्रह संचय की चिंता में जो मन निरन्तर व्यग्र रहता था, वह मन भी स्वयमेव शान्त हो जाएगा। यदि मनुष्य भौतिक एवं जड़ वस्तुओं के प्रति ममत्व छोड़कर वस्तुस्वरूप को जानते हुए संतोष धारण करे और अपरिग्रह व्रत का परिपालन करे तो मन का भटकना समाप्त होकर एकाग्रता बढ़ेगी और अनेक व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं आर्थिक समस्याएँ सुलझेंगी।

5. **निन्दा, गर्हा, प्रतिक्रमण, प्रायश्चित्त–** जैनाचार्यों का अनुशासन अत्यन्त मनोवैज्ञानिक है। जैनदर्शन में प्रतिक्रमण और निन्दा-गर्हा आदि का प्रावधान है जो कि मन की चंचलता मिटाने में सहायक है। जब कभी हमसे कोई गलती हो जाती है तो हमारे मन में निरन्तर शंका व भय बना रहता है। शंकित और भयभीत मन कभी एकाग्र नहीं हो पाता। अतः जैन श्रमणों एवं श्रावकों की चर्या का प्रमुख अंग निन्दा, गर्हा, प्रायश्चित्त आदि हैं, जिसके द्वारा वे अपनी स्वयं की गलतियों को स्वयं के मुख से गुरु से निवेदन करते हैं और गुरु उन्हें प्रायश्चित्त विधि से शुद्ध कर देते हैं। मन में कोई शंका नहीं रहने से मन चंचल नहीं हो पाता है।

6. **संयमित भोजन-पान–** मन की चंचलता को रोकने में हमारे भोजन का महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि कहा भी है- **जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन।** अतः खान-पान में समय रखना बहुत जरूरी है। सात्त्विक आहार करने से मन में करुणा रहती है तथा वह नियंत्रण में रहता है। अमर्यादित राजसिक एवं तामसिक आहार मन में क्रूरता को जन्म देता है, जिससे हमारा शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार का संतुलन बिगड़ जाता है। अतः शुद्ध सात्त्विक आहार नियमित समय पर नियमित मात्रा में करना चाहिए। बार-बार खाना, जल्दबाजी में खाना, विविध प्रकार की अनेक खाद्य सामग्री को एक

साथ खाना, पाचनतंत्र को भी अव्यवस्थित करता है और मन को अधिक चंचल बना देता है।

7. **राग-द्वेष-मोह का त्याग-** श्री शुभचन्द्राचार्य 'ज्ञानार्णव' में लिखते हैं- जिस प्रकार कटी हुई पाँखों का पक्षी उड़ने में असमर्थ होता है, उसी प्रकार मन रूपी पक्षी राग-द्वेष रूपी पाँखों के कट जाने से विकल्प रूप भ्रमण से रहित हो जाता है-

यथोत्पाताक्षमः पक्षी लूनपक्षः प्रजायते।
रागद्वेषच्छदच्छेदे स्वान्तपत्ररथस्तथा।।[14]

परपदार्थों में इष्टानिष्ट बुद्धि रूप राग-द्वेष ही मन में विकार उत्पन्न कराकर उसे चंचल बनाते हैं। रागादि भावों की न्यूनता से ही यथार्थ रूप में मन को वश में किया जा सकता है।

8. **स्वाध्याय-आत्मचिन्तन आदि सत्कार्य-** संसारी प्राणियों का मन बड़ा चंचल होता है। उसे कुछ न कुछ काम चाहिए। बिना काम के रहना वह पसंद नहीं करता। अज्ञानी जनों का मन निरन्तर विषय-वासना की पूर्ति की लालसा में उलझा रहता है। इसके विपरीत ज्ञानीजन अपने मन को स्वाध्याय, चिन्तन, मनन आदि सत्कार्यों में लगाए रखते हैं, जिससे उनके मन के व्यर्थ के विकल्प शमित होते हैं।

9. **निरन्तर अभ्यास और वैराग्य-** निरन्तर अभ्यास के द्वारा तथा वैराग्य परिणति के द्वारा मन को वश में किया जा सकता है। श्री कृष्ण से पूछा गया- मन का निग्रह कैसे किया जाये? उत्तर मिला- निरन्तर अभ्यास और वैराग्य द्वारा। अभ्यास यत्नसाध्य होता है, सहज नहीं होता है। वैराग्य स्वाभाविक होता है, प्रयत्नजन्य नहीं। महर्षि पतंजलि ने भी यही कहा है- अभ्यास और वैराग्य के द्वारा मन का निरोध होता है।

10. **ध्यान, योग, प्राणायाम आदि-** वर्तमान में मन को एकाग्र करने की पद्धतियों में ध्यान, योग, प्राणायाम, आसन आदि अनेक विधियाँ प्रचलित हैं। हमारे प्राचीन आचार्यों ने भी सामायिक, ध्यान, कायोत्सर्ग आदि के द्वारा ही मन को जीता है तथा वर्तमान में भी यही पद्धतियाँ पुनः नवीन रूप में प्रचलित हुई हैं। इनसे मन में व्यर्थ के संकल्प-विकल्प उत्पन्न नहीं होते। विषय-कषायों की चाह घट जाती है तथा मन की एकाग्रता की क्षमता बढ़ती है।

11. **नयात्मक दृष्टिकोण (सापेक्ष सोच)-** मन में व्यापकता, निर्मलता और शान्ति लाने के लिए अनेकान्त एवं नयवाद एक अमूल्य उपहार है। यह अज्ञानी जनों के मताग्रह के अंधकार को मिटाकर सापेक्ष विचार या समानता के भाव को आलोक प्रदान करता है।

12. **समता भाव का धारण–** शुभचन्द्राचार्य कहते हैं कि जिस पुरुष में समभाव की भावना है, उसकी आशाएँ तत्काल नष्ट हो जाती हैं। अविद्या क्षणभर में क्षय हो जाती है। उसका चित्त रूपी सर्प भी मर जाता है।[15]

13. **संतुलित नींद लेना–** पर्याप्त मात्रा में नींद लेने से मन की स्थिरता में सहायता मिलती है।

14. व्यर्थ के विचारों पर नियंत्रण करना चाहिए।

15. बाहरी प्रदर्शन की भावना को नियंत्रित करना चाहिए।

मन को एकाग्र करने का साक्षात् उपाय तो ध्यान है। अन्य सभी उपाय ध्यान की सिद्धि के लिए ही हैं। इन सभी उपायों को अपनाकर मन को वश में किया जा सकता है।

मन को नियंत्रित/स्थिर करने का वास्तविक फल अतीन्द्रिय आनन्द की प्राप्ति रूप आत्मानुभव और परम्परा से मोक्ष ही है। इससे हमारे वर्तमान जीवन में भी पवित्रता आती है। मान-अपमान से रहित साम्यभाव प्रकट होता है। समाधि की उपलब्धि होती है। हमारे स्वभाव व व्यवहार में परिवर्तन आता है। जीवन में सहिष्णुता का उदय होता है तथा शारीरिक आरोग्य का भी लाभ मिलता है।

यदि हम जीवन में शान्ति चाहते हैं, सुख की कल्पना साकार करना चाहते हैं तो अपने मन पर नियंत्रण करना होगा। मन को स्थिर किए बिना लौकिक कार्यों में भी सफलता नहीं मिलती तो पारलौकिक काम की सिद्धि कैसे हो सकती है? पानी की बिखरी हुई धाराएँ विद्युत उत्पन्न करने में सर्वथा असमर्थ होती हैं, किन्तु उसी जल को बाँध आदि के द्वारा रोक कर केन्द्रित किया जाये तो उससे लाखों किलोवाट बिजली प्राप्त हो सकती है। उसी प्रकार चंचल मन की शक्ति को केन्द्रित किया जाये तो हमें अवश्य ही सफलता प्राप्त हो सकती है। यही मन का प्रबन्धन है।

संदर्भ:-

1. नीति वाक्यामृतम्, 6.6
2. सर्वार्थसिद्धि, 5.3.269.2, 5.19.287.1
3. गोम्मटसार ज़ीवकाण्ड, 443,861
4. राजवार्तिक, 5.3.3.442.10
5. राजवार्तिक, 5.3.3.442.9, 5.19.20.471
6. गोम्मटसार जीवकाण्ड, 652
7. तत्त्वार्थ सूत्र, 2.24
8. ज्ञानार्णव, 22.22
9. ज्ञानार्णव, 22.28
10. ज्ञानार्णव, 22.12,28
11. ज्ञानार्णव, 22. 18
12. समाधितन्त्र, 37
13. ज्ञानार्णव, 23.25
14. ज्ञानार्णव, 23.27
15. ज्ञानार्णव, 24-11

-एस.बी.107 सी, सेठी हाउस, लाल कोठी, टोंक रोड़, जयपुर (राज.)

जीवन-व्यवहार

यतनाधर्म महान्

श्री अरुण मेहता 'एफ.सी.ए., एफ.सी.एस.'

यतना जैन धर्म का आधारभूत सिद्धान्त है। इसका दूसरा नाम विवेक है। यतना जैन धर्म पालन करने का आधार है। यतना के बिना धर्म क्रिया सूनी है। यतना के बिना धर्म क्रिया निर्जरा के स्थान पर कर्मबन्धन का कारण बन जाती है। यतना को प्राकृत में **जयणा** कहा जाता है।

यतना का अर्थ है जीव रक्षा के प्रति सावधानी, सावचेती। यतना का अर्थ है जीव रक्षा का प्रयत्न। समस्त लोक में विशाल जीव राशि रही हुई है। हमारे चारों ओर अनेक प्रकार के जीव ही जीव रहे हुए हैं। हमारे चलते-फिरते, उठते-बैठते, सोते-जागते, खाते-पीते, बोलते-चुप रहते, वस्तु लेते-देते-रखते, दरवाजा आदि खोलते-बन्द करते, साफ-सफाई करते-करवाते, खाना बनाते, यानी कोई भी कार्य करते-कराते अगर लापरवाही रखी जाय तो अनेकानेक जीवों की हिंसा होने की संभावना रहती है। सावधानी रखकर हम अनेकानेक प्राणियों के प्राण बचा सकते हैं, पाप से बच सकते हैं। पाप से रक्षण यानी अपने स्वयं के भविष्य में आने वाले दुःखों से रक्षण है। इस प्रकार से अपने भविष्य के दुःखों से अपनी रक्षा करने वाली 'यतना' अपनी माता है। इस प्रकार यतना हमें यातना से बचाती है।

"**जयणा व्यवहार में, तो शान्ति जीवन में**" यह सूत्र हर मनुष्य की जुबान पर होना चाहिए, हर मनुष्य के मन में होना चाहिये, हर व्यक्ति के आचरण में होना चाहिए। इस सूत्र को अपने जीवन में चरितार्थ करना हर साधक के हित में अनिवार्य है। क्योंकि यह निश्चित बात है कि अगर हम दूसरों को मारेंगे तो हमें भी मरना पड़ेगा, दुःख भोगना पड़ेगा। यतना जीवों की करनी है, इसलिए हमें पहले जीव-अजीव को समझना अनिवार्य है। अजीव की भी अयतना-अनादर नहीं करना चाहिये, लेकिन जीव यतना अत्यन्त आवश्यक व महत्त्वपूर्ण है। जो प्राण सहित है, जो चेतनायुक्त है, वह जीव है। जीवों की रक्षा करने की, यतना करने की भावना होते हुए भी जीव-अजीव को अच्छी तरह नहीं जानने, नहीं समझने के कारण कई बार जीव को अजीव समझकर उसकी अयतना हो जाती है और कर्म बंध हो जाता है।

जिनेश्वर भगवान ने काया के आधार पर जीव छः प्रकार के बतलाये हैं। प्रत्येक जीव इन छः कायों में परिभ्रमण करता आ रहा है, और इन्हीं छः कायों में से किसी एक काय में वर्तमान में आया हुआ है। जब तक वह मुक्त नहीं होता है तब तक भविष्य में भी इन्हीं छः

कायों में पुनः-पुनः उसे परिभ्रमण करना है। लेकिन यदि वह इन छः काय के जीवों की रक्षा करता है, यतना करता है, उनके प्रति शस्त्र के प्रयोग से निवृत्त होता है, तो इनसे मुक्त होकर अविनाशी अजर-अमर पद प्राप्त कर सकता है। सिद्ध बन सकता है। अतः इन छः काय के जीवों की रक्षा, यतना बहुत उपयोगी है। यही ज्ञानियों के ज्ञान का सार है।

क्रम से एक-एक काय के जीव की रक्षा के बारे में विचार-चिन्तन करने का प्रयास करेंगे।

1. पृथ्वीकाय का स्वरूप

श्रमण भगवान महावीर ने पृथ्वी को सचेतन अर्थात् चेतना वाली बतलाया है, कंकर, पत्थर, शिला, मिट्टी, लवण, खडी, जमीन से निकलने वाला कच्चा तेल, अभ्रक, धातु आदि सभी प्रकार की पृथ्वी में अति लघु शरीर वाले अनेक जीव हैं, जो पृथक्-पृथक् सत्ता वाले है। ये पृथ्वीकाय के जीव सर्दी-गर्मी, हवा-पानी, अग्नि आदि के स्पर्श से तथा पथिकों के चरण स्पर्श से मरकर निर्जीव यानी अचित हो जाते हैं। ऐसे शस्त्रों से परिणत होने तक ये पृथ्वीकाय के जीव सचित होते हैं और इनकी रक्षा करना ही यतना है।

पृथ्वीकाय की यतना

सभी प्रकार की पृथ्वी, पत्थर, लाल-काली-पीली-सफेद मिट्टी, पृथ्वी से निकलने वाले पदार्थ, धातु, खनिज व पेट्रोलियम पदार्थ (कच्चा तेल), नमक, अभ्रक आदि के एक-एक कण में अनेकानेक जीव हैं, इनकी रक्षा करना यतना धर्म है। किसी भी प्रकार के भवन बनाने के लिये नींव खोदना, पृथ्वी का छेदन-भेदन करना, दोहन करना, कुँआ खोदना आदि कार्यों से पृथ्वीकाय के असंख्यात जीवों की हिंसा होती है। अतः इनसे बचना चाहिये।

समस्त पृथ्वी को ही सचित्त कहा है तो फिर ऐसे तो हमारा चलना-फिरना भी हिंसा का कारण बन जायेगा। यहाँ हमें यह समझना है कि पृथ्वी का जो भाग खुला हुआ, उघड़ा हुआ रहता है तथा जिस पर निरन्तर हवा, धूप, पानी व मनुष्यों, पशुओं तथा वाहनों का अवागमन होता रहता है, ऐसी पृथ्वी की ऊपरी सतह के चार अंगुल तक का भाग अचित हो जाता है और शेष नीचे का हिस्सा सचित्त रहता है। अतः ऐसी अचित्त पृथ्वी पर हमारे चलने-फिरने से हिंसा नहीं होती है, क्योंकि ऐसी पृथ्वी निर्जीव हो चुकी है।

इस तरह से जान, समझकर पृथ्वी की खुदाई आदि कार्य नहीं करना-कराना चाहिये।

तुरन्त की या अल्प समय की खुदी हुई पृथ्वी का भाग भी सचित्त होता है, अतः उस पर आवागमन नहीं करना-कराना चाहिये।

तुरन्त घड़ाई किए गए या तोड़ी गए शिला-पत्थर आदि भी सचित्त होते हैं, अतः उनकी

भी यतना करनी चाहिये। जब तक वे हवा, धूप, पानी आदि का स्पर्श पाकर अचित्त नहीं हो जायें, उन्हें छूना या काम में नहीं लेना चाहिये। खानों में से निकाला हुआ सभी प्रकार का खनिज पदार्थ, कोयला, धातुएँ, कच्चा तेल, नमक आदि सभी जब तक परिष्कृत-परिणत नहीं कर दिये जायें, तब तक सचित्त ही होते हैं, अतः इनसे भी दूर रहना चाहिये। क्योंकि स्पर्श करने मात्र से इनको दुःख होता है, इनकी हिंसा हो जाती है। इस तरह से सावधानी रखते हुए सम्पूर्ण पृथ्वीकाय की रक्षा करना, यतना करना प्रत्येक साधक का लक्ष्य होना चाहिये।

2. अप्काय या जलकाय का स्वरूप

जल की एक-एक बूंद में असंख्यात अप्काय के जीव होते हैं, जिनका शरीर ही पानी है। जल की एक-एक बूंद मात्र में असंख्यात अप्कायिक जीव होने पर भी वे सभी जीव अलग-अलग सत्ता वाले अति लघु जीव हैं। ये जलकाय के जीव अग्नि, क्षार आदि के सम्पर्क से मरण को प्राप्त होते हैं, निर्जीव हो जाते हैं। मुख्य रूप से अग्नि क्षार, अम्ल आदि जलकाय के शस्त्र हैं। खारा पानी मीठे पानी का व मीठा पानी खारे पानी के लिये शस्त्ररूप होता है। जमा हुआ बर्फ अप्काय जीवों का पिण्ड है। हमारे स्पर्श मात्र से इन अप्काय के जीवों की विराधना होती है।

अप्काय या जलकाय की यतना

सभी प्रकार का जल-पानी अप्काय के जीवों का पिण्ड है। पानी की एक-एक बूँद में असंख्यात जीव होते हैं। जब तक यह अप्काय या पानी शस्त्र से परिणत होकर अचित्त नहीं हो जाता है तब तक इनके स्पर्श का भी वर्जन करना श्रेयस्कर है। स्पर्श मात्र से बचना या सचित्त पानी का उपयोग नहीं करना अगर परिहार्य नहीं है तो पानी का उपयोग कम से कम करना चाहिये। हम सावधानी-सजगता रखकर अपने प्रतिदिन के उपयोग के पानी की मात्रा को दसवें, बीसवें, पचासवें हिस्से (प्रतिशत नहीं) तक भी कम कर सकते हैं, इसमें बस यतना की आवश्यकता है, मितव्ययता की आवश्यकता है। एक बार उपयोग किये हुए पानी को दुबारा-तिबारा भी उपयोग किया जा सकता है, ऐसा प्रयत्न करना चाहिये। पीने के लिये नित्यप्रति जितना पानी आवश्यक हो उसे प्रातःकाल छान कर अचित्त कर (धोवन बनाकर या गर्म कर) दिन भर उसी का सेवन करना चाहिये। स्नान का त्याग करना श्रेष्ठ है। नहीं कर सकें तो स्नान कम से कम करने का प्रयास सतत चालू रखना चाहिये। साथ ही प्रति स्नान में उपयोग लिये जाने वाले पानी की मात्रा घटाने का प्रयास भी करते रहना चाहिये। कपड़े धोया हुआ पानी पुनः पोंछा लगाने में काम लिया जा सकता है। ब्रश-दातुन करते, दाढ़ी बनाते, हाथ-मुँह आदि

धोते समय नल को लगातार चालू नहीं रखना चाहिये। इससे भी काफी मात्रा में पानी की यतना की जा सकती है। ज्ञानी भगवन्त फरमाते हैं कि पानी के उपयोग में घी के उपयोग से भी ज्यादा मितव्ययी होना चाहिये। हमें अपने पानी के प्रत्येक उपयोग के बारे में गंभीरता से सोचकर, चिन्तन कर इस बात का प्रयास करना चाहिये कि कैसे हमारा जीवन कम से कम पानी के खर्च से चलाया जा सकता है। हौद, तालाब, नदी, सरोवर, पूल, सागर आदि में जाकर स्नान करने से उसमें रहे हुए तमाम पानी के जीवों की हिंसा का पाप बन्ध होता है इसलिये ऐसा कभी नहीं करना चाहिये, त्याग करना चाहिये। गाड़ी आदि वाहन धोने के लिये पाइप लगाकर पानी नहीं चलाना चाहिये। सूखे कपड़े व गीले कपड़े से पौंछकर सफाई की जा सकती है। घर की धुलाई नहीं करनी चाहिये। होली पर रंग, गुलाल नहीं खेलना चाहिये।

3. तेजस्काय या अग्निकाय का स्वरूप

अंगार, ज्वाला, उल्का, विद्युत् आदि सभी प्रकार की अग्नि सजीव है। अग्नि ही इन जीवों का शरीर है। अग्नि के एक-एक कण में असंख्य जीव हैं। पानी, हवा, मिट्टी आदि इनके शस्त्र हैं। जिनसे परिणत होकर ये तेऊकाय के जीव मर जाते हैं। निर्जीव हो जाते है।

सभी प्रकार की बिजली-अग्नि तेऊकाय के जीवों का पिण्ड है। अग्नि-बिजली आदि जलाने व बुझाने दोनों में इन जीवों की हिंसा होती है तथा जलती हुई रखने पर भी निरन्तर हिंसा चालू रहती है। अग्नि जलने से अग्निकाय के जीवों की हिंसा होते रहने के साथ-साथ शेष पाँचों कायों की भी हिंसा होती है, क्योंकि अग्नि छह काय का शस्त्र होती है। अर्थात् जहाँ पर भी अग्नि है वहाँ पर छः काय के जीवों की हिंसा की नियमा है। अग्नि को सर्वभक्षी इसीलिए कहा गया है।

तेऊकाय या अग्निकाय की यतना

अग्नि-बिजली की व्यर्थ की हिंसा से तो सावधानी रखकर बचना ही चाहिये तथा साथ ही इनकी आवश्यकताओं को भी कम से कम करके इनकी हिंसा न्यूनतम की जा सकती है, करनी चाहिये। बिजली के उपकरण कम से कम रखने चाहिये व कम से कम उपयोग में लेने चाहिये। बिजली के उपकरणों को व्यर्थ तो चालू छोड़ना ही नहीं चाहिये। अग्नि भी कम से कम जलानी चाहिये तथा व्यर्थ चालू नहीं छोड़नी चाहिये। खाना बनाने के चूल्हे आदि पर छज्जा, छत्र या चन्दोवा लगाना चाहिये, जिससे कि कोई उड़ता हुआ त्रस जीव आकर अग्नि में गिरकर मरे नहीं। खाना पकाते समय बर्तन को ढककर पकाना चाहिये। दशहरा-दीपावली या अन्य किसी भी प्रसंग पर

आतिशबाजी, दीपकबाजी, लाइटिंग आदि से बचना चाहिये। भट्टियाँ, बॉयलर आदि से चलने वाली फैक्टरियों आदि का उद्योग नहीं करना चाहिये।

4. वायुकाय का स्वरूप

वायु ही जिन जीवों का शरीर है, ऐसे जीवों को वायुकाय कहा जाता है। सभी प्रकार की वायु के छोटे-से-छोटे भाग में भी अनेकानेक जीव होते हैं। आघात, टक्कर, अग्नि आदि वायुकाय के जीवों के लिए शस्त्र है, जिनसे ये जीव मरण को प्राप्त होते हैं। सभी प्रकार की हवा, वायु, तूफान, चक्रवात, मंडलवात, उत्कलवात, तनुवात, घनवात, झंझावात, बथुलिया आदि वायुकाय के जीवों का पिण्ड है। जो सचित्त है, प्राणवान है।

वायुकाय की यतना

समस्त वायुमण्डल में वायु (कम या ज्यादा) रही हुई है और सभी प्रकार की वायु वायुकाय के जीवों का पिण्ड है, जिसमें अनेकानेक वायुकाय के जीव रहे हुए हैं। इन वायुकाय के जीवों की हमारे हलन-चलन से, उठने-बैठने से, चलने-फिरने से, बोलने से, यहाँ तक कि श्वास लेने व छोड़ने से हिंसा होती है। प्रत्येक पदार्थ के हलन-चलन से यहाँ तक कि घड़ी के जो कांटे घूमते हैं, उनसे भी वायुकाय के जीवों की हिंसा होती है। यहाँ बड़ा सूक्ष्म व जटिल प्रश्न हमारे दिमाग में आता है कि फिर वायुकाय की यतना कैसे की जाय? श्वास लेना व छोड़ना प्रत्येक जीव के लिये अपरिहार्य है, इसलिये इसकी हिंसा तो प्रत्येक जीव को लगती है, लेकिन श्वासोच्छ्वास की प्रक्रिया को स्वाभाविक रूप से चलने दें, किसी तरह से तेज या धीरे लेने का या कोई अन्य प्रयास नहीं करके विशेष हिंसा-विराधना से बचा जा सकता है। बोलने से भी वायुकाय के जीवों की हिंसा होती है, अतः कम से कम बोलना चाहिये, आवश्यकता से अधिक तेज नहीं बोलना चाहिये व मुखवस्त्रिका लगाकर बोलने से वायुकाय के जीवों की हिंसा से बचा जा सकता है। हलन-चलन से भी वायुकाय के जीवों की हिंसा होती है तो आवश्यकता से अधिक निरर्थक हलन-चलन से बचकर इस हिंसा से बचा जा सकता है।

एक फूंक देने से असंख्य वायुकाय के जीवों की हिंसा होती है, ऐसा समझकर फूंक नहीं मारना चाहिये। बींजणा-पंखा आदि सभी प्रकार के कृत्रिम वायु उत्पन्न करने के साधनों से प्रतिपल असंख्य वायुकाय के जीवों की हिंसा होती है, ऐसा जानकर इनसे बचना चाहिये। निरर्थक हवा के साधन चालू नहीं छोड़ना चाहिये। धीमी गति से हलन-चलन की बजाय तीव्र गति से हलन-चलन से असंख्यगुणी अधिक हिंसा होती है। जैसे- पैदल चलने पर कम, धीमी गति के वाहन से चलने पर उससे ज्यादा, तेज गति की कार से चलने पर उससे भी ज्यादा और वायुयान से चलने पर उससे भी ज्यादा वायुकाय के जीवों की हिंसा

होती है। अतः तीव्र गति के साधनों का उपयोग अनावश्यक नहीं करना चाहिये।

उपर्युक्त वर्णित पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु ये चारों काय के जीव अव्यक्त चेतना वाले होते हैं। बहरे, गूंगे, अन्धे और असहाय जीवों की तरह छेदन-भेदन आदि की वेदना भोगते हुए भी ये जीव अपना दुःख एवं शोक व्यक्त नहीं कर पाते हैं, पर दुःख भोगते हैं। उनको किसी भी प्रकार का दुःख पहुँचाने पर हमारे कर्मों का बन्धन होता ही है, ऐसा जान-समझकर इनको कोई दुःख नहीं पहुँचाना चाहिये। **(क्रमशः)**

-पूर्व महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ,
467-ए, 7 वीं 'ए' रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.)

चिन्तन की मनोभूमि

संकलन : श्री सम्पतराज चौधरी

1. **अहम्-** हमें अपने में से 'मैं सर्व हितैषी हूँ', 'मैं अचाह हूँ' अथवा 'मुझे अपने लिए संसार से कुछ नहीं चाहिए'- यह अहंभाव भी गला देना चाहिए। यह तभी सम्भव होगा, जब सर्वहितकारी प्रवृत्ति होने पर भी अपने में करने का अभिमान न हो और चाह रहित होने पर भी 'मैं चाह रहित हूँ' ऐसा भास न हो। कारण कि अहंभाव के रहते हुए वास्तव में कोई अचाह हो नहीं सकता, क्योंकि सेवा तथा त्याग का अभिमान भी किसी राग से कम नहीं है। *-जीवनदर्शन*
2. **आस्था-** यह आवश्यक नहीं कि आस्था विवेक से समर्थित हो, पर यह आवश्यक है कि आस्था में विवेक का विरोध न हो। *-मानव दर्शन*
3. जिज्ञासा की जागृति सन्देह की वेदना में निहित है। सन्देह काल में आस्था का भार जिज्ञासु पर लाद देना जिज्ञासा को निर्जीव बनाना है। *-मानव दर्शन*
4. आस्था तभी सजीव होती है, जब साधक साध्य के महत्त्व को अपना कर साध्य में अपनत्व स्वीकार करे। *-सफलता की कुंजी*
5. **आस्तिकता-** भगवान का स्मरण करने से जीव का कल्याण होता है- यह बात भी अच्छी तरह जानते हैं, फिर भी मन भगवान में नहीं लगता, तो इससे बढ़कर और वास्तविकता क्या होगी? आश्चर्य इस बात का है कि हम महामूर्ख और नास्तिक होकर भी स्वयं को आस्तिक व बुद्धिमान मानते हैं। *- सन्तवाणी (प्रश्नोत्तर)*

-14, वरदान अपार्टमेंट, 64, इन्द्रप्रस्थ एक्सटेंशन, दिल्ली-110092

अध्यात्म

दुःख-मुक्ति एवं सुख-समृद्धि के सूत्र (5)

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

109. सुख-दुःख तो स्वतः आते जाते रहते हैं। उस आए हुए सुख में उदारता और दुःख में दोषों के त्याग को अपनाने से सुख-दुःख से अतीत के जीवन में प्रवेश हो जाता है, फिर सुख-दुःख से सदा के लिए मुक्ति मिल जाती है।
110. सुख का प्रलोभन सुख के राग को जन्म देता है और सुख का राग दुःख को जन्म देता है। अतः दुःख-मुक्ति का उपाय सुख के प्रलोभन का त्याग करना है।
111. दुःख स्वयं उतना बुरा नहीं है जितना दुःख का भय। भय से दुःख दुगुना हो जाता है और भय रहित होने से दुःख आधा रह जाता है।
112. सुख का लोभी और दुःख का भोगी ही दूसरे को दुःख देता है।
113. सुख का भोग सुरक्षित रहे और दुःख भी न भोगना पड़े, यह असम्भव है। सुख के भोगी को दुःख भोगना ही पड़ता है।
114. दुःख दबाने से मिटता नहीं है, अपितु उत्तरोत्तर बढ़ता ही रहता है। दुःख का प्रभाव ही दुःख की निवृत्ति में हेतु है।
115. दुःख का प्रभाव ही वासना से मुक्त कर अनन्त, चिन्मय-आनन्द से अभिन्न कर देता है।
116. संसार से संबंध तोड़ने मात्र से सत्-चित-आनंद की प्राप्ति हो जाती है।
117. समस्त दुःखों का कारण एक मात्र तृष्णा है।
118. दरिद्रता किसी परिस्थिति विशेष में नहीं है, अपितु जहाँ तृष्णा है वहाँ दरिद्रता है।
119. विषय-भोग न भोगना वैराग्य नहीं है, अपितु विषयों की वासना को मन से निकालना वैराग्य है। वैराग्य अर्थात् राग रहित होना ही समस्त दोषों-दुःखों से मुक्त होना है।
120. सुखमय परिस्थिति में क्रियात्मक सेवा और दुःखमय परिस्थिति में भावात्मक सेवा करनी चाहिए।
121. संसार का काम तो कोई दूसरा भी कर सकता है, किन्तु अपने दोषों और दुःखों को दूर करने का काम स्वयं को ही करना पड़ता है।
122. सुख उसी का दास है जो सुख का दास नहीं है।

123. उस सुख का त्याग कर दो जो किसी का दुःख हो।

124. अपने सुख को त्यागते ही निर्दोषता की अभिव्यक्ति और सच्चिदानंद की अनुभूति होती है।

125. अपना सुख दूसरों को बांटने से बढ़ता है और दूसरों का दुःख बंटाने से अपना दुःख घटता है।

126. संयोग-वियोग विधान के अधीन हैं उनके लिए चिन्ता करना भूल है।

127. साधक के जीवन में सुख-भोग का कोई स्थान ही नहीं है, क्योंकि सुख-भोग की अपेक्षा सेवा व त्याग में अधिक मधुर सुख है।

128. जो बिना कुछ किए स्वतः हो रहा है वह किसी के लिए भी अहितकर नहीं है।

129. सुख चाहते हैं तो दूसरों को सुख दो, क्योंकि जैसा बीज बोया जाता है उसका फल भी वैसा ही होता है।

130. सुख देने से अविनाशी मधुर सुख मिलता है और सुख लेने से क्षणिक-नाशवान सुख मिलता है।

131. त्यागपूर्वक दान से सहस्र गुना सुख मिलता है।

132. संसार से मिली वस्तुओं से संसार की सेवा करना है। वस्तुओं से सेवा करने से उनके प्रति ममता मिटती है और शरीर से सेवा करने से अहंत्व मिटता है।

133. संसार से संबंध न रहने से जैसा सुख होता है वैसा सुख संसार के संबंध से नहीं होता। सुषुप्ति में शरीर और संसार से संबंध के न रहने से जितनी शान्ति व सुख मिलता है उतना सुख विषयों के भोग से नहीं मिलता। इसीलिए हम सब विषय-सुखों को छोड़कर प्रतिदिन सुषुप्ति में जाते हैं।

134. क्षणिक सुख भी भोगते रहें और अविनाशी सुख भी मिले, यह कदापि संभव नहीं है।

135. दुःख का भोग दुःख को बढ़ाता है। दुःख का प्रभाव सुख और दुःख इन दोनों से अतीत आनन्द के साम्राज्य में प्रवेश करा देता है।

136. सुख में उदारता और दुःख में त्याग अपनाने से सुख-दुःख से अतीत के आनन्दमय जीवन में प्रवेश हो जाता है, फिर सुख-दुःख से सदा के लिए मुक्ति मिल जाती है।

137. जितनी सम्पत्ति प्राप्त है उसी में संतुष्ट होने वाले व्यक्ति के लिए स्वर्ग यहीं है। कहा भी गया है- "विभवे यश्च संतुष्टस्तस्य स्वर्ग इहैव हि।"

138. समस्त दुःखों और उन दुःखों के हेतु दोषों का जनक सुख का प्रलोभन है। कहा भी है- पाप का बाप लोभ है।

-82/127, नीलगिरी पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

युवा-स्तम्भ

जो मेरा है वह सत्य नहीं है, पर जो सत्य है वही मेरा है

आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरिजी

एक सत्य है,
जिसका नाम है 'आभासिक सत्य'।
जो वास्तव में सत्य न होने के बावजूद
सत्य लगता है
उसका नाम है आभासिक सत्य।
रेगिस्तान में पानी नहीं होता इसके बावजूद
हिरण को पानी का दर्शन होता है,
यह है आभासिक सत्य।
एक दूसरा सत्य है जिसका नाम है
'व्यावहारिक सत्य'।
व्यवहार चलाने के लिए जो सत्य उपयोगी होता है
उसका नाम है- व्यावहारिक सत्य।
मेरा नाम यह व्यावहारिक सत्य है।
पिता-पुत्र का संबंध यह व्यावहारिक सत्य है।
घर का पता यह व्यावहारिक सत्य है।
एक तीसरा सत्य है जिसका नाम है,
'पारमार्थिक सत्य'।
आत्मा, आत्मा का स्वरूप, आत्मा के गुण,
यह है पारमार्थिक सत्य।
संक्षिप्त में,
जो वर्तमान में नहीं है
इसके बावजूद उसकी उपस्थिति महसूस होती है
वह है आभासिक सत्य।
और जो भूत-भविष्य-वर्तमान तीनों काल में है

वह है पारमार्थिक सत्य।
अब जवाब दो कि पारमार्थिक सत्य के लिए
कहीं लड़ाई संभव है भला?
नहीं।
लड़ाई के केन्द्र में या तो आभासिक सत्य हो सकता है
या फिर व्यावहारिक सत्य हो सकता है
और वह भी तब जबकि उस सत्य को
पारमार्थिक सत्य मान लिया जाए।
एक बात बताऊँ?
कौन सच्चा है इसके बदले क्या सच्चा है,
यह यदि तय कर लिया जाए तो
सत्य के नाम पर आज जो लड़ाई-झगड़े हो रहे हैं
उन तमाम लड़ाई-झगड़ों पर
पूर्ण विराम लग सकता है।
किसी पुस्तक में पढ़ी हुई इन पंक्तियों पर
हमें गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है-
''हमारे हिसाब से जो 'सच्चा' होता है उससे
हम इतने लबालब भरे हुए होते हैं कि
दूसरों के सत्य को समझने की हमारे मन में
थोड़ी सी जगह शेष नहीं रहती।
दूसरे हमें समझें इसके लिए हम सतत
उठा पटक करते रहते हैं,
हमारी सभी बातें एकपक्षीय हो जाती हैं,
पर दूसरों के अंदर क्या चल रहा है
उसका हमें पता ही नहीं चलता।''
एक काम करें।
''जहाँ मैं वहाँ सत्य'' ऐसा नहीं, पर
''जहाँ सत्य वहाँ मैं''
इस रवैये के मालिक बन जाएँ।

-'शिक्षा के दूध में संस्कार की शक्कर' पुस्तक से साभार

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः94)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

श्री धर्मचन्द जैन

(गमा का थोकड़ा)

जिज्ञासा- भव का स्थान चौदहवाँ किन जीवों से सम्बन्धित है?

समाधान- भव का स्थान चौदहवाँ संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीवों से सम्बन्धित है। इस भव स्थान को तीन भागों में विभाजित करके समझा जा सकता है- 1. सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, औदारिक के 8 घरों (5 स्थावर व तीन विकलेन्द्रिय) में आता है। 2. औदारिक के 10 जीव, तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घरों में आते हैं। 3. असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, औदारिक के 8 घरों में आता है।

जिज्ञासा- चौदहवें भवस्थान के प्रथम भेद को किस प्रकार से समझा जा सकता है?

समाधान- सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, औदारिक के 10 घरों में आता है। दस घरों से तात्पर्य पाँच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य के घरों से है। इन दस घरों की अपेक्षा कथन किया है, उसमें भी पहले आठ घरों की अपेक्षा समझ लेना चाहिए। आठ घरों से तात्पर्य पाँच स्थावर व तीन विकलेन्द्रिय के घरों से है। सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, इन आठ घरों में आते हैं तो जघन्य 2 भव, उत्कृष्ट 8 भव लगातार कर सकते हैं। 9 ही गमों से आ सकते हैं। अतः 1x8x9=72 गमे बनते हैं। अर्थात् एक सन्नी तिर्यंच उपर्युक्त 8 घरों में, 9 ही गमों से आते हैं अतः 72 गमे बन जाते हैं।

सन्नी तिर्यंच जब औदारिक के दो घरों में (तिर्यंच पंचेन्द्रिय व मनुष्य) आते हैं तब यदि तीसरे व नवें गमे से आते हैं तो सन्नी तिर्यंच नियमा युगलिक बनते हैं। तिर्यंच युगलिक तथा मनुष्य युगलिक दोनों प्रकार के युगलिक बन सकते हैं। तीसरे तथा नवे गमे को छोड़कर शेष 7 गमों से आते हैं तो जघन्य दो भव, उत्कृष्ट 8 भव लगातार कर सकते हैं। इस प्रकार से युगलिक बनने पर 1x2x2=4 गमों से जघन्य-उत्कृष्ट के बिना 2 भव ही करते हैं। शेष 7 गमों से 1x2x7=14 गमे होते हैं।

जिज्ञासा- चौदहवें भवस्थान के दूसरे भेद को किस प्रकार से समझा जाना चाहिए?

समाधान- औदारिक के 10 जीव, तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में आते हैं। दस जीवों से तात्पर्य- 5 स्थावर, 3 विकलेन्द्रिय, असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय और असन्नी मनुष्य से है।

उपर्युक्त दस जीवों में से सर्वप्रथम आठ जीव लेते हैं। अर्थात् 5 स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, ये 8 जीव, तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में आते हैं तो जघन्य 2 भव, उत्कृष्ट 8 भव कर सकते हैं। 9 ही गमों से आ सकते हैं अतः 8x1x9=72 गमे बनते हैं।

असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में आता है तो यह भी तीसरे, नवें गमे से युगलिक बनता है तब जघन्य-उत्कृष्ट 2 ही भव करता है। शेष 7 गमों से जघन्य 2 भव, उत्कृष्ट 8 भव लगातार कर सकता है।

असन्नी मनुष्य, तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में आता है तो वह जघन्य 2 भव, उत्कृष्ट 8 भव लगातार कर सकता है। इसमें विशेषता यह है कि चौथे, पाँचवें, छठे इन तीन गमों से ही आते हैं, शेष 6 गमों से नहीं आते।

जिज्ञासा- चौदहवें भवस्थान के तीसरे भेद को किस प्रकार समझना चाहिए?

समाधान- तीसरे भेद में असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, औदारिक के 8 घरों (पाँच स्थावर, 3 विकलेन्द्रिय) में आने का वर्णन किया गया है। असन्नी तिर्यंच, औदारिक के 8 घरों में आता है तो जघन्य 2 भव, उत्कृष्ट 8 भव लगातार कर सकता है, 9 ही गमों से आता है अतः 8x1x9=72 गमे बनते हैं।

जिज्ञासा- चौदहवें भवस्थान के तीनों भेदों को मिलाकर कितने गमे बनते हैं?

समाधान- चौदहवें भवस्थान के तीनों भेदों के गमों की जानकारी निम्न तालिका से जानी जा सकती है-

भवस्थान	जीव	घर	गमा	कुल गमा
प्रथम भेद	1	8	9	72
	1	2	2	04 (युगलिक)
	1	2	7	14
				90 गमे
द्वितीय भेद	8	1	9	72
	1	1	2	02 (युगलिक)
	1	1	7	07

	1	1	3	03
				84 गमे
तृतीय भेद	1	8	9	72
				72 गमे

इस प्रकार 90+84+72=246 गमे बनते हैं। इनमें से 06 गमे (जघन्य उत्कृष्ट 2 भव के) युगलिक के तथा 240 गमे जघन्य 2 भव उत्कृष्ट 8 भव के बनते हैं।

जिज्ञासा– सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की क्या-क्या प्रमुख विशेषताएँ हैं?

समाधान– सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. तिर्यंच पंचेन्द्रिय में यदि कोई असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीव है तो उसकी अवगाहना अन्तर्मुहूर्त में एक हजार योजन तक की हो सकती है। यदि सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीव है तो उसकी अवगाहना अन्तर्मुहूर्त में पृथक्त्व धनुष से अधिक नहीं हो सकती।
2. संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय तथा असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय इन दोनों की स्थिति एक करोड़ पूर्व वर्ष की होने पर भी इनकी अवगाहना उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवें भाग की भी रह सकती है।
3. संख्यात वर्ष की आयु वाले अनेक सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय ऐसे भी होते हैं जिनकी श्रावक व्रतों का पालन करते हुए भी उत्कृष्ट अवगाहना अंगुल का असंख्यातवाँ भाग ही रहती है।
4. संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यंचों में यह विशेषता है कि अन्तर्मुहूर्त की आयु वाले पर्याप्त होने के पश्चात् नारकी, देवता में उत्पन्न हो जाते हैं तथा नारकी-देवता में अपने-अपने योग्य उत्कृष्ट स्थिति को भी प्राप्त कर सकते हैं।
5. असंख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यंचों में खेचर की अवगाहना पृथक्त्व धनुष की, स्थलचर की अवगाहना पृथक्त्व धनुष से लेकर छह गाउ तक की होती है।
6. संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीवों में अवधिज्ञान, विभंगज्ञान, वैक्रिय लब्धि, छह लेश्या, छह संहनन, छह संस्थान, तीनों दृष्टियाँ मिलती हैं, जबकि असंख्यात वर्षायुष्क सन्नी तिर्यंचों में अवधि द्विक, वैक्रियलब्धि नहीं मिलती। इनमें प्रथम चार लेश्या, प्रथम संहनन, प्रथम संस्थान एवं सम्यक्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि पाई जाती हैं।

7. संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यंचों में गुणस्थान 1 से 5 तक तथा असंख्यात वर्ष की आयु वालों में पहला व चौथा ये दो गुणस्थान ही होते हैं।
8. संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यंच जघन्य दो भव, उत्कृष्ट 8 भव लगातार सन्नी तिर्यंच के कर सकते हैं। जबकि असंख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यंच जघन्य-उत्कृष्ट एक ही भव करते हैं, क्योंकि युगलिक मरकर पुनः युगलिक नहीं बन सकते।
9. क्षायिक समकित वाले जीव असंख्यात वर्ष की आयु वाले स्थलचर (युगलिक) जीवों में ही मिल सकते हैं, संख्यात वर्ष की आयु वाले तिर्यंचों में नहीं मिलते। खेचर युगलिक तो एकान्त मिथ्यादृष्टि ही होते हैं।
10. सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में भव स्वभाव से ही तीर्थंकर नाम-कर्म का बंध नहीं होता। तीर्थंकर नाम-कर्म बांध चुके जीव भी तिर्यंच गति में नहीं जाते, इसी कारण तिर्यंचों में तीर्थंकर नामकर्म की सत्ता भी नहीं होती।
11. तिर्यंच गति में यद्यपि 1 से 5 गुणस्थान होते हैं, तथापि भव स्वभाव से नीच गोत्र का ही उदय रहता है। श्रावक बन जाने पर भी उनमें उच्च गोत्र का उदय नहीं हो पाता। मनुष्य गति में यह विशेषता है कि श्रावक व साधु बन जाने पर उच्च गोत्र का ही उदय माना जाता है।
12. सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय 24 ही दण्डकों में जा सकते हैं तथा 24 ही दण्डकों से आ भी सकते हैं।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

सूचना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर के प्रबंधक पद पर पूर्व प्रधानाचार्य, प्रखरवक्ता, चिन्तक, लेखक एवं संघ समर्पित सुश्रावक श्री नेमीचन्द जी जैन (कर्णावट) भोपालगढ़ वालों (मोबाइल नं. 094130-62049) को नियुक्त किया गया है। इन्होंने 17 जून 2015 से कार्यभार ग्रहण कर लिया है। आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के अन्तर्गत संचालित होने वाली धार्मिक पाठशालाओं, शिविरों तथा धार्मिक परीक्षाओं को अधिक प्रभावी और गतिशील बनाने के लिए सभी संघ सदस्य अपने सुझावों तथा समस्याओं से श्री जैन को भी अवगत कराने का कष्ट करें। श्री जैन बोर्ड के काम से जहाँ-जहाँ भी पधारें, संघ के सदस्य इन्हें सहयोग प्रदान करने का कष्ट करें।

-सुरेश बी. चोरडिया, संयोजक

आचार्य श्री हीरा पर भावाभिव्यक्तियाँ

मेरे गुरुवर

श्री अक्षय जैन

(तर्ज- मुझे हक है.....।)

तुझे मैं हर पल ध्याऊँ, मेरे गुरुवर।
हर घड़ी जपता ही जाऊँ, मेरे गुरुवर।
हस्ती-हीरा-मान तीनों, रत्न संघ के रत्न हैं।
जीवों की रक्षा के लिए, करते गुरुवर यत्न हैं।
मेरे गुरुवर ज्ञान दे दे, माँगता तेरा भक्त है।
गुरु की महिमा जगत में, फैली हुई सर्वत्र है।
तेरे बिन कोई न हमारा, मेरे गुरुवर।
दे दे नैया को किनारा, मेरे गुरुवर।

पाँच समिति, तीन गुप्ति, मेरे गुरुवर धारते।
पालते ब्रह्मचर्य गुरुवर, दुःखी जनों को तारते।
शरण जो भी आता गुरु की, दर्श कर हर्षाता है।
कोई न खाली हाथ जाता, मृदु वचन वह पाता है।
सदा समभाव में रहते, मेरे गुरुवर।
क्षण भर भी प्रमाद न करते, मेरे गुरुवर।

गुरु हस्तीमल जी ने, सामायिक का संदेश दिया।
गुरु हीराचन्द्र ने, जन-जन को व्यसन से मुक्त किया।
मान गुरु तो शान्त, दान्त अरु सौम्यता की खान हैं।
रूपा, मोहिनी, छोटा के लाल, करता 'अक्षय' गान है।
चरणों में मैं तेरे आऊँ, मेरे गुरुवर।
तेरी महिमा को मैं गाऊँ, मेरे गुरुवर।

-आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.)

सबसे अच्छे हमको

श्रीमती सुरेखा नेमीचन्द नाहर

पूज्य गुरुवर के चरण में, हम वन्दन करते हैंऽऽऽ
सबसे अच्छे हमको, अपने गुरुवर लगते हैं ऽऽऽ-2।
चाँद तारों से नहीं, उनकी है तुलना।
वे स्वयं में हैं अनूप, उनकी क्या उपमा।
चलते-फिरते हमको तो, तीर्थंकर लगते हैं।।
सबसे अच्छे.....।।1।।
सारी चिन्ता उन पे छोड़ी, काम क्या अपना।
उनकी भक्ति करना, उनकी माला है जपना।
आँखों में हर पल मेरे, गुरुवर झलकते हैं।।
सबसे अच्छे.....।।2।।
दर्श बिन गुरुवर तेरे, जिया रहता है बेचैन।
याद में गुरुवर तेरे, मेरे नीर बहाते नैन।
हर घड़ी हर श्वांस में, मेरे गुरुवर रहते हैं।।
सबसे अच्छे.....।।3।।

-जयपुर (राज.)

हीरा गुरुवर जन-जन के

श्री हमीरमल सुराणा

(तर्ज:- क्या खूब लगती हो.....।)

गुरु जब फरमाते हैं, सुन्दर समझाते हैं,
वाणी में जादूभरा-2, सन्मार्ग दिखाते हैं।
'हीरा' गुरुवर जन-जन के, अन्तर को जगाते हैं।।
देदीप्यमान है चेहरा, अन्तरमन में ज्ञान छिपा है गहरा,
तप-ध्यान-मौन के साधक, है संतजनों में इनका ऊँचा आसन।
श्रद्धानत झुक जाते-2, कई रूप में पाते हैं। 'हीरा' गुरुवर....।।1।।
आरूढ़ है संयम पथ पर, निडर दृढ़तर ये जैसे मेरु पर्वत,
आगम के गहरे तल में, करते हैं रमण पावन ज्ञान के जल में।

करनी है, वैसी ही-2, जो हमको बताते हैं। 'हीरा' गुरुवर....।।2।।
भौतिक आँधी है छायी, पर मर्यादा आपकी टूट ना पायी,
जिनाज्ञा प्राण से प्यारी, पर विचले ना कष्ट पड़े जब भारी।
संघ शासन, अनुशासन-2, का पाठ पढ़ाते हैं। 'हीरा' गुरुवर....।।3।।
निर्माणकर्ता हैं गुरुवर, लगते हैं जैसे मुक्ति तरुवर,
हैं रत्नसंघ के दिनकर, योगी परम दिव्यज्ञान के श्रुतधर।
दिन पर दिन, जिनशासन-2, का मान बढ़ाते हैं। 'हीरा' गुरुवर....।।4।।

-सोनसिरी कुवे के पास, ताजियों की चौकी, बीकानेर-334005 (राज.)

भक्तों के भगवान

श्रीमती टीना गौतम मुथा

हे गुरुदेव! आप हैं शास्त्रज्ञ,
आप हैं जिन स्वरूप,
आप हैं सर्वज्ञ जैसे,
आप हैं शांति स्वरूप।

आपकी मधुरवाणी रस घोलती जीवन में,
आप हैं खिले गुलाब इस हरे-भरे उपवन में।

भँवरे की भाँति भक्त भी, आपके चहुँ ओर फिरते हैं
दर्श पा के तेरे, भव-भव से वो तिरते हैं।

ज्ञान ध्यान के आधार से, हर उलझन का करते समाधान
विवेक पूर्ण बातों से, सबका जीवन बना देते आसान।

जिस तरह हे गुरुदेव!
सूर्य के बिना, और बारिश बिना सावन होता अधूरा,
उसी तरह यह संघ, आपकी मोहक छवि बिना है अधूरा।

जिस तरह वर्षा के आगमन से पेड़-पौधों को राहत मिलती है,
उसी तरह आपके आगमन से, हे भगवन्! हम भक्तों को राहत मिलती है।

-कालानी एण्ड कम्पनी, 8, श्याम वाड़ी,
गुलाब भवन के पीछे, चौपासनी रोड़, जोधपुर-342001 (राज.)

नारी-स्तम्भ

महिलाओं की असुरक्षा : एक ज्वलन्त राष्ट्रीय मुद्दा

श्री एन. एम. रांका, सीनियर एडवोकेट

भारतीय संस्कृति में महिलाओं का अतीत अत्यन्त गौरवशाली रहा है। आरम्भ से ही परिवार व समाज में महिलाओं का सम्मान और आदर किया जाता रहा है। धर्मशास्त्रों में भी इस बात की पुष्टि की गई है कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" अर्थात् जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं। सभी धार्मिक-पारिवारिक कार्यों, उत्सवों और समारोहों में स्त्रियों की उपस्थिति प्राय: अपरिहार्य समझी जाती है। नारी को पुरुष की अर्द्धांगिनी माना गया है। नारी के बिना पुरुष अधूरा है। भगवान राम ने जब अश्वमेध यज्ञ किया तब सीता की अनुपस्थिति में उनकी स्वर्ण-मूर्ति स्थापित की गई थी।

महिला शक्ति का पुञ्ज है, धन लक्ष्मी है, ज्ञान की सरस्वती है, दुर्गा है, रंभा है, अम्बा है, रणचण्डी है, सृष्टि की रचयित्री है, जगत-जननी है। वह माँ, बहन व साथिन है, परिवार की पोषक है और अनादिकाल से उसका वर्चस्व रहा है। सीता-राम, राधा-कृष्ण, लक्ष्मी-नारायण आदि शब्दों से ज्ञात होता है कि समाज में नारी अग्रणी है। वह आधी आबादी है और उसके बिना पुरुष अधूरा ही नहीं अपितु गृहस्थ-जीवन का सुख नहीं भोग सकता, शांति से नहीं रह सकता और स्वस्थ जीवन नहीं बिता सकता। कुंवारे, विधुर और परित्यक्त लोग क्लेशमय जीवन यापन करते हैं। निराश्रित व निराशा महसूस करते हैं।

परिवर्तन- कालान्तर में परिस्थितियों में बदलाव आया। मुगल आदि अन्य संस्कृतियों के कुप्रभाव व ज्यों-ज्यों मनुष्यों में स्वार्थ की प्रवृत्ति बढ़ती गयी, त्यों-त्यों पुरुष का नारी के प्रति आदर भाव भी कम होता गया। वही नारी भोग-विलास अथवा भौतिक सुख-सुविधा की वस्तु मानी जाने लगी। नारी को नाना प्रकार की यातनाएँ दी जाने लगीं। उसका शोषण तथा समाज और परिवार में उसकी उपेक्षा की जाने लगी। उसे आदर के स्थान पर तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाने लगा। संरक्षण लुप्त होने लगा। लोग कठोर यातनाएँ देने लगे और मखौल उड़ाने लगे। क्रय-विक्रय की वस्तु मानने लगे।

स्वतंत्रता के पश्चात्- भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों : अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह व अनेकांतवाद का प्रयोग कर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अहिंसक आन्दोलन के माध्यम से तथा शहीदों ने ब्रिटिश साम्राज्य से हमें 15 अगस्त, 1947 को

मुक्ति दिलाई। भारतीय नारियों ने स्वतंत्रता संग्राम में महती भूमिका निभाई। स्वतंत्र भारत के नागरिकों ने संविधान में प्रावधान कर जाति, धर्म, रंग, लिंग, भाषा, आनुवांशिक व आर्थिक भेद-भाव के बिना एक समृद्ध गणतंत्र 26 जनवरी 1950 को दिया। संविधान में नारी की सुरक्षा, संरक्षा, समानता व सम्पत्ति के अधिकार देने के लिये अनेक अनुच्छेद समाहित किये। उन अनुच्छेदों को क्रियान्वित कर, समाज और परिवार में नारी की स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए संसद व विधायिका ने स्वतंत्रता के पश्चात् बहुत सारे कानून पारित किये। बाल विवाह निषेध, बहु विवाह समाप्ति, विधवा विवाह की छूट, बेमेल विवाह पर प्रतिबंध, अंतरजातीय विवाह की मान्यता, वयस्क मताधिकार, लिंग भेद, पारिवारिक सम्पत्ति में पुत्र के समान पुत्री को हिस्सा व अधिकार, शिक्षा व लालन-पालन में मतभेद-समाप्ति, दत्तक पुत्र लेने की छूट, भरण-पोषण की जिम्मेदारी, अधिक सक्षमता व संपत्ति पाने व अर्जित करने तथा विवाह-विच्छेद आदि के अधिकार प्रदान किये गए और स्वेच्छा से गौरवमय व गरिमामय जीवन जीने का सुअवसर प्रदान किया गया ताकि राष्ट्र के उत्थान में सबकी बराबर की भागीदार हो सके। यह पुरजोर प्रयत्न किया गया कि नारी अबला से सबला बने और शांतिमय जीवन यापन करे। पंचायती राज में एक तिहाई हिस्सेदारी आदि के प्रावधानों से जन-चेतना पैदा की गई। इन प्रावधानों का असर पिछले 60 वर्षों में दृष्टिगत है। चहुँ ओर आधी आबादी का बोलबाला नज़र आ रहा है।

महिलाओं का विशेष योगदान- घर-आंगन और उसे स्वर्ग बनाने की धुरी पत्नी है। पति-पत्नी के 'रिश्तों की रवानी' और 'करीबी की कहानी' का नाम है 'परिवार'। गृहस्थी दरअसल संबंधों की सरिता है, जो प्रेम, समर्पण, समाधान एवं सामंजस्य के तटों के बीच बहती है। पति-पत्नी में निस्वार्थ प्रेम का प्रवाह आवश्यक है। 'परिवार' अर्थात् सहज संबंधों का सतत प्रवाह और चिर शांति। आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन द्वारा 2011 में 26 सदस्य देशों और भारत में किये गए एक सर्वे से यह पता चलता है कि भारत की महिलाएँ पुरुषों के मुकाबले पांच घंटे ज्यादा श्रम करती हैं। पुरुष मात्र एक घंटा ही पूरे दिन में घरेलू कार्यों के लिए देते हैं, जबकि पत्नियों के 18 घंटे तक घरेलू कार्यों में लग जाते हैं। ऊपर से पत्नियों को प्रताड़ना पड़ती है कि वे अर्थ अर्जित करने में सहयोग व योगदान नहीं देती हैं। निम्न व मध्यम आय वर्ग की महिलाओं को भरपेट भोजन व आवश्यक सुविधाएं भी नसीब नहीं होती हैं, उनकी स्थिति घरेलू नौकर से भी बदतर होती है। उनके हिस्से में 'असहिष्णुता' आती है। उसे अपनी हर छोटी जरूरत के लिए अपने जीवनसाथी के समक्ष हाथ फैलाने पड़ते हैं। जो कि न केवल उनके 'स्वाभिमान' को ठेस पहुँचाता है, बल्कि उनके 'आत्मविश्वास' को भी तोड़ता है। कामकाजी महिलाओं को दोहरी भूमिका निभानी

पड़ रही है – 'अर्थ का अर्जन' एवं 'गृहस्थी का संचालन'। वैसी ही भूमिका पुरुष वर्ग को भी निभानी चाहिए। दोनों एक दूसरे के समकक्ष हैं, सहयोगी व साथी हैं। जीवनसाथी को भी सम्मानजनक स्थान मिलना चाहिए। उनकी हर आवश्यकताओं को पूरा करना जीवनसाथी का कर्तव्य है, वरना टूटेगा 'परिवार' एवं 'घर-संसार'।

नारी की आवश्यकता पुरुष इसलिए अनुभव करता है कि वह गृहस्थी, वंशवृद्धि और आमोद चाहता है। किन्तु, नारी नर की कामना इसलिए करती है कि उसके बिना नारी की मानवीय प्रतिष्ठा सिद्ध नहीं होती, समाज में उसे स्थायित्व और गौरव प्राप्त नहीं होता। नर एवं नारी दोनों मिलकर गृहस्थ जीवन को संचालित करते हैं। स्वाधीनता का अर्थ प्रायः आर्थिक स्वाधीनता लिया जाता है। जब तक नारियाँ अपनी जीविका कमाने के योग्य नहीं हो जातीं, वे पराधीन ही रहेंगी और स्वतंत्र होकर वे उस अद्भुत स्वाद को अवश्य खो देंगी, जो उन्हें पराधीनता में सुलभ है। एकल जीवन अति कष्टदायक एवं शापमय है। घर-आंगन में जब बच्चे किलकारियां मारते हैं तो जिंदगी गुलजार हो जाती है।

अनेकानेक विधि-विधान एवं प्रावधान के बावजूद अधिकतर पुरुषों की मानसिकता में बदलाव नहीं आया और आज भी महिला के साथ जन्म से ही भेदभाव किया जाता है। महिलाओं व बालिकाओं के विरुद्ध अत्याचार, कदाचार, बलात्कार, बलात्संग, दुष्कर्म व कुकृत्यों की निरंतर वृद्धि हो रही है। प्रतिदिन अनेक घटनाएं टी.वी. पर दिखाई और दैनिक पत्रों में प्रकाशित हैं। उन्हें स्वेच्छा से स्वतंत्र रूप से रहने व चलने की सुरक्षा नहीं है और हर कदम पर वे भयभीत रहती हैं, चाहे घर हो या बाजार या विद्यालय या कार्यालय। घर में भी अन्य रिश्तेदारों से खुल कर बात करने में वे शंकित रहती हैं।

सेक्स वासना–सेक्स वासना ने मदांध मनुष्य को मानव से दानव बना दिया है। आज भारत में भी 'लिव इन रिलेशनशिप' तथा 'लिव टूगेदर' की एक नई पाश्चात्य विचारधारा सम्पूर्ण समाज को संक्रमित कर रही है। इस प्रथा का अर्थ है कि बिना विवाह के ही अपने मन पसंद साथी के साथ पति-पत्नी के समान रहना। अर्थात् किसी पुरुष या स्त्री का अपनी स्वयं की सुविधानुसार एक छत के नीचे रहना, भले ही वे शादीशुदा हों या अविवाहित हों। इसमें सन्तानोत्पत्ति को कोई स्थान नहीं होता। यदि हो तो भी पुरुष वैधानिक रूप से उसका पिता नहीं कहलाता तथा माता भी उस बच्चे को हेय समझती है। जब ऐसा लगने लगे कि साथी से मनमुटाव है या उसमें रुचि नहीं है या उसकी शर्तों का उल्लंघन हो रहा है तो बिना किसी दबाव के वे दोनों पृथक् हो जाते हैं तथा नये साथी की रिलेशनशिप तलाश करते हैं। इसमें त्याग, समर्पण एवं संवेदनाओं की अवधारणा शून्य है। यह जीवन जानवर का है। सुसंस्कृत एवं संस्कारित भारतीय समाज के लिए यह प्रवृत्ति नासूर बन सकती है। समाज को इसके

प्रति जागरूक होना चाहिए। प्रयत्न होने चाहिए कि ऐसे व्यक्ति विवाह बंधन में बंध कर मर्यादित जीवन यापन करें, अन्यथा उनका बहिष्कार करना चाहिए।

यौनाचार से सारा वातावरण दूषित होता जा रहा है, छोटी उम्र (12 साल) में ही यौन आजादी देने हेतु प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रेन फ्रॉम सेक्सुअल ओफेंस विधयेक 2010 प्रस्तावित है। इसे मंजूरी मिली, तो भारत में उन्मुक्तता बढ़ेगी, जिससे समाज में विकृतियाँ बढ़ेंगी। भारतीय सामाजिक ताना-बाना, जिसकी दुनिया भर में मिसाल दी जाती है, उसे तोड़ने की निरन्तर अथक कोशिश हो रही है, इसे सामाजिक कार्यकर्त्ताओं व संगठनों को रोकना चाहिए। यह कथित आधुनिकता भारतीय संस्कृति को खतरे में डालेगी और रसातल में पहुँचाएगी।

पुरुष द्वारा पुरुष से व महिला द्वारा महिला से सहवास अप्राकृतिक, अनैतिक, अमानवीय, बर्बर, दानवीय एवं असभ्य कुकृत्य है। कतिपय पश्चिम देशों में यह प्रचलित है। भारत में कतिपय स्वच्छंदता के हिमायतियों ने ऐसे कुकृत्य को उचित मानते हुए धारा 377 की वैधता को चुनौती दी। दिल्ली उच्च न्यायालय ने मान्यता दी, परन्तु सर्वोच्च न्यायालय ने अपने निर्णय 11.12.2013 से धारा 377 को संवैधानिक मानकर उस कृत्य को दंडनीय अपराध घोषित किया। उसकी समीक्षा याचिका भी निरर्थक रही, परन्तु नाज फाउंडेशन व अन्य अभी भी संतुष्ट नहीं हैं और धारा को बदलवाने में संघर्षरत हैं। खेद है कि अभिनेता आमिर खान भी उनको सहयोग दे रहे हैं। धारा को बदलना घातक होगा। जनमानस को विरोध करना चाहिए।

दहेज प्रथा व वैवाहिक खर्च– दहेज समाज पर एक कलंक है। आज दहेज के कारण ही अनेक महिलाएँ अपने जीवन की आहुति दे रही हैं। वे अपने आपको परिवार पर एक बोझ एवं माता-पिता के लिए दुःख और पीड़ा का कारण मानती हैं। इस बढ़ती हुई प्रवृत्ति को रोकने के लिए ही सन् 1961 में दहेज प्रतिषेध अधिनियम पारित किया गया जिसमें दहेज लेने व देने अथवा उसकी मांग करने को दण्डनीय अपराध ठहराया गया है। 1984 में कुछ संशोधन के द्वारा इस कानून को और भी कठोर बना दिया गया है। दहेज का लेन-देन करने वाले व्यक्तियों के लिए पांच वर्ष तक की अवधि के कारावास एवं पन्द्रह हजार रुपये तक के अर्थदण्ड की व्यवस्था की गई है। दहेज की मांग करना न्यूनतम छह माह की अवधि के कारावास एवं अधिकतम दो वर्ष तक की अवधि के कारावास एवं दस हजार रुपये तक के अर्थदण्ड से दण्डनीय अपराध घोषित किया गया है। अब तो अधिनियम में व्यवस्था यहाँ तक कर दी गई है कि विवाह के समय वर-वधू को दिये जाने वाले उपहारों की सूची रखी जानी चाहिए। भारतीय दण्ड संहिता में धारा 304 'ख' नवीन जोड़ी गयी है। इसके अनुसार

विवाह के सात साल के भीतर किसी स्त्री की मृत्यु जल जाने से अथवा शारीरिक क्षति से अथवा सामान्य परिस्थितियों से भिन्न परिस्थितियों में हो जाती है और यह प्रदर्शित किया जाता है कि मृत्यु से ठीक पहले उसके पति अथवा पति के रिश्तेदारों द्वारा दहेज की मांग को लेकर परेशान किया गया था अथवा उसके साथ निर्दयतापूर्वक व्यवहार किया गया था तो उसे दहेज मृत्यु कहा जायेगा और उसकी मृत्यु का कारण पति अथवा पति के रिश्तेदारों को माना जायेगा। दहेज मृत्यु के लिये आजीवन कारावास तक की सजा का प्रावधान है।

कतिपय महिलाएँ इस विधि का दुरुपयोग भी करती पाई गई हैं। पत्नी छोटे घरेलू विवादों को लेकर दूसरों के साथ हिसाब बराबर करने के लिए अनेक व्यक्तियों के नाम भी ले लेती हैं और प्रभाव बनाना चाहती हैं। सुप्रीम कोर्ट ने अहं व्यवस्था देते हुए निचली अदालतों को सावधानी बरतने की सलाह दी है। निचली अदालतों को देखना चाहिए कि क्या प्राथमिकी में रिश्तेदारों की ओर से किसी अपराध का खुलासा होता है या सिर्फ समूचे परिवार को फंसाना लक्ष्य है। इन मामलों को शीघ्रातिशीघ्र निपटाना चाहिए। अधिक समय तक लम्बित नहीं रहे। अधिनियम में यद्यपि कठोर व्यवस्थाएँ की गई हैं, लेकिन मात्र विधि से इस समस्या का सामाधान हो पाना संभव प्रतीत नहीं होता है। इसके लिये जन साधारण में चेतना एवं मानसिक बदलाव लाया जाना अपेक्षित है। सामाजिक संस्थाओं को पहल कर इसका प्रतिरोध करना चाहिए। युवा वर्ग को हिम्मत जुटा कर प्रण लेना चाहिए कि दहेज न लेंगे और न लेने देंगे, असहयोग करेंगे।

विवाह खर्च निरन्तर बढ़ता जा रहा है। भोंडा प्रदर्शन वाही-वाही लूटने के लिए किया जाने लगा है। अधिकतर खर्च काली कमाई व भ्रष्टाचार से अर्जित रकम से किया जाता है। करोड़ों का खर्चा होता है। कुछ भी प्रतिबंध नहीं है, न तो सामाजिक और न ही कोई राजनीतिक, बल्कि सराहा जाता है और सहयोग दिया जाता है। राजनेता, उच्च अधिकारी उन विवाहों में शोभा बढ़ा कर उन्हें प्रोत्साहन देते हैं और टी.वी. में उन भव्य समारोहों को दिखाया जाता है। प्रतिष्ठा प्राप्त की जाती है। राजशाही पनप रही है। कतिपय पिता जो ऐसा खर्च वहन करने में असक्षम हैं उनकी लड़की अपनी मनपसंद के परिवार में जाने से चूक जाती है, और यदि जा भी पाती है तो उन्हें सास-ससुर, ननद व अन्य रिश्तेदारों से कष्ट सहना पड़ता है, ताने सुनने पड़ते हैं, जो कुकृत्य व अमानवीय है।

भरण पोषण– दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 125 के अन्तर्गत माता-पिता, पत्नी एवं अवयस्क बच्चे सभी भरण-पोषण के हकदार हैं। हिन्दू दत्तक एवं भरण-पोषण अधिनियम, 1956 की धारा 18 में भी पत्नी भरण-पोषण की अधिकारिणी है। संयुक्त हिन्दू परिवार की संपत्ति के विरुद्ध भी भरण-पोषण का दायित्व पति व परिवार पर है।

तलाकशुदा स्त्रियों की स्थिति अन्य स्त्रियों से भिन्न होती है। ऐसी स्त्रियाँ तलाक के साथ ही उपेक्षा का शिकार हो जाती हैं। लेकिन कानून में ऐसी स्त्रियों को भी संरक्षण प्रदान किया गया है। विवाह-विच्छेद हो जाने से उनके इस अधिकार पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है। उच्चतम न्यायालय ने यह और स्पष्ट कर दिया कि विवाह-विच्छेद की डिक्री पारित हो जाने पर भी तलाकशुदा स्त्रियाँ भरण-पोषण के प्रयोजनार्थ पत्नी समझी जायेंगी। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि तलाकशुदा स्त्रियाँ तब तक भरण-पोषण पाने की हकदार रहती हैं जब तक वे जारता का जीवन व्यतीत नहीं करती हैं और पुनर्विवाह नहीं कर लेती हैं। उच्चतम न्यायालय ने इस व्यवस्था को संवैधानिक ठहराते हुए कहा कि इसका मुख्य उद्देश्य समाज की कमजोर स्त्रियों के हितों को संरक्षण प्रदान करना है।

कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न- लैंगिक उत्पीड़न से मुक्त सुरक्षित वातावरण का अधिकार हर महिला को है। कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न से महिलाओं के संरक्षण के लिए अधिनियम पारित किया गया है। तदनुसार (i) शारीरिक संपर्क और फायदा उठाना, या; (ii) लैंगिक पक्षपात की मांग या अनुरोध करना, या; (iii) लैंगिक अर्थ वाली टिप्पणियाँ करना; (iv) या अश्लील साहित्य दिखाना; या (v) लैंगिक प्रकृति का कोई अन्य निंदनीय शारीरिक, शाब्दिक या गैर-शाब्दिक आचरण करना, लैंगिक उत्पीड़न की परिभाषा में आता है। कार्यस्थल, प्राइवेट सेक्टर, अस्पताल, परिचर्चा गृह, प्रशिक्षण स्थल, कोई निवास-गृह या कोई गृह, भ्रमण-स्थल आदि पर घरेलू कर्मकार या कर्मचारी पर लैंगिक उत्पीड़न वर्जित है। किसी भी कार्यस्थल के संबंध में, किसी भी आयु की ऐसी महिला, चाहे नियोजित हो या नहीं, जो प्रत्यर्थी द्वारा लैंगिक उत्पीड़न के किसी कार्य के अधीन रहने का कथन करती है वह 'व्यथित महिला' होगी। किसी प्रकार का वचन देना, विवाह के आश्वासन देकर लैंगिक संबंध बनाना, धमकी देना, कार्य में हस्तक्षेप करना, शत्रुतापूर्ण कार्य का वातावरण बनाना एवं अपमानजनक आचरण करना भी वर्जित व दण्डनीय है।

कोई व्यथित महिला, कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न की घटना की तारीख से तीन मास की अवधि के भीतर लिखित में परिवार आंतरिक समिति को या स्थानीय समिति को आवेदन कर सकेगी। समिति जांच कर भारतीय दंड संहिता की धारा 509 या अन्य सुसंगत उपबंधों के अधीन मामला रजिस्टर करने के लिए सात दिन की अवधि के भीतर पुलिस को परिवाद भेजेगी। आपस में सुलह का प्रावधान है, परन्तु धन-प्राप्ति का नहीं। मिथ्या या द्वेषपूर्ण परिवाद और मिथ्या साक्ष्य के लिए दंड का प्रावधान भी है। **(क्रमशः)**

-रांका हाउस, सोनी अस्पताल के सामने, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर (राज.)

काव्य

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी (12)

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

श्रद्धेय मुनिश्री द्वारा रचित यह पद्यानुवाद सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष एवं उत्कृष्ट कवि श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली द्वारा संशोधित-सम्पादित है।-**सम्पादक**

(तर्जः- गुण सौरभ से रहे महकता, ऐसा अपना घर हो)
वीर प्रभु की अन्तिम वाणी, सुनलो और सुनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।
उत्तराध्ययन में गुंजित होती, प्रभु शिक्षा अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।

(तेईसवाँ अध्ययन- केशी गौतमीय)

लोक में पूजित पार्श्व प्रभु थे, धर्म तीर्थ प्रवर्त्तक,
परम्परा में शिष्य केशी थे, महाकीर्ति के धारक,
पारगामी थे ज्ञान-चरित में, पार्श्व शिष्य गुण गा लो।।314।।
अवधि और श्रुतज्ञान से केशी, तत्त्वों के थे ज्ञाता,
श्रावस्ती नगरी में पहुँचे, शिष्य संघ सरसाता,
ठहर गये तिन्दुक उपवन में, धर्म की ज्योति जगालो।।315।।
उसी समय प्रभु वर्धमान थे, जब विश्रुत तीर्थंकर,
महायशस्वी शिष्य थे गौतम, अंग ज्ञान के दिनकर,
निर्मल ज्ञान चरित के धारी, गौतम शीश नमालो।।316।।
गौतम शिष्य से परिवृत हो, पहुँचे थे श्रावस्ती,
ठहरे वे निर्दोष जगह में, कोष्ठिक उपवन वसति,
केशी-गौतम परिचर्या से अपना ज्ञान बढ़ालो।।317।।
दोनों का ही शिष्य संघ था, बड़ा तपो गुणशाली,
षट्कायिक जीवों के रक्षक, संयत प्रतिभाशाली,
शिष्यों के मन चिन्तन जागा, उसका बोध करालो।।318।।
कैसा है ये धर्म पार्श्व का, महावीर का है कैसा?
भिन्न रही आचार व्यवस्था, क्यों होता है ऐसा?

शिष्यों के मन उपजा चिन्तन, जिज्ञासा प्रतिपालो।।319।।
पार्श्व प्रभु का उपदेशित है, चातुर्याम यह धर्म,
वर्धमान प्रतिपादित लेकिन, पंचमहाव्रत धर्म,
इन दोनों में संगति कैसी, इसका ज्ञान करालो।।320।।
अचेलक है आचार क्रिया, वर्धमान जिनवर की,
वर्ण-वेश सचेल व्यवस्था, पार्श्वनाथ जिनवर की,
साध्य एक जब दोनों का तो, इसका मर्म निकालो।।321।।
शिष्यों की शंकाओं को जब, दोनों ने ही जाना,
शंका समाधान के हेतु, उनने मिलना ठाना,
शिष्यों के संघ गौतम पहुँचे, तिन्दुक वन उजियालो।।322।।
बड़े प्रेम से आदर दे, केशी ने की अगवानी,
तिन्दुक वन में गौतम-केशी, सूर्य-चन्द्र से सुखदानी,
तेजस्वी शीतलता पाने, अपने मन को जगालो।।323।।
महाभाग! हे गौतम तुमसे, चाहूँ पृच्छा करना,
जैसी इच्छा पूछो भन्ते! गौतम का था कहना,
केशी ने जो प्रश्न किये थे, उनके उत्तर पालो।।324।।
पार्श्व प्रभु का प्रतिपादित है, चार महाव्रत धर्म,
लेकिन वर्धमान के भन्ते! पाँच महाव्रत धर्म,
मोक्ष साध्य है जब दोनों का, इसका संशय टालो।।325।।
गौतम ने अविलम्ब दिया तब, सूत्र एक विचक्षण,
प्रज्ञा से ही होता भन्ते! धर्म-तत्त्व समीक्षण,
सम्यक् अर्थ विनिश्चय हेतु, अन्तर्बोध जगालो।।326।।
पहले तीर्थंकर के साधु, ऋजु और जड़ होते,
अंतिम तीर्थंकर के साधु, वक्र और जड़ होते,
ऋजु-प्राज्ञ होते मध्यम के, इसकी समझ करालो।।327।।
मनोवृत्ति को देख साधु की, भेद किया है व्रत में,
इसलिए दो साधु कल्प है, तीर्थंकर अभिमत में,
विसंगति नहीं पूर्णज्ञान में, अपना मन समझालो।।328।।
बोध यथावत् मुनि के व्रत का, कठिन प्रथम में होता,

निर्मल उसका पालन दुष्कर, अंतिम तीर्थ में होता,
मध्य तीर्थ में दोनों सम्यक्, इसका ज्ञान करालो।।329।।
प्रज्ञा श्रेष्ठ तुम्हारी गौतम, दूर हुआ यह संशय,
और भी है कुछ संशय मेरे, सुनलो उनका परिचय,
महाप्राज्ञ! इनका भी अब तुम, समाधान कर डालो।।330।।
महावीर का धर्म अचेलक, पार्श्व का सान्तर-उत्तर,
मोक्ष साध्य है दोनों का ही, क्यों होता तब अन्तर,
वेष भिन्नता का क्या कारण, मेरा भरम निकालो।।331।।
सर्वज्ञों ने अपने ज्ञान से, काल भाव जब देखा,
धर्म का साधन मान्य किया, तब भिन्न वस्त्र का लेखा,
पात्रों के अनुरूप वस्त्र है, ना कोई खोट निकालो।।332।।
साधुरूप की प्रतीति हेतु, अलग वेश है मानें,
भाव रहे साधुत्व का हरदम, संयम धर्म निभाने,
यही प्रयोजन है वस्त्रों का, संशय सभी मिटालो।।333।।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र ही, मुक्ति का साधन हैं,
निश्चय से सर्वज्ञों का ये, अनुभूति पूर्ण वचन हैं,
मुख्य साधना वेश नहीं है, मन में इसे रमालो।।334।।
एक अकेले हो तुम गौतम, शत्रुदल है भारी,
उनको कैसे जीता तुमने, बात कहो अब सारी,
कषायजनित वृत्तियाँ ही शत्रु, उनको अभी हरालो।।335।।
पाँच इन्द्रियाँ चार कषाय, और मन को जीता मैंने,
जीत लिये जब दशविध शत्रु, जीत लिया सब मैंने,
एक आत्म को जीत के सबको, अपने वश में करालो।।336।।
कई जीव भव पाश में बंधकर, दुःख से सदा बिलखते,
बन्धन मुक्त बने तुम गौतम, कैसे विचरण करते,
समाधान इसका लेकर के, बंधन मुक्ति पा लो।।337।।

(क्रमशः)

संकलनकर्ता- नवरतन डागा, पूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, 'लक्ष्य' 76, नेहरुपार्क, बखतसागर स्कीम, जोधपुर-342003 (राज)

बाल-स्तम्भ

चरण स्पर्श के लाभ

श्री अभयकुमार जैन

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 अगस्त 2015 तक **जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन,** कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

भारतीय ग्रंथों में अभिवादन (प्रणाम) के महत्त्व के विषय में अनेक स्थानों पर वर्णन मिलता है। मनुस्मृति 2.229 में कहा गया है-

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्।।

अर्थात् जो व्यक्ति नित्य गुरुजनों, माता-पिता और वृद्ध पुरुषों का अभिवादन करता है और उनकी सेवा में लगा रहता है, उसके आयु, विद्या, यश और बल ये चारों बढ़ते हैं। तुलसीदासजी ने भी कहा है- "प्रातःकाल उठि के रघुनाथा, माता-पिता गुरु नवाहि माथा।" प्रातःकाल उठकर रघुनाथ रामचन्द्र अपने माता-पिता एवं गुरुजनों को सिर झुकाकर प्रणाम करते थे।

भगवान महावीर के ज्येष्ठ शिष्य गौतमस्वामी ने पूछा- "वंदणएणं भंते! जीवे किं जणयइ?" अर्थात्! भगवन् वन्दना से जीव को क्या प्राप्त होता है?

भगवान ने फरमाया- "वन्दणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ। उच्चागोयं कम्मं निबन्धइ।" वन्दना करने से नीच गोत्र का क्षय होता है और आत्मा उच्च गोत्र का उपार्जन करती है। 'उच्च गोत्र' से आशय विनय, प्रेम, सौहार्द, सत्यनिष्ठा जैसे गुणों में रुचि होना, अहंकार में कमी आना, मन में पवित्रता बढ़ना आदि से है तथा 'नीच गोत्र' से आशय झूठ, हिंसा, कलह, द्वेष जैसे दुर्गुणों के प्रति आकृष्ट होना, अहंकार बढ़ना, हीन भाव का आना, मन की मलिनता में वृद्धि आदि से है। उदाहरण के रूप में हरिकेशी मुनि के जीवन वृत्तान्त

को देख सकते हैं। वे चाण्डाल कुल में उत्पन्न हुए, अतः दोष युक्त वातावरण में परवरिश होने के कारण तथा पूर्व जन्म के जातीय अहंकार के संस्कारों के निमित्त से हीनता का भाव, दुर्गुणों में रुचि उनके जीवन की विशेषताएँ थीं। जाति-स्मरण ज्ञान से अपने नीच कुल में उत्पन्न होने का कारण जानकर वे इन दुर्गुणों को त्यागकर मुनि बन गए। उत्कृष्ट तप, त्याग और संयम के निर्मल आराधन से वे महान् बन गए एवं उनका गोत्र उच्च हो गया।

जैन धर्म में प्रतिपादित 9 तत्त्वों में एक है- पुण्य तत्त्व। पुण्य 9 प्रकार से किया जाता है। पुण्य तत्त्व का 9 वाँ भेद बताया है- नमस्कार पुण्य। नमन द्वारा अहंकार के घटने से मन पवित्र एवं पुनीत बनता है। चरण-वन्दन, चरण-स्पर्श, प्रणाम, नमन हमारी संस्कृति के संस्कार हैं। चरण-स्पर्श करने के लिए सम्माननीय व्यक्ति के समक्ष झुकते हैं, जो हमारे अन्दर विनम्रता के भाव को जगाता है और हम जब विनम्र होकर वरिष्ठजनों के चरण छूते हैं तो वैज्ञानिक सिद्धान्त के अनुसार यह एक टच थेरेपी है, जो ऊर्जा को गतिमान बनाती है।

अथर्ववेद में मानव जीवन की आचार-संहिता का एक खण्ड है, जिसमें व्यक्ति की प्रातःकालीन प्राथमिक क्रिया के रूप में नमन को प्राथमिकता दी गई है। ''गुरुदेवो भव, मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव आदि सूत्रों में सबको दण्डवत् प्रणाम एवं चरण-स्पर्श करने को कहा गया है। ऐसा करने से वरिष्ठजनों के आशीर्वाद के साथ-साथ ऊर्जा और देव-बल की प्राप्ति होती है। वैज्ञानिकों का मानना है कि मानव शरीर में हाथ एवं पैर अत्यधिक संवेदनशील अंग हैं। जब कोई अपनी दोनों हथेलियों से किसी विशिष्ट व्यक्ति का चरण स्पर्श करता है तो कॉस्मिक इलेक्ट्रोमेग्नेटिक तरंगों का एक चक्र उसके शरीर के अग्रभाग में घूमने लगता है, उससे शरीर के विकारों को नष्ट करने वाली ऊर्जा उत्पन्न होती है। चरण-स्पर्श करने वाले को नई स्फूर्ति के साथ नई प्रेरणा मिलती है और उसी शक्ति के कारण उसकी नकारात्मक प्रवृत्तियाँ खत्म हो जाती हैं। चरण-स्पर्श करने वाला धीरे-धीरे सात्त्विक प्रवृत्ति का हो जाता है। चरण-स्पर्श और दण्डवत् करने से एक तरह से व्यायाम की क्रिया भी हो जाती है। दण्डवत् प्रणाम करने से शरीर के 8 अंग धरती को स्पर्श करते हैं। चरण-स्पर्श और दण्डवत् करने से हमें विभिन्न आसनों की या मुद्राओं की स्थिति से गुज़रना पड़ता है। इन क्रियाओं का मन, शरीर एवं स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। विधिवत् चरण-स्पर्श एवं दण्डवत् प्रणाम करने से मानसिक मलिनता, तनाव एवं आलस्य से छुटकारा मिलता है। महाभारत-युद्ध में पाण्डवों ने विनम्रभाव से अपने शत्रु पक्ष में युद्ध कर रहे गुरुजनों, पितामह भीष्म आदि की चरण वन्दना करके अपने लिए विजयश्री का आशीर्वाद प्राप्त किया।

-तृप्ति, बंदा रोड़, भवानी मण्डी (राज.)

हमारी लाइफ एक नोट बुक है

मोहन कोठारी 'विनर'

हमारी लाइफ एक नोट बुक है
हर पल, हर क्षण
हम अपनी ज़िंदगी की इबादत
इस पर लिख रहे हैं
ज़िंदगी पर पूर्ण विराम लगने से पहले
अपनी नोट बुक को ठीक से चैक कर लेना
पुण्य और पाप का
इसमें क्या ब्यौरा है?
सद्कार्यों का इसमें उल्लेख है या
जीवन कोरा है
इस पर ध्यान धर लेना
जीवन की गाथा का
यह दस्तावेज ही हमारी सद्गति और
दुर्गति का फैसला करेगा।
यदि लगे कि जीवन की
इस भाग-दौड़ में
अशुभ कर्मों को ही बढ़ाया है
अपनी आत्मा की ओर
ध्यान नहीं लगाया है
तो समय रहते ज़िंदगी को
नया मोड़ दे देना
आत्म साधना की बातें
इसमें दर्ज कर लेना।
तुम्हारी यह डायरी ही
तुम्हें भले बुरे का
ज्ञान कराती रहेगी
सोई हुई आत्मा को

जगाती रहेगी
सम्बल बनेगी
आने वाली पीढ़ियों के लिये
लक्ष्य सदा रहे हमारा
हम सदा सार्थक ज़िंदगी को जीएं
प्रतिदिन का यह चिंतन
अपनी आत्मा को पावन कर देगा,
अखूट शांति, समाधि से
अपने जीवन को भर देगा

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छतीसगढ़)

प्रश्नः-

1. 'प्रणाम' के समानार्थक शब्द लिखिए। (आलेखानुसार)
2. अभिवादन से किसमें वृद्धि होती है?
3. क्या प्रणाम करना मन और शरीर को प्रभावित करता है? अपने विचार दस पंक्तियों में दीजिए।
4. 9 पुण्यों के नाम लिखिए।
5. आपकी लाइफ की नोट बुक में क्या दर्ज है? लिखें।

बाल-स्तम्भ [मई-2015] का परिणाम

जिनवाणी के मई-2015 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'पुस्तकें, बाल-मन और संघर्ष' के प्रश्नों के उत्तर 29 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	शशिकला चौपड़ा-जोधपुर (राज.)	24
द्वितीय पुरस्कार-300/-	रुचिबाला जैन-नीमच (मध्यप्रदेश)	23
तृतीय पुरस्कार- 200/-	कार्तिक जीरावला-जोधपुर (राज.)	22.5
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	समीक्षा जैन-हिण्डौनसिटी (राज.)	22
	पलक भाणावत-उदयपुर (राज.)	21
	भव्या भण्डारी-ब्यावर (राज.)	21
	मनीषा कोठारी-अजमेर(राज.)	21
	विशाल सिंघवी-जयपुर (राज.)	21

स्वास्थ्य-विज्ञान

प्रभावशाली चुम्बकीय चिकित्सा

डॉ. चंचलमल चोरडिया

चुम्बकीय चिकित्सा की विशेषता

चुम्बकीय चिकित्सा पद्धति सहज, सरल, सस्ती, बिना पीड़ा वाली, पूर्ण अहिंसक, दुष्प्रभावों से रहित पूर्णतया वैज्ञानिक एवं प्राकृतिक नियमों पर आधारित प्रभावशाली स्वावलम्बी चिकित्सा पद्धति है। इस पद्धति में किसी भी प्रकार के टांके, दवाई, मालिश अथवा गहरे दबाव की आवश्यकता नहीं होती। केवल रोग के अनुसार चुम्बकों को पगथली, हथेली और रोगग्रस्त स्थान पर आवश्यकता के अनुरूप स्पर्श करना होता है। पथ्य का उतना परहेज नहीं रखना पड़ता, जितना अन्य चिकित्सा पद्धतियों में आवश्यक होता है। रोग मुक्त होने के पश्चात् चुम्बकों का आलम्बन छोड़ने में कोई कठिनाई नहीं होती है। यह पद्धति प्राय: सभी रोगों के उपचार तथा बचाव में सक्षम है। उपचार के लिए न तो ज्यादा स्थान चाहिये और न बड़े-बड़े खर्चीले अस्पताल और रासायनिक प्रयोगशालायें। अन्य चिकित्सा पद्धतियों द्वारा उपचार कराने के साथ भी इसको अपनाया जा सकता है। रोगी स्वयं कहीं भी अपना उपचार कर सकता है। स्थायी चुम्बक की मात्र एक जोड़ी से स्वयं एवं अनेक व्यक्तियों के विविध रोगों का वर्षों तक उपचार किया जा सकता है। चुम्बक का प्रभाव कम होने पर उन चुम्बकों को बैटरी की भांति पुन: चार्ज भी किया जा सकता है।

चुम्बक में शरीर के विजातीय तत्त्वों को शरीर से अलग करने की, पीड़ा दूर करने की, अनावश्यक चर्बी कम करने की, मानसिक संतुलन बनाये रखने की एवं अन्त:स्रावी ग्रन्थियों एवं ऊर्जा चक्रों के स्रावों को संतुलित कर रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने की अपूर्व क्षमता होती है। रोग की प्रारम्भिक अवस्था में तो इस पद्धति से शीघ्र लाभ पहुँचता ही है, परन्तु अनेक असाध्य रोगों में, जहाँ अन्य चिकित्सा पद्धतियों में उपचार संभव नहीं होता, शीघ्र राहत दिलाती है। चुम्बक शरीर से पीड़ा दूर करने में बहुत प्रभावशाली होता है। घावों को शीघ्र भरता है। रक्त संचार ठीक करता है एवं हड्डियों को जोड़ने में मदद करता है। चुम्बकीय ऊर्जा स्वस्थ व्यक्ति को संक्रमण से बचाती है, वृद्धावस्था के परिवर्तनों की गति कम करती है। रूस में शल्य-चिकित्सा में चुम्बकों का प्रयोग काफी बढ़ गया। जापान, अमेरिका, रूस, फ्रांस, चीन, इटली, ऑस्ट्रेलिया, स्वीडन आदि देशों में विभिन्न असाध्य

रोगों के उपचार एवं शल्य चिकित्सा के विकल्प के रूप में चुम्बकीय चिकित्सा पर शोध के बाद जो चमत्कारिक निष्कर्ष सामने आए हैं, वे स्वास्थ्य के संबंध में हमारी पूर्वग्रसित भ्रान्त धारणाओं को झकझोरने वाले हैं एवं चिकित्सा क्षेत्र में उपचार के नाम पर राहत को ही प्रधानता देकर भविष्य में पड़ने वाले दुष्प्रभावों की उपेक्षा करने वाली चिकित्सा पद्धतियों को अपना पूर्वाग्रह छोड़ चिन्तन करने हेतु प्रेरित करने वाले हैं। चुम्बक से उपचार करने के लिए शरीर विज्ञान की विशेष जानकारी आवश्यक नहीं होती है। चुम्बक के सिद्धान्तों की सामान्य जानकारी रखने वाला कोई भी सजग व्यक्ति आत्मविश्वास के साथ स्वयं अपने आपको स्वस्थ रख सकता है एवं अपने सम्पर्क में आने वाले रोगियों को भी उपचार हेतु आवश्यक परामर्श दे सकता है।

संतुलन ही स्वास्थ्य का मूलाधार है

ब्रह्माण्ड में क्रियाशील सभी गतिशील ऊर्जाएँ चुम्बक में भी सूक्ष्म रूप से विद्यमान रहती है, क्योंकि चुम्बक भी शरीर की प्रत्येक कोशिका की भांति ब्रह्माण्ड का ही सूक्ष्म रूप होता है। चुम्बक के क्षेत्र का प्रभाव नियमित और लगातार होता है। बड़े चुम्बक हो या छोटे, उनसे लगातार आने वाली ऊर्जा के मार्ग में बाधा नहीं डाली जा सकती और न हम अपनी इच्छानुसार उसे रोक सकते हैं। जब तक कोई वस्तु चुम्बक के प्रभाव क्षेत्र में रहती है तब तक उस पर चुम्बक का प्रभाव पड़ता रहता है। शरीर की प्रत्येक कोशिकाएँ भी दिन-रात सूक्ष्म चुम्बक की भांति स्वयं के कम-ज्यादा चुम्बकीय क्षेत्र का निर्माण करती है। शरीर के विभिन्न अंग जो एक ही प्रकार की कोशिकाओं का समूह रूप होते हैं, अपनी-अपनी गतिविधियों, कार्य के अनुसार चुम्बकीय क्षेत्र का निर्माण कर शरीर के संचालन में अहं भूमिका निभाते हैं।

हमारा स्वास्थ्य शरीर के विभिन्न अंगों, उपांगों, तंत्रों के मध्य सही तालमेल एवं संतुलन पर निर्भर रहता है। किसी भी आन्तरिक अथवा बाह्य, प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष कारणों से जब यह तालमेल कम होने लगता है तो शरीर में अनावश्यक विजातीय तत्त्व (Toxins) बढ़ने लगते हैं एवं रोग के लक्षण प्रकट होने लगते हैं। रोगों की रोकथाम के लिये आवश्यक है कि शरीर में जमे अनावश्यक तत्त्वों को बाहर निकाला जाए एवं शरीर के सभी अंग उपांगों को संतुलित रख शारीरिक क्रियाओं को नियंत्रित रखा जाये। जो अधिक सक्रिय हैं, उन्हें शान्त किया जाए तथा जो असक्रिय हैं, उन्हें सक्रिय किया जाए। शारीरिक, मानसिक एवं भावात्मक असंतुलन ही सभी रोगों की जड़ होती है और संतुलन ही स्वास्थ्य का मूलाधार होता है। चुम्बक इन सभी कार्यों में प्रभावशाली होता है।

चुम्बकीय ऊर्जा की विशेषता

चुम्बक की विशेषता होती है कि वह किसी भी अवरोधक को पार कर अपना प्रभाव छोड़ने की क्षमता रखता है। फिर भी लोहे अथवा उससे बनी वस्तुओं के साथ चुम्बक का विशेष आकर्षण होता है। जहाँ-जहाँ लोहे के उपकरण होते हैं, चुम्बकीय ऊर्जा का अधिकांश प्रवाह प्राथमिकता के आधार पर पहले उनमें होता है। उनकी उपस्थिति में उस ऊर्जा का प्रवाह अन्य पदार्थो में प्राय: कम होता है। जैसे बेटरी रिचार्ज करने के पश्चात् पुन: उपयोगी बन जाती है, उसी प्रकार शारीरिक चुम्बकीय प्रभाव को चुम्बकों द्वारा संतुलित एवं नियन्त्रित किया जा सकता है। विद्युत् की भांति चुम्बक में भी प्रभावशाली ऊर्जा होती है। रोगों के उपचार एवं बचाव में विभिन्न प्रकार की चुम्बकीय ऊर्जा का उपयोग दिन-प्रतिदिन लोकप्रिय होता जा रहा है। चुम्बकीय ऊर्जा में शरीर के उन सभी रोगों को दूर करने की ताकत होती है, जो शारीरिक क्रियाओं से विशेष रूप से सम्बन्धित होते हैं। बिजली के प्रवाह हेतु विद्युत् चालक धातु (Conductor) की आवश्यकता होती है। अन्य अवरोधक वस्तुओं (Non-conductor) में बिजली का प्रवाह नहीं हो सकता। परन्तु अधिकांश ऐसे पदार्थ भी चुम्बकीय तरंगों का पूर्ण प्रतिरोध नहीं कर पाते। जबकि चुम्बकीय ऊर्जा कुछ अंशों में लकड़ी, कांच एवं अन्य बिजली की अवरोधक वस्तुओं में भी प्रवाहित हो सकती है।

पृथ्वी के चुम्बक का हमारे जीवन पर प्रभाव

वैज्ञानिकों की ऐसी मान्यता है कि सारे ब्रह्माण्ड का मूलाधार चुम्बकीय शक्ति है एवं उसके प्रभाव से ही सारे ग्रहों, उपग्रहों, नक्षत्रों को एक दूसरे से जुड़े रहने की शक्ति प्राप्त होती है। पृथ्वी हो या सूर्य, चन्द्रमा अथवा अन्य ग्रह एवं नक्षत्र, सभी चुम्बकीय ऊर्जा से प्रभावित होते हैं, जिनका हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। सारा ज्योतिष शास्त्र उनके प्रभावों पर ही आधारित होता है। पृथ्वी स्वयं एक शक्तिशाली चुम्बक है एवं प्राणिमात्र के शरीर में भी चुम्बकीय शक्ति होती है। जब तक पृथ्वी के चुम्बक का हमारी चुम्बकीय ऊर्जा पर संतुलन और नियंत्रण रहता है तब तक हम स्वस्थ रहते हैं। जितने-जितने हम प्रकृति के समीप खुले वातावरण में रहते हैं, हमारे स्वास्थ्य में निश्चित रूप से सुधार होता है। परन्तु आजकल हम चारों तरफ चुम्बकीय शक्ति को असंतुलित करने वाले वातावरण के बीच में रहते हैं। हम खाने-पीने में प्राय: स्टील के बर्तनों का उपयोग करते हैं। आवागमन के लिये साइकिल, स्कूटर, कार, बस, रेल, हवाई जहाज या स्टीमर आदि का उपयोग करते हैं। मकानों में आर.सी.सी. का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। अधिकांश मशीनें, उपकरण, फर्नीचर आदि जिन्हें हम प्रतिदिन काम में लेते हैं, लोहे की बनी होती हैं, जिससे पृथ्वी के चुम्बक का प्रभाव हमारे शरीर में घटता जा रहा है। हम कुएँ का पानी उपयोग में लेने के बजाय, जो

पानी कार्य में लेते हैं, वह लोहे की पाइप लाइनों में से होकर आता है। दूसरी तरफ आज पृथ्वी का अन्धाधुन्ध दोहन किया जा रहा है, जिससे उसकी चुम्बकीय ऊर्जा कम होती जा रही है एवं उसका प्रभाव घटता जा रहा है। शरीर में चुम्बकीय ऊर्जा का असंतुलन एवं कमी अनेक रोगों का मुख्य कारण होती है। यदि इस संतुलन को दूर कर अन्य माध्यम से पुनः चुम्बकीय ऊर्जा उपलब्ध करा दी जाए तो रोग दूर हो सकते हैं। चुम्बकीय चिकित्सा का यही सिद्धान्त है। इसी कारण खुले वातावरण में विचरण करने वाले, गाँवों में रहने वाले, कुएँ का पानी पीने वाले, पैदल नंगे पाँव चलने वाले, अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ रहते हैं। जितना-जितना पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र से संपर्क बढ़ता है, उतनी-उतनी शरीर की सारी क्रियायें संतुलित एवं नियन्त्रित होती हैं तथा उतने-उतने हम रोग मुक्त होते जाते हैं।

विभिन्न क्षेत्रों में चुम्बक के प्रयोग

चुम्बक अपने प्रभाव क्षेत्र की सीमाओं में एक चुम्बकीय ऊर्जा का क्षेत्र बना लेता है। विभिन्न बीजों, वनस्पतियों, फलों, सब्जियों, पशु-पक्षियों, वायरस एवं रोग के कीटाणुओं पर चुम्बकीय प्रभाव के जो निष्कर्ष वैज्ञानिक शोध से सामने आये हैं, वे अत्यधिक उत्साह वर्धक हैं।

आज विश्व भर में चुम्बकीय ऊर्जा का उपयोग सभी क्षेत्रों में बढ़ता जा रहा है। चुम्बकीय ऊर्जा से प्रभावित बीज अन्य बीजों की अपेक्षा जल्दी उगते हैं। वे पौधे अधिक विकसित होते हैं। फल जल्दी पकते हैं। सब्जियाँ जल्दी खराब नहीं होती। कृषि में चुम्बकीय ऊर्जा से प्रभावित बीजों के उपयोग एवं चुम्बकत्व से प्रभावित पानी का उपयोग करने से अन्य सभी परिस्थितियाँ समान होने के बावजूद उत्पादन लगभग 20 से 30 प्रतिशत बढ़ जाता है। निर्माण कार्यों में ऐसे पानी एवं पदार्थों के प्रयोग से निर्माण सामग्री सीमेन्ट, चूना जैसे पदार्थों की ताकत लगभग 15 से 20 प्रतिशत बढ़ जाती है। शल्य चिकित्सा के पश्चात् चुम्बकीय ऊर्जा के उपयोग से शरीर की हीलिंग क्षमता बढ़ जाती है। अतः बहुत से देशों में शल्य चिकित्सा के पश्चात् जो रूई, मल्हम, पट्टियाँ आदि लगाई जाती हैं, वे चुम्बकीय ऊर्जा से ऊर्जित होती हैं, घावों को चुम्बकीय पानी से साफ किया जाता है ताकि घाव जल्दी से भर सकें।

दुधारू पशुओं को चुम्बकीय ऊर्जा से ऊर्जित आहार खिलाने एवं पानी पिलाने से वे अधिक दूध देने लगते हैं। उसमें घी का अंश भी बढ़ने लगता है। वाहनों के रेडियटरों में चुम्बकीय पानी का उपयोग किया जाए तो उनमें नमक अथवा अन्य पदार्थों की परतें नहीं जमती। जिससे पेट्रोल/डीजल के खपत में बचत होने लगती है। बॉयलर में पानी को चुम्बकीय क्षेत्र के माध्यम से प्रवाहित करने पर पाइप में अनावश्यक पदार्थ जमा नहीं होते।

इस प्रकार चुम्बकीय ऊर्जा के प्रयोग से समय, श्रम एवं पैसों की बचत की जा सकती है।

चुम्बकीय उपचार का सिद्धान्त एवं विशेषताएँ

शरीर में कुछ अंशों में रक्त और माँसपेशियों में लोहतत्त्व भी होता है। रक्त में यह तत्त्व हिमोग्लोबिन एवं मांसपेशियों में मायोग्लोबिन के रूप में होता है। चुम्बक के प्रभाव से रक्त में हिमोग्लोबिन की गति तेज होती है, जिससे उसमें गर्मी आने लगती है जो रोग ग्रस्त भाग की सूजन दूर करने में सहायक होता है। तेज गति से रक्त का प्रवाह होने से रक्त नलियों में जमा हुआ अनावश्यक पदार्थ दूर होने लगता है और रक्त का प्रवाह नियमित होने लगता है, जिससे रक्तचाप एवं हृदय रोग की संभावना कम हो जाती है।

शरीर के रोगग्रस्त होने पर शरीर की कोशिकाओं का चुम्बकीय क्षेत्र प्रभावित होने लगता है। चुम्बक प्रत्येक कोशिका में उपस्थित चुम्बकीय तत्त्व को आकर्षित अथवा दूर करने लगता है। इस प्रक्रिया से रक्त प्रवाह सुधरता है। जिससे रक्त के माध्यम से रोग ग्रस्त भाग में ऑक्सीजन एवं पौष्टिक तत्त्व शीघ्र पहुँच कर उसे शीघ्र ठीक करते हैं। इस प्रकार चुम्बक बिना किसी दुष्प्रभाव के शरीर की प्राकृतिक रोग प्रतिकारात्मक क्षमता को बढ़ाकर सभी रोगों से मुक्ति दिलाता है।

चुम्बकीय सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक चुम्बक में प्राय: दो ध्रुव होते हैं,एक को उत्तरी ध्रुव व दूसरे को दक्षिणी ध्रुव कहते हैं। सारे आलेख में जहाँ उत्तरी अथवा दक्षिणी ध्रुव की चर्चा की गयी है, वहाँ उपचार हेतु कार्य में लिए जाने वाले चुम्बकों के ध्रुवों को ही समझना चाहिए, न कि भौगोलिक उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव। छड़ी वाले चुम्बक को धागे से बांध सीधा लटकाने पर जो किनारा पृथ्वी के भौगोलिक उत्तरी ध्रुव की तरफ आकर्षित होता है, चुम्बकीय चिकित्सा में वह दक्षिणी ध्रुव होता है। ठीक इसके विपरीत जो छोर भौगोलिक दक्षिण की ओर आकर्षित होता है चुम्बकीय चिकित्सा में वह उत्तरी ध्रुव होता है। उपचार करने से पूर्व इस सिद्धान्त के अनुसार चुम्बक का परीक्षण कर लेना चाहिए ताकि उपचार प्रभावशाली एवं शीघ्र हो सके। बाजार में उपलब्ध बहुत से चुम्बक निर्माता भ्रान्तिवश चुम्बकों को भौगोलिक ध्रुवों के अनुसार चिह्नित कर देते हैं। इसी कारण वर्तमान में बहुत से चुम्बक उत्पादनकर्ता चुम्बकीय ध्रुवों के गुणों के आधार पर दक्षिणी ध्रुव को Positive Pole और उत्तरी ध्रुव को Negative Pole मान चिह्नित करते हैं। दो चुम्बकों के विपरीत ध्रुवों में आकर्षण होता है तथा समान ध्रुव एक दूसरे को दूर फैंकते हैं। उत्तरी ध्रुव का प्रभाव रोग को बढ़ने से रोकना, रोगाणुओं एवं पीब को नियन्त्रित करना, कैंसर से ग्रसित कोशिकाओं को निष्प्रभावी बनाना, घावों को शीघ्र भरना, रक्तचाप कम करना, रक्तस्राव

रोकना, दर्द कम करना, गर्मी कम करना, अंग सिकोड़ना, सक्रियता को नियन्त्रित एवं संतुलित करना आदि होता है। दक्षिणी ध्रुव शरीर में गर्मी एवं विशेष ऊर्जा प्रदान करता है। शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढाता है। वैसे चुम्बक के दोनों ध्रुवों में कुछ समानताएँ भी होती हैं। इसी कारण दोनों ध्रुव लोहे के पदार्थों को समान रूप से आकर्षित करते हैं। दोनों के कुछ गुणों का अन्तर होते हुए भी वे पूर्ण रूप से विपरीत नहीं होते, अपितु पति-पत्नी की भांति एक दूसरे के पूरक होते हैं। चुम्बकीय ऊर्जा के माप की इकाई गौस अथवा ओस्टेड के नाम से जानी जाती है। जितना ज्यादा शक्तिशाली चुम्बक होता है, उतना ही अधिक चुम्बकीय धातुओं के प्रति उसका आकर्षण होता है। छोटे बच्चों पर कम शक्तिवाले चुम्बक को लगाना चाहिए। अन्य व्यक्तियों के चेहरे तथा हृदय जैसे कोमल भाग पर प्रारम्भ में प्रायः कम शक्तिवाले चुम्बक लगाने चाहिये। परन्तु असाध्य एवं भयंकर रोगों में ज्यादा शक्ति वाले चुम्बकों का प्रयोग अनुभवी चिकित्सकों के मार्ग निर्देशन में किया जा सकता है। चुम्बकीय उपचार के साथ-साथ गहरा एवं दीर्घ श्वास लेने अथवा उसके पूर्व प्राणायाम करने से उपचार की प्रभावशालिता बढ़ जाती है। धूप, अग्नि, गिरने या पीटने से चुम्बकीय ऊर्जा क्षीण हो जाती है। चुम्बक को इलेक्ट्रोनिक एवं अन्य ऐसे उपकरणों जिसमें लोह तत्त्व हो, जैसे- घड़ी, मोबाइल, टी.वी., कम्प्यूटर आदि से दूर रखना चाहिए, अन्यथा उनके खराब होने की संभावना रहती है। चुम्बक में सामान्यतः दो ध्रुव होते हैं, जो चुम्बकीय अवस्था में सदैव साथ रहते हैं। भले ही किसी भी चुम्बक के कितने ही टुकड़ें कर दिए जाएं। उसी प्रकार कुछ अंशों में मनुष्य का शरीर भी चुम्बक के सिद्धान्तों पर कार्य करता है। जिस प्रकार चुम्बक के दोनों ध्रुव साथ-साथ रहते हैं, उसी प्रकार उठने, बैठने, चलने-फिरने, दौड़ने-भागने, व्यायाम करते समय, शरीर के सारे अंग-उपांग, स्नायुतंत्र, मांसपेशिया एवं अस्थितंत्र स्वस्थ अवस्था में उसी स्थान पर साथ-साथ रहते हैं। **(क्रमशः)**

(नोटः- यह स्वास्थ्य-आलेख दो अंकों में पूर्ण होगा। अतः प्रश्न अगले अंक में दिए जायेंगे।)

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com, Website: www.chordiahealthzone.in

Nice Lines

Sh. Dinesh Jain C.A.

1. Language has a great impact. Those who speak rude can't sell honey and those who speak sweet can even sell chillies!
2. If people are trying to bring you down, it only means that you are above them.

-17/729, C.H.B., Jodhpur-342008 (Raj.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

जैन धर्म एवं साहित्य का संक्षिप्त इतिहास- प्रो. सागरमल जैन, ***प्रकाशक***- प्राच्य विद्यापीठ, दुपाड़ा रोड़, शाजापुर (मध्यप्रदेश), फोन : 07364-222218, ***पृष्ठ***-148, ***मूल्य***- 200 रुपये मात्र, सन् 2014-15

कनिष्ठिकाधिष्ठित जैन विद्वान् प्रो. सागरमल जैन ने प्रस्तुत पुस्तक की विषय वस्तु को 'अ' एवं 'ब' दो भागों में विभाजित किया है- 1. जैन धर्म का इतिहास और 2. जैन साहित्य का इतिहास। 'अ' भाग में धर्म का स्वरूप, समता धर्म और ममता अधर्म, मनुष्य का सामाजिक धर्म, जैन धर्म का संक्षिप्त इतिहास आदिकाल से लेकर आज तक, ब्राह्मण का नया अर्थ, यज्ञ का आध्यात्मिक अर्थ, निर्ग्रंथ संघ की धर्म प्रसार-यात्रा, आचार भेद, संघ भेद आदि विषय समाहित हैं तथा 'ब' भाग में जैन प्राकृत आगम साहित्य, आगमिक व्याख्या साहित्य, कथा साहित्य, नाटक, निमित्त शास्त्र एवं जैनों द्वारा रचित संस्कृत में दार्शनिक, व्याकरणिक, आगमिक, साहित्यिक रचनाओं का उल्लेख किया गया है।

जैन तत्त्व मीमांसा- प्रो. सागरमल जैन, ***प्रकाशक***- प्राच्य विद्यापीठ, पता उपर्युक्त, ***पृष्ठ***-144, ***मूल्य***- 200 रुपये मात्र, सन् 2014-15

इसमें सत् का स्वरूप, पंचास्तिकाय, षड्द्रव्य, नव तत्त्व विषयक विवेचन प्राप्त होता है। तत्त्व मीमांसा का ऐतिहासिक क्रम तथा द्रव्य, गुण और पर्याय का स्वरूप वर्णित है। अन्य दर्शनों की तुलना में जैन दर्शन में वर्णित आत्मवाद के वैशिष्ट्य का प्रतिपादन किया गया है। जीव और पुद्गल का सम्बन्ध कैसे बनता है और उसे कैसे अलग किया जा सकता है, इसकी चर्चा नवतत्त्वों के अन्तर्गत की गई है।

जैन ज्ञान मीमांसा- प्रो. सागरमल जैन, ***प्रकाशक***- प्राच्य विद्यापीठ, पता उपर्युक्त, ***पृष्ठ***-176, ***मूल्य***- 200 रुपये मात्र, सन् 2014-15

मतिज्ञान आदि पंचज्ञान की सारगर्भित चर्चा के बाद केवलज्ञान के अन्तर्गत सर्वज्ञता के सम्बन्ध में कुन्दकुन्द, हरिभद्र, पं. सुखलाल, डॉ. इन्द्रचन्द्र शास्त्री, पं. कन्हैयालाल लोढ़ा के विचारों को भी समाहित किया गया है। प्रमाण-मीमांसा के अन्तर्गत निम्न बिन्दुओं पर लेखन हुआ है- जैन न्याय की विकास यात्रा, प्रमाण-लक्षण, प्रत्यक्ष-प्रमाण, इन्द्रिय-स्वरूप, प्राप्यकारिता एवं अप्राप्यकारिता, स्मृति प्रमाण, प्रत्यभिज्ञा प्रमाण, तर्क प्रमाण, अनुमान प्रमाण, शब्द या आगम प्रमाण, ज्ञान का प्रामाण्य, नय और निक्षेप,

अनेकान्तवाद, स्याद्वाद, सप्तभंगी।

जैन आचार मीमांसा- प्रो. सागरमल जैन, ***प्रकाशक***- प्राच्य विद्यापीठ, पता उपर्युक्त, ***पृष्ठ***-280, ***मूल्य***- 300 रुपये मात्र, सन् 2014-15

जैन दर्शन में नैतिकता का स्वरूप, निश्चय या व्यवहार : नैतिक निर्णय का आधार, नैतिक निर्णय की सापेक्षता और निरपेक्षता, भारतीय और पाश्चात्त्य परम्परा में नैतिक मानदण्डों की तुलना, नैतिक-सन्देहवाद और जैन आचार दर्शन, नैतिक प्रतिमान के सिद्धान्त, बुद्धिवाद और जैनदर्शन, नैतिक-इन्द्रियवाद और जैनदर्शन, सहानुभूतिवाद और जैनदर्शन, जैन आचार दर्शन और नैतिक सुखवाद आदि विषयों पर विवेचन उपलब्ध है। जैन कर्मसिद्धान्त का विश्लेषण करते हुए प्रो. जैन ने अपनी समीक्षक दृष्टि से निम्नांकित बिन्दुओं पर अपने विचार प्रकट किए हैं- कर्मसिद्धान्त और कार्यकारण का नियम, कर्मसिद्धान्त की उपयोगिता, जैन कर्म सिद्धान्त और अन्य दर्शन, विकास-क्रम, कर्म की विभिन्न अवस्थाएँ, पुण्य और पाप की कसौटी, कर्म-अकर्म विचार, अष्ट कर्म आदि। इनके अतिरिक्त त्रिविध साधना मार्ग, श्रावकाचार, श्रमणाचार, जैनधर्म का सामान्य आचार, नैतिकता का आधार सामाजिक चेतना जैसे विषयों पर भी जैन जगत् के मूर्धन्य विद्वान् ने अपने मन्तव्यों को पाठकों के समक्ष रखा है।

उपर्युक्त चारों ग्रन्थ चार विभाग हैं तथा जैन धर्म एवं दर्शन के अंग हैं। प्रथम विभाग जैन धर्म से सम्बन्धित है तथा द्वितीय से चतुर्थ विभाग में जैनदर्शन तत्त्वमीमांसा, ज्ञान मीमांसा और आचार मीमांसा के अन्तर्गत निबद्ध हुआ है।

ये ग्रन्थ समग्रता से जैनधर्म एवं दर्शन को समझने में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। लेखक ने ऐतिहासिक दृष्टि से चिन्तन किया है। उन्होंने विकास क्रम के आधार पर प्रस्तुति करने के साथ यथावसर सामाजिक, नैतिक, तात्त्विक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से तथा अपने दीर्घकाल के अनुभवों व विचारों को योजित कर इन ग्रन्थों की महत्ता एवं श्रेष्ठता को असंदिग्ध बना दिया है।

जिनवाणी के सम्पादकीयों की पुस्तक प्रकाशित

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा जिनवाणी पत्रिका के विगत 20 वर्षों के सम्पादकीयों में से चयनित 35 सम्पादकीयों की एक पुस्तक **चिन्तन के आयाम** शीर्षक से प्रकाशित की गई है। पुस्तक का मूल्य 40 रुपये है। इसे कोई भी जिज्ञासु सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302004 के पते से मंगवा सकते हैं। सम्पर्क- 0141-2575997/2570753, ईमेल- sgpmandal@yahoo.in

शिविर रिपोर्ट

नूतनता से संवलित रहे इस बार भी ग्रीष्मकालीन शिविर

श्री जितेन्द्र कुमार डागा

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में ग्रीष्मकालीन शिविरों की निरन्तरता एवं नूतनता प्रशंसनीय है। युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा प्रेषित शिविर रिपोर्ट 21 मई से 7 जून 2015 तक आयोजित शिविरों का सजीव चित्रण प्रस्तुत करती है।-सम्पादक

नवीन पीढ़ी में धर्म व दर्शन के सिंचन का अद्भुत निमित्त है 'शिविर'। युगपुरुष आचार्य प्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की जन्म शताब्दी से प्रारंभ शिक्षा एवं विनय की राह को प्रशस्त करने वाले इन शिविरों को इस वर्ष आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के पद आरोहण की रजत जयन्ती का अद्भुत निमित्त मिला। शिविर में नवीनता देने का प्रयास सदैव रहता है। इस बार मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. की प्रेरणा रही कि प्रभु महावीर के जीवन वृत्तान्त एवं जीवन दर्शन को बहुत कम युवा जानते हैं, अतः उन्हें इसकी जानकारी होनी चाहिए। साथ ही उन्होंने कहा बालिकाएँ शीलवती हों, शिविर में ऐसे विषय पर चर्चा व अध्यापन होना चाहिए। इस तरह शिविर के अध्ययन की दिशा तय हो चुकी थी। बस इस तरह 2015 के शिविरों का आधार तैयार होने लगा। प्रभु के जीवन की आकर्षक एवं तथ्यपरक प्रस्तुति की तैयारियाँ प्रारम्भ हो गईं। 16 सतियों की गौरवगाथाएँ लिपिबद्ध होने लगीं। साथ में विजयकुँवर-विजयाकुँवरी, भृगुपुरोहित के जीवन पर आधारित भजनों की खोज प्रारम्भ हुई। श्रद्धेय तत्त्वचिंतक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. की कृपा से भृगुपुरोहित पर आचार्य भगवंत पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. द्वारा रचित लावणी की जानकारी मिली। आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की असीम कृपा बरसी एवं स्वयं आचार्य भगवन्त ने वह लावणी उपलब्ध कराई।

शिविर पाँच वर्षों के अनुभव के साथ अब सरस भाषा में गहरी तत्त्वचर्चा की भी अपेक्षा कर रहा था। अनुभवी श्रावक श्री वीरेन्द्र जी जामड़, श्री प्रदीप जी हीरावत, सुश्राविका श्रीमती सुमनजी कोठारी, श्री वैभव जी डागा आदि का सामग्री तैयार करने में सहकार मिला। शिविर पूर्व जोधपुर, जयपुर, पोरवाल क्षेत्र, पल्लीवाल क्षेत्र में शिविर के विभिन्न पहलुओं को समझाने हेतु अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के केन्द्रीय स्तर से प्रतिनिधि वहाँ गये एवं पूरी प्रक्रिया को रखा एवं उन्हें अनेक सकारात्मक सुझाव भी प्राप्त

हुए। शिविरों की तैयारी युद्ध स्तर पर चल रही थी तब ही श्री विपिन जी बलोटा की भावभरी कृति प्राप्त हुई, जिसमें अनुपम कृपा बरसाने वाले आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्त के प्रति श्रद्धा आभार व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा-

गाँव-गाँव में शिविर लग रहे, होय धर्म की वर्षा।
प्रमुदित भावी सिद्धों को लख, साधर्मी मन हर्षा।
नन्हें-नन्हें बालक पढ़कर, बनें धर्म के नेता।

इस कृति से सभी कार्यकर्त्ताओं, शिक्षकों, संयोजकों में एक नवीन उत्साह का संचार हुआ। गुणवत्ता, विविधता के साथ सामग्री संग्रहण में दिल्ली निवासी श्री अभयजी भंसाली का योगदान उल्लेखनीय रहा।

21 मई 2015 की प्रातः शुभ वेला होते ही नन्हें-नन्हें बालकों के कलरव से ग्रीष्म ऋतु में भी स्थानक हरे-भरे हो गये। नाशिक, अलीगढ़-रामपुरा आदि स्थानों में अन्य शिविर होने से कहीं शिविरों पर असर न आ जाये, ऐसी आशंका थी, पर गोटी, अमलनेर, बोदवड़, उखलाना जैसे क्षेत्रों के जुड़ जाने से पिछले वर्ष से पहले दिन ही संख्याबल से यह शिविर कार्यक्रम इक्कीस हो चुका था। अब शिविर की गुणवत्ता ही लक्ष्य था। इसी लक्ष्य को लेकर ग्राम-ग्राम हर वर्ष की भाँति हर शिविर क्षेत्र जाने की बात सुनिश्चित हुई और शुरू हुआ भावी कर्णधारों के दर्शनों का दौर।

ब्यावर- मारवाड़ क्षेत्र का अनूठा नगर है, जहाँ अतिथि सत्कार एवं धार्मिक संस्कारों के सिंचन की कला सभी को विरासत में मिली है। इस क्षेत्र में जब बरेली के स्थानक में पहुँचे तो जिनशासन की खिली बगिया देख सभी का मन हर्ष विभोर हो गया। करीब 150-160 शिविरार्थी उपस्थित थे। श्वेत परिधान में बैठे शिविरार्थी अनुशासित एवं जिज्ञासु थे। प्रवेशिका के तीन भाग किये गये। पहली बार शिविर में आये बच्चों को तिक्खुत्तो, इच्छाकारेणं बहुत शुद्ध याद था एवं लोगस्स की ओर चरण बढ़ चुके थे। ऐसे बच्चों की संख्या लगभग 50 थी। बड़े बच्चों को अर्थ सहित अध्ययन कराया जा रहा था। अध्ययन कराने वाली अनुभवी श्राविकाओं के साथ सी.ए. की तैयारी कर रही पाँच छह सखियाँ भी थीं जो कि बहुत पुरुषार्थ के साथ सभी की प्रेरणास्रोत बनी थीं। सुराणा परिवार की बालिका ने मात्र चार दिन के अध्ययन में समिति-गुप्ति के थोकड़े बहुत आत्मविश्वास के साथ सुनाए। भक्तामर, प्रतिक्रमण आदि का अध्ययन गतिशील था। अनुभवी श्री शांतिलालजी सुराणा, सिंघी सा के साथ संदीप जी सुराणा, मनीषजी मेहता सहित सम्पूर्ण युवक परिषद् शिविर संयोजन में सक्रिय था। **वैशाली नगर-अजमेर** में अध्यक्ष श्री जीतमलजी कोठारी, महामंत्री श्री रमेशचन्दजी सिंघी सम्पूर्ण कार्यकारिणी एवं नीलमजी, मंजूलताजी पीपाड़ा,

मंजूजी कोठारी आदि श्राविकाओं के साथ रिटायर्ड प्रिंसिपल अध्ययन करा रहे थे। जैन धर्म ही क्यों ? क्या श्रावक शास्त्र पढ़ सकता है, इस विषय की तैयारी विदुषी श्राविका खुद करा रही थी। रांका परिवार का एक 13-14 वर्षीय बालक बड़ी संलेखना पर पहुँच गया था। नन्हे-नन्हे शिविरार्थी इच्छाकारेणं याद कर चुके थे। लग रहा था कि इस शिविर में भी अनेक नए सामायिक सीखने वाले तैयार हो जायेंगे। संज्ञा का थोकड़ा सीख लिया गया था। **मदनगंज-किशनगढ़**-जाते ही श्री महेन्द्रजी जामड़ की याद उभर जाती है। उनसे शिविरों के बारे में बहुत सीखा। राजेन्द्र जी डांगी, महेन्द्र जी डांगी, मोनिकाजी डांगी, मनोज जी मेहता, संदीप जी जामड़ आदि एवं सभी शिक्षकों ने उनकी कमी को किशनगढ़ में पूरा करने का प्रयास किया। लगभग 100 शिविरार्थी थे। छोटे बच्चों के साथ बड़े शिविरार्थी भी मौजूद थे एवं लगन के साथ अध्ययन में जुटे थे। यहाँ की पिछली बार की पोस्टर प्रतियोगिता ने सम्पूर्ण क्षेत्र में ऐसी धूम मचायी थी कि अन्य श्रावक संघों में भी शिविर कराने की भावना जगी। हर संघ में अब बच्चों को, इन भावी कर्णधारों को तैयार करने की, आधारभूत श्रावक बनाने की उमंग जग रही है। बस हमारी शक्ति प्रतिस्पर्धा में न लग प्रभावना में लगे, यही अभीष्ट है। **किशनगढ़ शहर**-की श्राविकाएँ कार्य को सुचारु रूप से आगे बढ़ाने को प्रतिबद्ध थी। सीडी, वेबसाइट इत्यादि की बातों एवं प्रतियोगिता कराने के हर पहलू को उन्होंने ध्यान से समझा एवं युक्तियुक्त संवाद किया। **महावीर कॉलोनी, अजमेर**- में नई टीम ने कार्यभार को बड़े सुंदर ढंग से संभाला। आशातीत वातावरण था। आदरणीय श्री नेमीचंदजी कटारिया जिन्होंने पिछले पाँच वर्षों तक अद्वितीय सेवा दी, उनकी धर्म सहायिका पूर्ण सहयोग कर रही थी। चन्द्रप्रकाशजी कटारिया का पुरुषार्थ भी उल्लेखनीय था। उन्हें श्री विवेक जी मुणोत आदि का सहयोग निरन्तर मिल रहा था। 76 के करीब वहाँ नियमित संख्या थी। कई घरों के पलायन हो जाने के बाद भी विनोद जी मेहता ने **दूदू** में शिविर की शृंखला को यथावत् रखा। दूदू जयपुर का प्रवेश द्वार है। संत भगवंतों की अनुपम विहार सेवा यहाँ की विलक्षणता है। शिविर दौरान अनेक संत भगवंतों का यहाँ पदार्पण हुआ।

पोरवाल क्षेत्र श्रद्धा के विषय में अनूठा व अद्वितीय है। यहाँ सर्वप्रथम **शहर सवाईमाधोपुर** गए तो लगभग 180 की संख्या में शिविरार्थी थे। अध्ययन की कमान स्वयं मुकेशजी करेला वाले अंजनाजी आदि अनेक श्रद्धाशील संघ सदस्यों ने संभाल रखी थी। हर शिविरार्थी ने यहाँ प्रगति की थी। एक कक्षा में करीब-करीब हर शिविरार्थी प्रतिक्रमण पूरा करने के नजदीक आ चुका था। द्वितीय कक्षा के छात्रों ने शब्द अर्थ को बहुत अच्छी तरीके से नियोजित कर रखा था। समिति गुप्ति पर थोड़ा घुमाकर पूछने पर भी बालिकाएँ

आत्मविश्वास के साथ उत्तर दे रही थीं। जैन धर्म ही क्यों ? एवं 'ऐसा अपना घर हो' इस पर तैयारी की प्रस्तुति शिविरार्थियों ने दी। पोस्टर उत्साह से बनाये जा रहे थे। संघ अध्यक्ष श्री सुबाहुजी के साथ पारसजी जैन करेला वाले, कपिलजी, अनिलजी आदि एवं सभी शिक्षक सकाम निर्जरा हेतु अपना योगदान दे रहे थे। **आलनपुर** के छात्र मेधावी थे। सीखने की ललक थी। कहीं नन्हे बालकों का पुरुषार्थ बहुत अच्छा था। सामायिक कई बालक-बालिकाएँ अन्तर्मन से सीख रहे थे। इन्हें पढ़ाने वाले पूर्ण प्रयास कर रहे थे। श्रीमती मोहनीबाईजी हर संभव प्रयास कर रही थी। **आवासन मण्डल** में बड़ा मनोरम दृश्य था। अनुशासित धवल सेना के साथ बालिकाएँ भी शिविर पोशाक में ही थीं। बुद्धिप्रकाशजी, अध्यक्षजी, मोहनलालजी, लल्लूजी, रवीन्द्रजी जैन की दोनों सुपुत्रियों, दिव्याजी ने चमत्कारिक तरीके से योजना को क्रियान्विति दी। हर श्रेणी के शिविरार्थी की बड़ी मजबूत तैयारी थी। वे अर्थों की गहनता को समझ रहे थे। 'जैन धर्म ही क्यों ?' 'विजय सेठ विजयाकँवरी', 'श्रावक शास्त्र पढ़ सकता है' इत्यादि की सशक्त झलकी उन्होंने दिखाई। जहाँ एक ओर शिक्षण बोर्ड के पाठ्यक्रम से पूछे जाने वाले प्रश्नों को समुचित उत्तर मिल रहा था वही प्रतियोगिताओं के माध्यम से शिविरार्थियों का सर्वांगीण विकास इस क्षेत्र में स्पष्ट झलक रहा था। **मंडी रोड़** में धनसुरेशजी का पूरा परिवार, महेन्द्रजी आदि के भागीरथी प्रयासों से शिविरार्थियों में अद्भुत उत्साह था। मल्ली भगवती, भृगु पुरोहित की नाटिकाओं के कुछ अंश दिखाए गए। **बजरिया** के अधिकारियों की कार्यक्षमता ने शिविर में आध्यात्मिक सौन्दर्य की छटा को स्थानक के सौन्दर्य को द्विगुणित बना दिया था। अध्यक्ष श्री पदमचन्दजी जैन, महावीरप्रसादजी, पदमजी गोटेवाले, राजेशजी, कनिष्कजी परिवार सहित जिनवचनों पर पूर्ण समर्पण के साथ शिविर को चिरस्मरणीय बनाने में जुटे थे। यह एक ऐसा क्षेत्र था जहाँ पर बालकों की संख्या बालिकाओं से सवाई थी। 130 की संख्या लगभग थी। स्वाध्यायी शिक्षकों के कारण अध्ययन वैराग्यमय, आनन्दमय एवं आत्मस्थ था। **जैनपुरी** इस शिविर सरिता का अहम् पड़ाव है। यहाँ मीणा समुदाय के 80 बालक सामायिक की पाटियाँ याद कर रहे थे। यहाँ के शिविरार्थी संभ्रात परिवारों के युवाओं से अधिक आचार-विचार से परिपूर्ण जैनी हैं, और यह विश्वास है कि सदैव रहेंगे। धर्मचन्दजी जैन बूंदी वाले, रवीन्द्रजी, कँवरलालजी मीणा आदि का योगदान अद्वितीय है। **अलीगढ़-रामपुरा** ही एक ऐसा क्षेत्र था जहाँ संख्या आधी रह गयी। ग्राम में पिछले चातुर्मास में आई सौहार्द की कमी ने इस शिविर के संख्याबल को आधा कर दिया। यहाँ के शिक्षकों, श्रावकों के प्रयासों में कहीं कमी नहीं थी। घनश्यामजी जैन, पवनजी जैन इत्यादि ने अन्त तक सौहार्द हेतु पूर्ण प्रयास किये। करीब 90 की संख्या में हेट लगाये बालिकाएँ एवं सामायिक

परिधान में बालक बहुत आकर्षक लग रहे थे। गजेन्द्रजी के लघुभ्राता ने शिविरों के समाचार की अद्‌भुत प्रस्तुति दी। मल्ली जिन बाल ब्रह्मचारी पर भी नाटिका का सुंदर रूप दिखाई दिया। अनेक शिविरार्थियों ने प्रतिक्रमण की ओर डग बढ़ा लिये थे। थोकड़े भी चाहे गत-आगत हो या नवतत्त्व हो या लघुदण्डक हो सीखे जा रहे थे। जुझारू कार्यकर्त्ता कहीं कोई कसर नहीं छोड़ रहे थे। **उखलाना** का दृश्य बड़ा प्रभावक था। विशाल मीणा समुदाय के 150 बालक-बालिकाओं की संख्या प्रभु महावीर के इस शासन की अनेकांतता को एवं सर्वमान्यता को स्पष्ट परिलक्षित कर रही थी। बृजकिशोरजी मीणा, सुंदरलालजी मीणा आदि का प्रयास उल्लेखनीय था। कोई लोगस्स, कोई इच्छाकारेणं तो कोई णमोत्थुणं सुना रहा था। भजनों की कड़ियाँ, नवकार मंत्र है महामंत्र गूंज रहा था। विजयकँवर विजयाकुँवरी की नाटिका का अद्‌भुत मंचन इस क्षेत्र में हुआ। उनके उत्साह को देख वर्ष भर हेतु नियमित धार्मिक कक्षाओं का संयोजन किया गया। **चौथ का बरवाड़ा** में 46^0 डिग्री तापमान में भी शिविरार्थी टीनशेड के नीचे बैठे वातावरण को अपनी सहज अभिव्यक्ति से शीतल-पावन कर रहे थे। कई बालक ऐसे थे जिन्होंने नवकार मंत्र से णमोत्थुणं की यात्रा सात दिन में पूरी कर ली थी। सामायिक उन्हें कंठस्थ थी। पच्चीस बोलों को भी बहुत अच्छी तरह से यहाँ समझा गया था। नीरजजी, महेन्द्रजी जैसे युवा एवं भैरूलालजी जैन, अध्यक्ष लड्डूलालजी आदि अनुभवी श्रावकों एवं श्राविकाओं की अद्‌भुत मेहनत ने इसे विशिष्ट बना दिया था। पोस्टर बनाये जाने लगे थे। नन्हे बालकों एवं बड़े बालकों का अनुपात बराबर सा था। प्रस्तुति करने वालों की आवाज स्पष्ट एवं आत्मविश्वास से भरपूर थी। सांप्रदायिक सौहार्द के माहौल ने इस शिविर को विशिष्ट बना दिया था। **कुश्तला** क्षेत्र की बालिकाओं ने हैट पहन कर 'ऐसा अपना घर हो' पर सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया। बच्चों ने अध्ययन बहुत अच्छा किया। यह क्षेत्र भी ऐसा ही था जहाँ के शिक्षक विशिष्टता लिये हुये थे। एक सुयोग था **महासती श्री सोहनकँवरजी म.सा.** के सिंघाड़े का वहाँ विराजना। विमलावतीजी म.सा. आदि की प्रेरणा से नन्हें बालक-बालिका पूरी तैयारी कर रहे थे। सौभाग्यमलजी के परिवार एवं भैरूलालजी का योगदान उल्लेखनीय था। **सुमेरगंज मंडी** में क्षेत्रीय प्रधान श्री राकेशजी आदि सामायिक सूत्र, प्रतिक्रमण सूत्र सीखने पर अधिक महत्त्व देते हुए शिविर को आगे बढ़ा रहे थे एवं धार्मिक प्रतियोगिताओं में भी शिविरार्थियों का अच्छा रुझान था। **देई** के शिविरार्थी जिज्ञासु हैं तत्त्व को समझने की अभिलाषा के साथ अध्ययन करते हैं। तुंगियापुरी जैसी देई में वात्सल्य एवं आत्मीयता अनूठी है। बाबूलालजी, ताराचन्दजी, रामदयालजी के साथ सिद्धांतशाला के छात्र अपना पुरुषार्थ कर रहे थे। पूरे प्रवास में प्रमोदजी हीरावत एवं मेघराजजी शिविरार्थियों के मनोबल को बढ़ा रहे थे।

पल्लीवाल क्षेत्र के **हिण्डौनसिटी मंडी क्षेत्र** में जहाँ आचार्य भगवन्त का चातुर्मास होना है वहाँ छटा अलौकिक थी। उसकी मुख्य वजह प्राचार्य श्री अशोकचन्दजी जैन की अद्भुत शिविर संचालन क्षमता। पूरे स्थानक में शिविरार्थी ज्ञान गंगा से सरोबार थे। 230 की संख्या में कम से कम 70-80 ऐसे नये नन्हे-नन्हे बालक थे कि जो नवकार भी पहली बार सीखे थे एवं वे पूर्ण सामायिक सीख लेंगे, ऐसा लग रहा था। बच्चों के सामने जब उन्हें इंगित करते 'यह अजैनी है'; यह बात साथ में रहे एक व्यक्ति ने कही तो बच्चों के मुख पर थोड़ी-सी खिन्नता की रेखा दिखी, जो स्वाभाविक थी। वे महावीर की वाणी को अंतरंगता से समझ प्रार्थना के बाद मैं जैन हूँ, मुझे जैन होने पर गर्व है पूर्ण उत्साह से बोलते थे। हर कक्षा में योग्य शिक्षक जो M.A., B-Ed. से कम नहीं थे। कोई प्राचार्य कोई प्रधानाध्यापक था। पढ़ाने की जो कला इस क्षेत्र में दिखाई दी वह कहीं ओर दिखाई नहीं देती। ये उतारते हैं विषय को हृदय में। सबसे बड़ी बात माहौल में सौम्यता, एकता, आत्मीयता की खुशबू थी। बच्चों ने बेटी-बचाओ, बेटी पढ़ाओ विषय पर बहुत सुंदर पोस्टर बनाये थे। 'जल है तो कल है' पर जो रचनात्मक, सृजनात्मक चिंतन उन्होंने चित्रों में उकेरा था वह अभिभूत करने वाला था। शिविरार्थियों ने नाटिकाओं की प्रस्तुति दी। **महुआ** में भी ऐसा उत्तम माहौल था। जो-जो नवाचार, नई परिकल्पनाएँ शिविर को नवीनता हेतु दी जाती हैं उनका ऐसी जगहों पर कुशल क्रियान्वयन होता है, क्योंकि यहाँ भी बागडोर पूर्व प्राचार्य श्री अशोकचन्दजी जैन महुआ वाले के हाथ में थी। उनके M.Com., B-Ed. पुत्र नीरजजी प्रधानाध्यापक रसीदपुर से पधारे। M.Com., B-Ed. अध्यापक, सिद्धांतशाला के B-Ed., LLB छात्र ही बच्चों को संभाल रहे थे। सरकारी तंत्र के अनुभव को लिये जितने भी ये महानुभाव हैं वे प्रेषित फाइल को बहुत सूक्ष्मता के साथ अध्ययन करते हैं, शिविर फाइल का एक Constitution होता है जिसकी हर धारा को यहाँ कुशलता से प्रभावी किया जाता है। 'बच्चों ने जैन धर्म ही क्यों ?' की प्रभावी प्रस्तुति की तो साथ में वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री प्रदीपजी हीरावत के मुख से प्रशंसा के स्वर सहज ही फूट पड़े। यहाँ पर भी ब्राह्मण बालिकाओं ने मेधावी पुरस्कार जीते हैं। इन शिक्षकों की सबसे बड़ी बात यह है कि ये सभी शिष्यों को पुत्रवत् स्नेह-आत्मीयता देते हैं, कहीं जाति, पंथ का भेद नहीं होता। जो इनके पास आता है उसे ये ज्ञान-दान से सरोबार कर देते हैं। **गंगापुरसिटी** में पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के पूर्व प्रवास एवं दीक्षा के प्रसंग से युवकों में विशेष उत्साह था। संगठन पूर्व की अपेक्षा बहुत बेहतर था। राकेशजी पल्लीवाल के संयोजन में मनोजजी, अमितजी आदि अनेक युवक शिविरों में सेवा दे रहे थे। सप्त कुव्यसन त्याग की विशेष प्रेरणा दे संकल्प कराये जा रहे थे। अध्ययन, अनुशासन एवं कक्षा विभाजन श्रेष्ठ था। 110

की संख्या थी। **वर्धमान नगर हिण्डौनसिटी** में कृष्णमोहनजी का साथ, श्रेयांसजी, संतोषजी, धीरजजी जैसे युवा दे रहे थे। सभी पूर्ण पुरुषार्थ कर रहे थे, जीतोड़ मेहनत कर नन्हे-नन्हे बालक पूर्ण सामायिक सीखने पर आ गये थे। उपयोग, संज्ञा का थोकड़े, 67 बोल, 25 बोल में बड़े आत्मविश्वास के साथ वे उत्तर दे रहे थे। श्रद्धा से युक्त एक युवा श्रावक सभी बच्चों को तैयार कर रहे थे। अनुशासन अच्छा था। **मण्डावर** ग्राम में भी करीब-करीब ऐसी ही स्थिति। बच्चों तक पूरी जानकारी नहीं पहुँच पाई थी। पूर्व में शिविर- स्थल की स्वीकृति नहीं मिलने से थोड़ी जगह की समस्या भी थी। पर वहाँ के शिविरार्थी बहुत प्रज्ञाशील थे। उनके समक्ष आधे घण्टे पूरी बात को रखा, शिविर के पहलू एवं विषय-वस्तु की उपयोगिता रखी तो उन्होंने हामी भरी। राष्ट्रीय परामर्शदाता सुरेशजी कोठारी का मार्गदर्शन मिला। **हरसाना** ग्राम में 5 साल के बच्चे ने जैसे ही स्पष्ट णमोत्थुणं बोला तो मन मयूर खिल उठा। जिसे हम अपेक्षाकृत अध्यापन में कमजोर स्थल समझ रहे थे वहाँ शिवदयालजी एवं शिक्षिकाओं की वजह से बहुत ही अच्छा परिणाम देखने को मिला। वीर पिता के इस प्रयास ने सभी का मन मोह लिया। **खोह** की गहन कन्दराओं में धधकते पत्थरों के नीचे, बहते पसीने की धारा के साथ महा मुनिराज तत्त्वचिंतक प्रमोदमुनिजी म.सा., ध्यान की साधना कर रहे थे। उनके अतिशय से खोह में शिविरार्थियों का अध्ययन बहुत नियोजित था। योगेशमुनिजी म.सा. की परम कृपा से नन्हे बालकों ने विशेष तैयारी की थी। 'उषा से संन्ध्या तक उनका जीवन कीर्ति यशधारी' भजन एवं मल्ली जिन बालब्रह्मचारी पर आचार्य भगवन्त की अनुपम नाटिका बड़े भाव विभोर एवं स्पष्ट शब्दों में शिविरार्थियों ने रखी। **खेरली** की छटा निराली थी। श्री अमरचन्दजी के संयोजन एवं वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री धर्मचन्दजी जैन के विशेष प्रयासों से शिविर उत्कर्ष पर था। यहाँ की नई पीढ़ी बहुत प्रतिभाशाली है। सामायिक के पाठों की शब्द, अर्थ की शृंखला युक्त प्रस्तुति जो यहाँ के शिविरार्थी देते हैं वह विरल व सभी के लिए प्रेरणास्पद है। यहाँ की शिक्षिकाएँ, बच्चों को कुशल कुम्भकार की भाँति घड़ती हैं। बच्चों ने 'जैन धर्म ही क्यों?' 'मल्ली भगवती' पर बहुत सुंदर प्रस्तुति दी। रात 8.00 बजे चुके थे। किसी ने मोहनीय के 28 भेद सुनाये किसी ने प्रतिक्रमण का पाठ तो छोटे बच्चों ने सामायिक इत्यादि। यह उमंग ही खेरली की छटा को निराला बना रही थी। **नदबई** में नरेशजी जैन का प्रयास सराहनीय है। उनकी शिक्षण कला से वहाँ के शिविरार्थियों की अध्ययन के प्रति जागरूकता विशेष रहती है। सिद्धांतशाला के दो छात्रों ने भी शिक्षण कार्य में अच्छा सहयोग दिया। **भरतपुर** में स्वयं आचार्य भगवन्त विराज रहे थे। कार्य का अतिभार होने से एक बार तो वहाँ के शिविर स्थगित हो रहे थे, पर यह भगवंत का ही अतिशय रहा कि बच्चों के अध्ययन में कोई

अंतराय नहीं आई। दोनों स्थानों मौहल्ला गोपालगढ़ एवं वासनगेट में शिविर यथावत् चले। श्रद्धेय महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के तपश्तेज एवं प्रभावी प्रेरणा से ही जहाँ हजारों एकाशन रजत वर्षारम्भ में हुए और श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. जहाँ आचार्य भगवन्त की कृपा छाया में विराज रहे हों वहाँ सभी कार्य सहज होने ही थे। **अलवर** में योगेशजी पालावत पूरा प्रयास कर रहे थे। शिविरार्थियों की संख्या यथावत् थी। आगरा की श्राविकाओं के विशेष प्रयास से शिविर उपलब्धियों वाला रहा।

धर्म क्षेत्र में मारवाड़ का स्थान सर्वोपरि गिना जाता है। इस मारवाड़ क्षेत्र के शहर नगीना नागौर में शिविर स्थल पहुँचे तो वहाँ की विराजित अनुशासित शिविर परिषदा ने सभी का हृदय जीत लिया। 3.00 बजे की भरी दोपहरी में भी बालक-बालिकाएँ पूर्ण उत्साह से शिविर में भाग ले रहे थे। सुबह शिविर और दिन भर नाटिका, पोस्टर्स, पार्लियामेण्ट की तैयारी से यह स्थल स्थानक बन गया था। शिविर के हर सदस्य ने उल्लेखनीय प्रगति की थी। सामायिक-प्रतिक्रमण, थोकड़े सभी में अधिकार से उत्तर दिये जा रहे थे। कांकरिया परिवार एवं सुराणा परिवार की युवतियाँ अनुभवी श्राविकाओं के साथ पूर्ण प्रयास कर रही थीं। पुण्यधरा **पीपाड़सिटी** की धरती रत्नों की खान है। अनेक युवारत्नों ने तलस्पर्शी अध्ययन किया। नमनजी मेहता के सान्निध्य में पढ़ रहे बालकों से जब गत-आगत के विषय में प्रश्न करने की इजाजत चाही तो वे तैयार थे हर प्रश्न का उत्तर देने, हर जिज्ञासा का समाधान करने हेतु। पात्र देखते हुए प्रश्नों की झड़ी लगाई तो सटीक उत्तर दिये। यहाँ पर संघ हेतु आधारभूत श्रावक तैयार हो रहे थे। सबसे बड़ी बात यह थी कि संयोजक किसी एक कक्षा को लेते हुए भी हर शिविरार्थी का पूरा फालोअप रख रहे थे। उन्हें हर शिविरार्थी के बारे में व्यक्तिशः मालूम था कि कौन क्या याद कर रहा है एवं किसकी कितनी आगे बढ़ने की क्षमता है। शिविरार्थियों की रचनात्मक सोच पोस्टर्स के माध्यम से अभिव्यक्त हो रही थी। **गोटन** में स्वयं विमलेशप्रभाजी महाराज विराज रहे थे। यहाँ का क्षेत्र बहुत पुण्यशाली है। पिछले 6 वर्षों में 5 बार संत-सती वहाँ विराजे हुए मिले। श्री हंसराजजी चौपड़ा परिवार एवं ओस्तवाल परिवार की श्राविकाएँ विशेष प्रयास कर रही थीं। भक्ति नगरी **मेड़तासिटी** में श्रद्धा से सिक्त शिविरार्थियों ने 'जल है तो कल है', 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ', छः आरों पर सुंदर पोस्टर प्रस्तुतियाँ तैयार कर रखी थीं। ऐसा वात्सल्य मय अनुशासन वहाँ की श्रीमाल परिवार की युवती एवं कोयम्बटूर से पधारी श्राविकाजी का था। अध्ययन सुदृढ़ था एवं कई छोटे-छोटे शिविरार्थियों को करीब-करीब पूरा प्रतिक्रमण याद हो गया था। नाटिका में भाग ले रहे शिविरार्थियों की आवाज बुलंद थी। एक तथ्य जो पूरे मारवाड़ क्षेत्र एवं पोरवाल क्षेत्र में इस बार देखने को मिला वह यह है कि शब्द अर्थ की जो शृंखलाबद्ध

प्रस्तुति खेरली इत्यादि क्षेत्रों में दिखाई देती थी वह अब हर क्षेत्र में थी। जिन बच्चों को रटाना था वहाँ कंठस्थ कराया जा रहा था और जो कंठस्थ कर चुके थे उन्हें अर्थ विशुद्धता के साथ समझाया जा रहा था और उनकी ओजस्विता को और निखारा जा रहा था। **पाली** का 300 शिविरार्थियों का संख्या बल साथ में गुणवत्ता सदैव प्रेरणादायी रही है। इस बार 80% बच्चे एकदम नये थे। अत: वहाँ के युवक परिषद् को विशेष श्रम करना पड़ रहा था। श्रीमती डोसीजी, अनुपमाजी गोलेछा, उगमराजजी आदि शिक्षकों के परिस्थितिवश वहाँ नहीं आने से उनका कार्य सरल नहीं रहा था, पर फिर भी संयोजक द्वारा पूरा प्रयास किया जा रहा था। हर स्थान से आ रहे समाचारों ने उन्हें और प्रोत्साहित कर दिया था और वे लक्ष्य की ओर सजगता से कदम बढ़ा रहे थे। मारवाड़ की इस यात्रा में महेन्द्र जी सुराणा, लोकेशजी कुम्भट, राजेन्द्रजी जैन सभी का उत्साहवर्द्धन कर रहे थे। संघ की राजधानी जोधपुर रमणीय, मनोरम, गुरुकुल जैसा महावीर पब्लिक स्कूल जहाँ पेड़ों से सुसज्जित कक्षाओं में अध्ययन कराया जा रहा था। नवरतन जी डागा, कमलेश जी मेहता के कुशल संयोजन ने शिविर में चार-चाँद लगा दिये थे। स्वयं संघाध्यक्ष ज्ञानेन्द्र जी बाफना, मूलचन्दजी जी बाफना, नरपत जी चौपड़ा, नवरतन जी गिड़िया जैसे वरिष्ठ श्रावक इस शिविर में अपने अनुभव से धारणाओं की गंगा बहा रहे थे एवं उत्तम संस्कारों का सृजन कर रहे थे। उत्तरोत्तर विशेषता लिए यहाँ के प्रज्ञाशील श्रावक-श्राविकाओं के शिक्षण से शिविरार्थियों ने अपूर्व ज्ञानार्जन किया था। हिण्डौनसिटी आदि क्षेत्रों की भाँति यहाँ के शिविरार्थियों ने भगवान महावीर पर क्रमबद्ध जीवनी को कंठस्थ कर भावपूर्ण प्रस्तुति दी थी। **जयपुर** क्षेत्र में भी ऐसी ही प्रखरता वहाँ के शिविरार्थियों ने दिखाई। सबसे विलक्षण बात जो गुलाबी नगरी जयपुर की है, वह है यहाँ की युवक परिषद् में आपसी सौहार्द, आत्मीयता एवं प्रेम। करीब 100 से अधिक युवाओं ने 10 क्षेत्रों में प्रशांतजी कर्णावट और मनीषजी मुणोत के नेतृत्व में संचालन की पूरी कमान संभाल रखी थी। **चेन्नई** में श्री अभयजी सुराणा, संदीपजी ओस्तवाल, मनोजजी सेठिया, प्रमुख भूरमलजी कर्णावट सहित सम्पूर्ण युवक परिषद्, श्रावक संघ के संयुक्त प्रयासों से स्वाध्याय भवन के शिविर में संतोषजनक धर्म-ध्यान हुआ। नाटिकाओं एवं पार्लियामेंट का अद्‌भुत मंचन हुआ। लगभग 150 शिविरार्थियों की उपस्थिति के साथ।

जलगाँव (महाराष्ट्र) क्षेत्र में जाने के पूर्व ही यहाँ के शिविरों की सौरभ सर्वत्र फैल चुकी थी। जलगाँव के विभिन्न क्षेत्रों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की बदौलत यहाँ के रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति किसी रंगमंच से कम नहीं थी। मल्ली भगवती, विजयकँवर-विजयाकँवरी, ऐसा अपना घर, भृगुपुरोहित की नाटिकाओं के निर्देशन ने इन पात्रों को सजीव कर दिया था।

राजा हरिश्चन्द्र की नाटिका देख जैसे महात्मागाँधी की आधारशिला तैयार हुई वैसे ही इन नन्हे-नन्हे बालकों की सुदृढ़ नींव रखी जा रही थी। पार्लियामेंट के संवाद जब स्वाध्याय भवन में छोटी सी बालिका के मुख से सुने तो ऐसा लग रहा था कि तत्त्वों पर आत्मविश्वास के साथ जिनशासन की बात को रखने वाले एम्बेसेडर राजदूत तैयार हो चुके हैं। यहाँ पर मेघकुमार, गोशालक आदि के पात्रों को नन्हे-नन्हे बालकों द्वारा बड़े प्रभावी ढ़ंग से प्रस्तुत किया जा रहा था। प्रभु महावीर के जीवन के हर पहलू को ये नन्हे बालक क्रमबद्ध रख रहे थे। हस्ती हीरा भवन में अध्ययन सुचारु था। संगम के परीषह, चण्डकौशिक की कथाएँ सुनाई गईं। छोटे-छोटे बालक सुना रहे थे और बुजुर्गों के हर्ष का कोई पारावर नहीं था। खुशी से सजल उनकी आँखें आशीष दे रही थीं। ऐसा नहीं था कि यह दृश्य मात्र जलगाँव का ही था। सम्पूर्ण भारत में शिविरों के इस पड़ाव पर यह स्थिति उभर चुकी थी। जलगाँव का तो प्रतिनिधि के रूप में वर्णन किया जा रहा है। **जीवराज भवन** का अनुशासन देखते ही बनता था। धवल परिधान में बालक एवं पूर्व में दी गई ड्रेसेस में बालिकाओं से शिविर की छटा अद्वितीय बनी हुई थी। स्वाध्याय भवन की भाँति यहाँ बहूमण्डल की श्राविकाएँ एक ड्रेस कोड में थीं। नन्हे-नन्हे शिविरार्थियों ने इन श्राविकाओं के निमित्त से पाठ्यक्रम को बड़े सुचारू ढ़ंग से याद किया था। **सागर भवन** में खुशियों की लहर का प्रचण्ड वेग था। कुम्भटजी एवं श्राविकाओं की जीतोड़ मेहनत का परिणाम था कि मल्ली जिन बालब्रह्म-चारिणी की प्रस्तुति को यहाँ प्रथम पुरस्कार मिला था। संस्कारों का सृजन करने वाली विजयाजी मल्हारा, बरड़ियाजी आदि श्राविकाओं के अथक प्रयास ने इस शिविर को चिरस्मरणीय बना दिया। श्री दल्लुभाउ जैन ने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा कि हमारी नई पीढ़ी की रचनात्मक, सृजनात्मक शक्ति के उभार हेतु शिविर ने एक प्लेटफॉर्म दिया है। आदरणीय श्री रतनलाल सी बाफणा ने भी बहुत प्रमोद भाव व्यक्त किया। जहाँ एक ओर जलगाँव की यह अग्रणी पंक्ति प्रेरणादायी है वहीं सशक्त एवं क्रियावान शक्ति में बेजोड़ महावीरचन्दजी बोथरा, प्रशांतजी पारख, महेन्द्रजी बाफना, संदीपजी चोरड़िया, विक्रमजी मुणोत, सुनीलजी बाफना आदि की युवापंक्ति सुनहरे भविष्य को सुनिश्चित कर रही थी। **घोटी, इगतपुरी** महाराष्ट्र में पींचा-सिंघवी परिवार के प्रयासों से शिविरों ने धर्मोत्सव का रूप ले लिया था। आयोजक कह रहे थे कि 15 दिन का शिविर पहली बार लगा। किन्तु प्रतियोगिताओं से ऐसा माहौल बना कि दिन-रात सब कुछ भूल बच्चे सिर्फ शिविरों की बात कर रहे थे। कहने को शिविर दो घण्टे का था, पर शेष समय घर पर भी पोस्टर्स, नाटिकाओं, धर्मकथा की तैयारी चल रही थी। टीवी इत्यादि छूट गई थी। अर्जुन की भाँति सभी का एक ही लक्ष्य था। परिणाम यह रहा कि सामायिक, प्रतिक्रमण इत्यादि कंठस्थ करते हुए बड़े

उल्लास से शिविरार्थी आगे बढ़ रहे थे। **अमलनेर** में देसाई बालक ने छः आरों का बहुत सुव्यवस्थित विवेचन किया। हर आरे की विशेषताओं, तीर्थंकर भगवंतों के विचरण, काल इत्यादि हर पहलू को जान-समझ कर विश्वास परक प्रस्तुति दी। यह प्रस्तुति अमलनेर में ही नहीं, हर क्षेत्र में थी। प्रायोगिक (Practical) तरीके से कर्णधार तैयार हो रहे थे। राजमलजी संचेती, ओसवाल, छाजेड़ परिवार का उल्लेखनीय योगदान था। शिविर में चेतनजी डागा की दस वर्षीय पुत्री ने वक्तृत्वकला के गुणों से पूर्ण शिविर में अपने अनुभवों को प्रभावी ढंग से रखा तो सभी आगन्तुक चकित रह गये। **कजगाँव** शिविर में प्रतिदिन शिविरार्थी चालीसगाँव से स्वप्रेरणा से आ रहे थे। **फत्तेपुर** के आयोजक कह रहे थे कि फत्तेपुर में रह रही नानीजी के दौहित्रों ने वहाँ आने का कार्यक्रम शिविर की तारीखों के अनुसार ही सुनिश्चित किया एवं अन्य क्षेत्र में जाने वाले बच्चे शिविर पूर्व ही जाकर आ गये। वे अन्तःस्तल से शिविर में भाग ले रहे थे। **बोदवड़** में भी शिविरों को लेकर अपार उत्साह था। जलगाँव से महावीर जी बोथरा के नेतृत्व में गये प्रतिनिधिमंडल ने यहाँ के शिविरों को देख हर्षातिरेक में यह अभिव्यक्ति की कि-"आज बोदवड, फत्तेपुर, जलगाँव में मेला लगा। इतनी सुंदर प्रस्तुतियाँ थीं कि वर्षों तक सभी के मन मस्तिष्क पर अंकित रहेंगी। कामवाली बाई का बच्चा तीन दिन में 'तस्सउत्तरी' सुना रहा था। सिंध प्रान्त की बच्ची 25 बोल सुना रही थी। ज्ञान गंगा पूर्ण जोश और उमंग से हिलोरें ले रही थी। जड़ रत्नों के साथ चेतन रत्न के पारखी श्री देवेन्द्र जी सेठ का महाराष्ट्र एवं कोटा शिविरों को देख रोम-रोम खिल उठा।

रामपुरा-कोटा में नवलखा दम्पती, लोढ़ा परिवार की माँ एवं दशवैकालिक के आठ अध्ययन को कंठस्थ कर चुके पुत्र, अभयजी जैन, जगदीशजी जैन आदि के प्रयासों से शिक्षण सुंदर था। 'भृगुपुरोहित' एवं 'जैन धर्म ही क्यों?' विषयों पर अद्भुत प्रस्तुति दी गई। **महावीर नगर** में भी अध्ययन का माहौल बढ़िया था। शिक्षण संस्थान के छात्र सेवाएँ प्रदान कर रहे थे। जब प्रश्न पूछे जा रहे थे तो सभी के हाथ प्रश्नों के उत्तर देने हेतु खड़े हो रहे थे। ये हाथ मात्र कोटा के बच्चों के नहीं थे। 6,500 बच्चों के हाथों के प्रतिनिधि थे जो यह घोष कर रहे थे हमने अब शिविरों में अपनी सामायिक पूरी कंठस्थ कर ली है, कोई कह रहा था कि थोकड़े आदि याद हो चुके हैं। अर्थ सम्पन्नता कहीं कम ज्यादा हो सकती है, पर मेधा एवं जागरूकता हर जगह एक-सी थी। बच्चों में आत्मीयता, सौहार्द एक-सा था और वे जिनशासन के सुनहरे भविष्य के लिए कटिबद्ध थे। शिविरों में आदरणीय अध्यक्ष महोदय श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना, अमिताभ जी हीरावत का अन्तःस्तल से पूर्ण सहयोग रहा। आदरणीय श्री मोफतराजजी जी मुणोत, आदरणीय श्री कैलाशचन्दजी हीरावत, आदरणीय श्री सुमेरसिंहजी बोथरा की भी पूर्ण आत्मीयता रही।

शिविर सरिता के प्रवाह को पाँच वर्ष पूर्ण हो चुके थे। इस वर्ष शिविर करना है या नहीं, एक असमंजस की स्थिति थी। पर इसमें आदरणीय पिताश्री विमलचन्दजी डागा का स्पष्ट मंतव्य था कि एक बहुत अच्छी परंपरा हमारे नौनिहालों के लिए स्थापित हुई है इसे बरकरार रखो। उनके प्रोत्साहन का ही यह प्रतिफल था कि आचार्य भगवन्त के समक्ष शिविर की पूरी रूपरेखा रखी, भगवंत की असीम अनुकम्पा पूर्ववत् बही और हरसाना में उनकी स्वीकृति मिली। शिविर पूर्व कार्यों में सरदारसिंहजी बोथरा, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल के मंत्री विनयचन्दजी डागा, अशोकजी सेठ, वीरभ्राता मनोजजी जैन, मनीषजी जैन आदि का पूर्ण सहयोग एवं प्रोत्साहन रहा। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वावधान में लगे इन शिविरों का प्रायोजन पिछले पाँच वर्षों की भाँति इस वर्ष भी हांगकांग के युवक मण्डल का रहा। महेन्द्रजी संचेती, संजयजी कोठारी, हेमंतजी संचेती, अनिलजी खटोड, योगेशजी जैन, सुनीलजी लुणावत आदि का भी उल्लेखनीय सहयोग रहा। अग्रज भ्राता राजेन्द्र जी डागा ने हर पल पूर्ण सम्बल दिया।

संघ हमें इतना प्रेम, वात्सल्य देता है कि हम श्रावक उसका ऋण कभी भी नहीं चुका सकते। करबद्ध निवेदन है कि छद्मस्थता है, गलतियाँ संभव है, विगत छह वर्षों में इस शिविर सरिता के प्रवाह में, न चाहते हुए भी, कहीं कोई हृदय दुःखा हो तो बारम्बार क्षमायाचना। *-राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर*

जिनवाणी पर अभिमत

श्रीमती रेखा जसवंतजी नंगावत

मैं जिनवाणी पत्रिका की नियमित सदस्या हूँ। जिनवाणी में जो लेख प्रकाशित होते हैं वे बड़े रोचक, उच्च दक्षता वाले एवं हृदयस्पर्शी होते हैं। हर महीने मुझे बेसब्री से इस पत्रिका का इन्तजार रहता है। नवम्बर-दिसम्बर-2014 में प्रकाशित 'रात्रिभोजन विरति' अंक अत्यन्त रोचक, शिक्षाप्रद एवं बोधयुक्त थे। डॉ. चंचलमल जी चोरडिया के स्वास्थ्य आलेख आज की जीवन-शैली की समस्याओं के लिए अति प्रभावशाली हैं। उपचार की नवीन जानकारियाँ प्राप्त होती हैं।

श्रीमान् डॉ. दिलीप जी धींग की भी रचनाएँ नियमित प्रकाशित होती हैं। इनके लेख इतने सुचिंतित एवं विचारोतेजक होते हैं जिससे जैनधर्म की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। मई-2015 में प्रकाशित लेख 'विद्वानों को प्रोत्साहन' सही मायने में दिल पर एक चोट जैसा लगा है। बिलकुल सही है, साहित्यकारों की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए। हमारे जिनशासन, समाज, संस्कृति आदि सभी में साहित्यकारों की रचनाओं एवं विचारों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

-225, यश प्रतीक, न्युलेकट, टेंकबंड रोड़, इट्टिठकेगुड़,
इन्द्रानगर, मैसूर-570010 (कर्नाटक)

कविता

संघ हमेशा बड़ा रहेगा

डॉ. दिलीप धींग

संघ बड़ा था, संघ बड़ा है, संघ हमेशा बड़ा रहेगा।
संघ से जुड़ने वाला व्यक्ति, सदा धर्म से जुड़ा रहेगा।
और धर्म से जुड़ने वाला, सदा संघ से जुड़ा रहेगा।।

व्यक्ति से जुड़कर तो मित्रों, राग प्रबल हो उठता है।
पंथवाद गुरुवाद पनपता, तेज धर्म का घटता है।
धर्म बनेगा तेजस्वी तो संघ यशस्वी बना रहेगा।
संघ बड़ा था, संघ बड़ा है, संघ हमेशा बड़ा रहेगा।।1।।

संघ धर्म है, धर्म संघ है, दोनों इक-दूजे के पूरक।
सत्य ज्ञान के रक्षक दोनों, विग्रह-भावों के संहारक।
धर्म-संघ का भव्य भवन यह, सदा खड़ा था, खड़ा रहेगा।
संघ बड़ा था, संघ बड़ा है, संघ हमेशा बड़ा रहेगा।।2।।

जलकण सदा बदलते रहते, लेकिन निर्झर बहता रहता।
व्यक्ति आते-जाते रहते, संघ हमेशा कायम रहता।
अतः संघ बड़ा व्यक्ति से, गौरव इसका बड़ा रहेगा।
संघ बड़ा था, संघ बड़ा है, संघ हमेशा बड़ा रहेगा।।3।।

चार तीर्थ की जहाँ सुरक्षा, ज्ञान-ध्यान का हो विस्तार।
समता, त्याग, समर्पण, सेवा, निष्ठा, आपस में सहकार।
अनुशासन में बँधा संघ ही, श्रेष्ठजनों से जुड़ा रहेगा।
संघ बड़ा था, संघ बड़ा है, संघ हमेशा बड़ा रहेगा।।4।।

गुणधारी जयवन्त संघ का, सम्मान सत्कार करते हैं।
हाथ जोड़कर शीश नमाकर, सदा नमस्कार करते हैं।
उपकारों से आलोकित मन, कृतज्ञता से भरा रहेगा।
संघ बड़ा था, संघ बड़ा है, संघ हमेशा बड़ा रहेगा।।5।।

-निदेशक, अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र,
18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई (तमिलनाडु)

रत्नसंघ के सन्त-सतियों के चातुर्मास

(विक्रम संवत् 2072, ईस्वी सन् 2015)

जिनशासन गौरव, **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.** द्वारा वि.सं. 2072 सन् 2015 हेतु साधु-मर्यादा के समस्त आगारों के साथ घोषित चातुर्मासों का विवरण इस प्रकार हैः-

(1) हिण्डौनसिटी, जिला-करौली (राज.)

卐 **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.**

卐 महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री आशीषमुनि जी म.सा.

卐 नवदीक्षित श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा.

卐 नवदीक्षित श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. ठाणा 6

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, नई मण्डी के पीछे, हिण्डौनसिटी, जिला-करौली-322230 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री मूलचन्दजी जैन-परामर्शदाता, मो. 098289-21387
2. श्री शीतलप्रसादजी जैन-अध्यक्ष, मीरा कुँज, जैन कॉलोनी, मण्डावरा रोड़, हिण्डौनशहर-322230, जिला-करौली (राज.) फोन : 07469-235478, 088902-64958
3. श्री प्रवीणकुमारजी जैन-मंत्री, मोबाइल- 094604-41798, 98291-04138
4. श्री संजयकुमारजी जैन-अध्यक्ष-युवक परिषद्, मो. 094146-24096
5. श्री राजेश जी जैन-क्षेत्रीय प्रधान, मो. 095290-83690

अन्य सम्पर्क सूत्र- श्री निर्मलकुमारजी जैन-082902-98204, श्री राहुलजी जैन-094143-64958, श्री नरेन्द्रजी जैन- 094143-70606, श्री ताराचन्दजी जैन-098287-93435

आवागमन के साधन- हिण्डौनशहर पश्चिम मध्य रेलवे दिल्ली-मुम्बई रेलमार्ग पर स्थित है। यहाँ प्रायः सभी ट्रेनों का ठहराव है। जयपुर से 160 कि.मी., आगरा से 108 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। हिण्डौनशहर के लिए जयपुर से प्रति घण्टे बस सेवा उपलब्ध है। चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से 1 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। हर समय टैम्पो सुविधा उपलब्ध है।

(2) नेहरू पार्क-जोधपुर (राज.)

卐 **परम श्रद्धेय उपाध्याय पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.**

卐 मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रमुनिजी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.

卐 नवदीक्षित श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. ठाणा 6

चातुर्मास-स्थल- श्रीमती शरद्चन्द्रिका मुणोत सामायिक-स्वाध्याय भवन, तारघर के पास, कुम्हार छात्रावास के सामने, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री धनपतचन्दजी सेठिया-अध्यक्ष, फोनः-0291-2752472, मो. 098290-22472
2. श्री सुभाषचन्द जी हुण्डीवाल-मंत्री, डी-5, रामनगर, प्रथम रोड़, भदवासिया, जोधपुर-342006 (राज.), मोबाइल- 094605-51096
3. श्री नवरतनजी डागा-संयोजक, मो. 098280-32215
4. श्री दिलीप जी लुणावत-सह संयोजक, मो. 094141-83000

आवागमन के साधन- जोधपुर राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा शहर है जो रेल, बस एवं हवाई सेवा से जुड़ा हुआ है। नेहरू पार्क स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन मुख्य रेलवे स्टेशन से 1.5 कि.मी. एवं राईकाबाग रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से 4 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(3) महावीर नगर-जयपुर (राज.)

卐 सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.

卐 श्रद्धेय श्री अभयमुनि जी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- श्रीमती राजकंवर केवलमल लोढ़ा सामायिक-स्वाध्याय भवन (महावीर नगर), सेन्ट्रल बैंक की गली, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर-302018 (राज.) फोन- 0141-3101991

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री प्रमोदकुमारजी लोढ़ा, ए-8, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर-302018 (राज.), फोनः 0141-2551083, मोबाइल-098290-51083
2. श्री जिनेन्द्र जी सुखलेचा, मो. 094140-55417
3. श्री वीरेन्द्रकुमारजी चोरडिया, मो. 098284-06869

आवागमन के साधन- जयपुर रेलवे स्टेशन से महावीरनगर स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन

11 कि.मी., गाँधीनगर स्टेशन से 2 कि.मी., दुर्गापुरा स्टेशन से 1.5 कि.मी. एवं केन्द्रीय बस स्टेण्ड टर्मिनल से 10 कि.मी., नारायणसिंह सर्किल बस स्टेण्ड से 5 कि.मी. एवं जयपुर एयरपोर्ट से लगभग 3 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(4) अलवर (राज.)

- 卐 **तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.**
- 卐 **श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.**
- 卐 **श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा.**
- 卐 **श्रद्धेय श्री सुभाषमुनि जी म.सा. ठाणा 4**

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्द्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, श्री महावीर भवन, अग्रसेन मार्ग, बस स्टेण्ड के पास, अलवर-301001 (राज.) फोन- 0144-2343837

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री अशोककुमारजी पालावत-अध्यक्ष, मो. 093148-71868
2. श्री योगेशजी पालावत-मंत्री, मो. 093140-83492
3. श्री क्रान्तिचन्द जी मेहता, मेहता एण्ड कम्पनी, 17 मनु मार्ग, अलवर (राज.), मो. 094140-19462
4. श्री महेन्द्र जी जैन, मो. 094140-16496

आवागमन के साधन- अलवर शहर दिल्ली व जयपुर के मध्य स्थित है। दिल्ली से अलवर 165 कि.मी., जयपुर से 150 कि.मी., हिण्डौन से 130 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। अलवर देश के प्रमुख नगरों से रेल मार्ग, सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। महावीर भवन रेलवे स्टेशन से 3 कि.मी. एवं बस स्टेण्ड से आधा कि.मी. की दूरी पर है। महावीर भवन आने के लिए रिक्शा-टेम्पो की सुविधा उपलब्ध है।

(5) पावटा-जोधपुर (राज.)

- 卐 **साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.**
- 卐 **तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा.**
- 卐 **व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा.**
- 卐 **व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभाजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री दर्शनलताजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री शशिकलाजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री उषाजी म.सा. ठाणा 7**

चातुर्मास-स्थल- श्रीमती उगमकंवर झुमरमल बाघमार सामायिक-स्वाध्याय भवन, धर्मनारायणजी का हत्था, पावटा, जोधपुर-342006 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री धनपतचन्दजी सेठिया-अध्यक्ष, फोनः-0291-2752472, मो. 098290-22472
2. श्री सुभाषचन्द जी हुण्डीवाल-मंत्री, डी-5, रामनगर, प्रथम रोड़, भदवासिया, जोधपुर-342006 (राज.), मोबाइल- 094605-51096
3. श्री नरपतराजजी चौपड़ा-संयोजक, फोन : 0291-2545265, मो. 094604-22134
4. श्री पारसमलजी गिड़िया-क्षेत्रीय प्रधान,फोनः 0291-2545104, मो. 094601-08060

आवागमन के साधन- पावटा स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन मुख्य रेलवे स्टेशन से 4 कि.मी. एवं राईकाबाग रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से आधा कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(6) सवाईमाधोपुर (राज.)

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा.**

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलताजी म.सा.**

卐 **महासती श्री चैतन्यप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री भक्तिप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री दिव्यप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री मैत्रीप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री सुदर्शनाजी म.सा.** **ठाणा 7**

चातुर्मास-स्थल- महावीर भवन, गुरुद्वारे के पास, सवाईमाधोपुर-322021 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री राधेश्यामजी जैन 'गोटेवाला'-परामर्शदाता, फोनः 07462-233550, मो. 094618-63233

1. श्री सुबाहुकुमारजी जैन-अध्यक्ष, फोनः 07462-233461, 233451 मो. 094139-24700

2. श्री मदनलालजी जैन 'करेला वाले'-मंत्री, कपड़े के व्यापारी, पुराना खण्डार रोड़, सवाईमाधोपुर-322021 (राज.), मो. 094138-85588

आवागमन के साधन- सवाईमाधोपुर दिल्ली मुम्बई रेलवे लाइन पर स्थित है। जयपुर, जोधपुर एवं कोटा से भी रेल व बस मार्ग से जुड़ा हुआ है। महावीर भवन मुख्य रेलवे स्टेशन से 5 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(7) मानसरोवर-जयपुर (राज.)

卐 **विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा.**

卐 **महासती श्री विनयप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री रक्षिताजी म.सा.**

卐 **महासती श्री प्रभावतीजी म.सा.**

卐 **महासती श्री पूनमश्रीजी म.सा. ठाणा 5**

चातुर्मास-स्थल- महावीर भवन, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्था, वरूण पथ जैन मंदिर के पीछे, किरण पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री राजेन्द्रकुमारजी तातेड़-अध्यक्ष, मो. 098290-53140
2. श्री सुरेशचन्दजी गोखरू-मंत्री, मो. 094142-78918
3. श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन, 44/203, रजत पथ, मध्यम मार्ग, मानसरोवर, जयपुर (राज.), मो. 098293-00138
4. श्री सुजानराज जी मेहता, मो. 094148-87506

आवागमन के साधन- महावीर भवन रेलवे स्टेशन से 11 कि.मी. एवं केन्द्रिय बस टर्मिनल से 12 कि.मी. एवं हवाई अड्डे से 10 कि.मी., मेट्रो मानसरोवर से महावीर भवन 2 कि.मी. की दूर पर स्थित है।

(8) सरवाड़, जिला-अजमेर (राज.)

卐 **विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा.**

卐 **महासती श्री सुश्रीप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री शारदाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री लीलाकंवरजी म.सा.**

卐 **महासती श्री विजयश्रीजी म.सा. ठाणा 5**

चातुर्मास-स्थल- महावीर भवन, बड़े मन्दिर के पास, सरवाड़, जिला-अजमेर-**305403 (राज.)**

श्री ओसवाल जैन समाज सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री सुरेन्द्रसिंहजी कक्कड़-अध्यक्ष, मो. 094145-55665
2. श्री सुरेन्द्रकुमारजी कक्कड़-मंत्री, श्री नाकोड़ा टेक्सटाईल, सदर बाजार, पो. सरवाड़, जिला-अजमेर (राज.), फोनः 01496-230053, मो. 094145-55699

आवागमन के साधन- सरवाड़ अजमेर कोटा बस मार्ग पर स्थित है। अजमेर से 60 कि.मी., केकड़ी से 17 कि.मी. एवं ब्यावर से 100 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(9) भिनाय-जिला-अजमेर (राज.)

- 卐 **व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री कौशल्याजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री पुनीतप्रभाजी म.सा. ठाणा 3**

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्द्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जैन स्थानक, बड़ी गवाड़ी, पो. भिनाय, जिला-अजमेर-305622 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री भंवरलालजी चौधरी-अध्यक्ष, फोन-01466-273404, मो. 094146-09925
2. श्री भागचन्दजी कावड़िया-मंत्री, द्वारा- जैन किराणा भण्डार, पो. भिनाय, जिला-अजमेर-305622 (राज.), मो. 099285-55144

आवागमन के साधन- भिनाय पहुँचने के लिए सड़क मार्ग है। अजमेर से भिनाय हेतु बस मार्ग सुविधा है। अजमेर व ब्यावर से 55 कि.मी. व बिजयनगर से 22 कि.मी. की दूरी है। बांदनवाड़ा होकर भी भिनाय पहुँचा जा सकता है।

(10) नित्यानन्द नगर-जयपुर (राज.)

- 卐 **व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री विमलावतीजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री जागृतिप्रभाजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री परागप्रभाजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री वृद्धिप्रभाजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री ऋद्धिप्रभाजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा. ठाणा 7**

चातुर्मास-स्थल- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, ए-51, गली नं. 6, गेट नं. 3, जैन मंदिर के पास, क्वींस रोड़, नित्यानन्द नगर, जयपुर-302021 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री गिरीशकुमारजी जैन-अध्यक्ष, मो. 093513-11856
2. श्री अरूणकुमारजी जैन-मंत्री, मो. 094148-21591
3. श्री राजेन्द्रकुमारजी जैन, प्लॉट नं. 211, गली नं. 8, मोतीनगर, क्वींस रोड़, जयपुर-

302021 (राज.), मो. 094147-66477

4. श्री भागचन्दजी जैन, फोनः 0141-6577886, मो. 098283-19932

आवागमन के साधन - नित्यानन्द नगर अजमेर रोड़, पुरानी चुंगी के पास है। जो हवाई अड्डे से 15 कि.मी., जयपुर जंक्शन से 6 कि.मी. एवं सिन्धी केम्प से 7 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ से बस, टेक्सी हमेशा मिलती है। चातुर्मास स्थल कान्हा रेस्टोरेन्ट के पीछे वाली गली में है।

(11) दूदू, जिला-जयपुर (राज.)

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री इन्दिराप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा. ठाणा 3**

चातुर्मास-स्थल- महावीर भवन, ओसवाल कॉलोनी, नरैना रोड़, पो. दूदू-303008, जिला-जयपुर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री विनोदजी मेहता-अध्यक्ष, मैसर्स लालचन्द गुलाबचन्द मेहता, मेहता भवन, बस स्टेण्ड के पास, पोस्ट-दूदू-303008, जिला-जयपुर (राज.), फोन-07437-255860, मो. 098292-70400
2. श्री माणकचन्दजी कोठारी-मंत्री, मो. 096671-48102
3. श्री सुरेन्द्रकुमारजी नाहर-युवा अध्यक्ष, मो. 098290-87049
4. श्री राजेन्द्र कुमारजी कोठारी-युवा उपाध्यक्ष, मो. 094132-36502

आवागमन के साधन- दूदू नेशनल हाईवे नं. 8 पर जयपुर-अजमेर के मध्य स्थित है। जयपुर से 65 कि.मी. एवं अजमेर से 65 कि.मी. पर सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। किशनगढ़ रेलवे स्टेशन व सड़क मार्ग से 40 कि.मी. दूरी पर है। जयपुर-अजमेर से हर 10 मिनट में बस सेवा उपलब्ध है।

(12) सूरत (गुजरात)

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री देवांगनाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री अंजनाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री सिन्धुप्रभाजी म.सा. ठाणा 5**

चातुर्मास-स्थल- श्री सोहनलाल नाहर स्वाध्याय भवन, 25-26-27, एम.जे. पार्क, डी.आर.बी. कॉलेज के पास, न्यू सिटी लाइट, सूरत-395017 (गुजरात)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री सुनील जी नाहर-मंत्री, ए-614, इण्डिया टेक्सटाइल मार्केट, रिंग रोड़, सूरत-395002 (गुजरात), फोनः 0291-2331546, 098251-25718
2. श्री राजीवजी नाहर, फोनः 0261-2349201, मो. 093751-65765
3. श्री सुनील जी गाँधी, मो. 099740-85013

आवागमन के साधन- सूरत भारत के प्रमुख शहरों से सड़क व रेल मार्ग से जुड़ा हुआ शहर है। स्थानक रेलवे स्टेशन से 9 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(13) रायचूर (कर्नाटक)

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.**

卐 **महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा**

卐 **महासती श्री नव्यप्रभाजी म.सा**

卐 **महासती श्री सरोजश्रीजी म.सा**

卐 **महासती श्री अरिहाश्रीजी म.सा.**

卐 **महासती श्री खुशबूश्रीजी म.सा. ठाणा 7**

चातुर्मास-स्थल- जैन स्थानक, महावीर चौक, रायचूर-584101 (कर्नाटक)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री पारसमलजी सुखाणी-अध्यक्ष, M.G. Road, Mahaveer Chowk, Raichur-584101 (Kan.), फोनः 08532-230279, मो. 094481-94289, 094820-94289
2. श्री शांतिलाल जी भण्डारी-मंत्री, फोनः 08532-228588, मो. 094486-66656
3. श्री संजयकुमारजी संचेती, मो. 094480-22511
4. श्री अशोक जी भण्डारी, मो. 097392-22795
5. श्री विकासजी सुखाणी, मो. 089047-99999

आवागमन के साधन - रायचूर मद्रास-बैंगलोर-मुम्बई रेलवे लाइन पर मुख्य जंक्शन है। यहाँ पर काफी रेल गाड़ियाँ उपलब्ध है।। रायचूर रेलवे स्टेशन से जैन स्थानक 3 कि.मी. एवं बस स्टेण्ड से 1 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। हैदराबाद से 200 कि.मी. है।

(14) कोप्पल (कर्नाटक)

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.**

卐 **महासती श्री भावनाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री प्रीतिश्रीजी म.सा.**

卐 महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा.

卐 महासती श्री गरिमाश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संघ, जैन स्थानक, Gavimath Road, Near Clock Tower, Koppal-583231 (Kan.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. Sh. Abhayji Mehta-President, Abhay Solvant (P) Ltd., Gaushal Road, Koppal-583231 (Kan.), Mobile No. 094484-96330
2. Sh. Chandrakant Ji Surana-Secretary, Mo. No. 092414-15486, 099453-54425
3. Sh. Jawaharlal Ji Jain 'C.A.'-Vice President, Mo.No.-099724-03528

आवागमन के साधन - कोप्पल हुबली-गुंटकल रेलवे लाइन पर स्थित है। हुबली से 100 कि.मी. है। हुबली से लोकल ट्रेन एवं बस सेवा उपलब्ध है। रायचूर से कोप्पल 200 कि.मी. है।

(15) माधवनगर (महा.)

卐 व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा.

卐 महासती श्री श्रुतिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री मतिप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री भव्यप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री दीपिकाश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी संघ, माधवनगर, जिला-सांगली-416406 (महा.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री बिरदीचन्दजी मन्नालालजी बेदमुथा-अध्यक्ष, 393, सोमवार पेठ माधवनगर, जिला-सांगली (महा.), मो. 099226-29606
2. श्री राजेन्द्रजी चम्पालालजी बेदमुथा-मंत्री, मो.094230-35910
3. श्री अशोकजी बी. बेदमुथा, मो. 098900-46033
4. श्री मोहनलालजी आर. बेदमुथा, मो. 094039-10361
5. श्री कान्तिलालजी बी. कोठारी, मो. 090119-77195

आवागमन के साधन- माधवनगर मुम्बई से 400 कि.मी. एवं पूना से 225 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। मुम्बई एवं पूना से आने वाले सांगली स्टेशन उतरकर माधवनगर पहुँच सकते हैं। सांगली स्टेशन से माधवनगर की दूरी 5 कि.मी. एवं मिरज जंक्शन से 11 कि.मी. है। सांगली एवं मिरज से बस एवं रिक्शा की व्यवस्था है।

(16) गाँधीनगर-दिल्ली

- 卐 **व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री उदितप्रभाजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री संयमप्रभाजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री कोमलश्रीजी म.सा.** **ठाणा 4**

चातुर्मास-स्थल- **श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी सोसायटी (पंजी.), एक्स-6367, नेताजी की गली, गाँधीनगर, दिल्ली-110031**

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री बिजेन्द्रजी जैन-महामंत्री, मो. 093508-54337
2. श्री संजयकुमारजी जैन-मंत्री, मो. 098180-70980/083778-57980
3. श्री अशोक जी सुराणा-क्षेत्रीय प्रधान, डी-139, ईस्ट ऑफ कैलाश, द्वितीय माला, दिल्ली-110065, मो. 098110-20399
4. श्री ईश्वरचन्दजी सिंघवी, मो. 098105-03480

आवागमन के साधन- गाँधीनगर स्थित जैन स्थानक पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से 3 कि.मी., नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से 6 कि.मी. एवं I.S.B.T. बस स्टेण्ड से 3 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(17) उमरगाँव रोड़, जिला-बलसाड (गुजरात)

- 卐 **व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री सुभद्राजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्रीतितिक्षाश्रीजी म.सा.**
- 卐 **महासती श्री वर्षाश्रीजी म.सा.** **ठाणा 4**

चातुर्मास-स्थल- **श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, रेलवे स्टेशन के पास, उमरगाँव रोड़ वेस्ट, जिला-बलसाड-396165 (गुजरात)**

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री प्रकाशचन्दजी कस्तूरचन्दजी मेहता-अध्यक्ष, महावीर मेडिकल स्टोर के पीछे, रेलवे स्टेशन के पास, पो. उमरगाँव रोड़ वेस्ट, जिला-बलसाड-396165 (गुजरात), फोनः 0260-2562213, मो. 092278-44589
2. श्री अशोकजी लुंकड़-मंत्री, मो. 097237-82204
3. श्री बी.एल. जैन, मो. 098241-37265
4. श्री विनयकुमारजी सोहनलाल जी मेहता, मो. 098980-34672

आवागमन के साधन- उमरगाँव रोड़ अहमदाबाद, मुम्बई रेलवे लाइन एव सड़क मार्ग पर स्थित

है। मुम्बई से रेलवे द्वारा 140 कि.मी. एवं सूरत से 130 कि.मी. तथा बस मार्ग से मुम्बई से 160 कि.मी. एवं सूरत से 145 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(18) बीकानेर (राज.)

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री यशप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री पदमप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री ज्योतिप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री आनंदप्रभाजी म.सा. ठाणा 5**

चातुर्मास-स्थल- सुराणा स्वाध्याय भवन, लक्की मॉडल स्कूल के पास, इण्डस्ट्रीयल एरिया, रानी बाजार, बीकानेर-334001 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री इन्दरमलजी सुराणा-अध्यक्ष, 13-14, इण्डस्ट्रियल एरिया, रानी बाजार, बीकानेर-334001 (राज.), फोनः 0151-2520754/2542168, मो. 094144-52218
2. श्री नवीन जी डागा-मंत्री, फोनः 0151-2201797, मो. 098292-50797
3. श्री महेन्द्र जी सुराणा, मो. 094131-06724

आवागमन के साधन- बीकानेर भारत के सभी बड़े शहरों से रेल व बस यातायात से जुड़ा हुआ है। स्थानक रेलवे स्टेशन से मात्र 1.5 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(19) पीपाड़शहर, जिला-जोधपुर (राज.)

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री सुव्रतप्रभा जी म.सा.**

卐 **महासती श्री कान्ताजी म.सा. आदि ठाणा 3**

चातुर्मास-स्थल- श्रीमती शरदचन्द्रिका मोफतराज मुणोत स्वाध्याय-भवन, काला भाटा, पो. पीपाड़शहर-342601, जिला-जोधपुर(राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री धनेन्द्रजी चौधरी-अध्यक्ष, चौपाटा बाजार, पीपाड़शहर-342601, जिला-जोधपुर (राज.), फोनः 02930-233243, मो. 094144-62677
2. श्री परेश जी मुथा-मंत्री, फोनः 02930-233055, मो. 094146-01639
3. श्री सुमतिचन्दजी मेहता, फोनः 02930-233069, मो. 094144-62729
4. श्री जितेन्द्रजी कटारिया, मो. 094147-22049

आवागमन के साधन- जोधपुर जिलान्तर्गत पीपाड़शहर जोधपुर, मेड़तासिटी, अजमेर, जयपुर,

बिलाड़ा, पाली, ब्यावर जैसे समीपवर्ती शहरों से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। जोधपुर से पीपाड़ शहर के लिए हर आधे घंटे के अन्तराल पर रोडवेज एवं प्राइवेट बसें उपलब्ध रहती है।

(20) सुमेरगंजमण्डी, जिला-बून्दी (राज.)

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री पुष्पलताजी म.सा.**

卐 महासती श्री स्नेहलताजी म.सा.

卐 महासती श्री मंजूलताजी म.सा.

卐 महासती श्री निरंजनाजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जैन स्थानक, सुमेरगंजमण्डी, जिला-बूंदी (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री राकेशजी जैन-अध्यक्ष, शुभम् क्लॉथ स्टोर, पो. सुमेरगंजमण्डी-323614, जिला-बून्दी (राज.), मो. 094138-60198
2. श्री राजेन्द्रजी जैन-मंत्री, मो. 094144-37062
3. श्री नरेन्द्रकुमारजी जैन, मो. 081041-96282
4. श्री मुकेशकुमारजी जैन, मो. 094149-23803

आवास-स्थल- केसरी भवन, केसरी मेडिकल स्टोर के पीछे, मेन स्टेशन रोड़, सुमेरगंज मण्डी।

आवागमन के साधन- सुमेरगंज मण्डी (इन्दरगढ़) दिल्ली-मुम्बई रेलवे लाइन पर स्थित है। यहाँ पर कुछ ट्रेनों का ठहराव है। एक्सप्रेस रेल से आने वाले कोटा अथवा सवाईमाधोपुर उतरकर आ सकते हैं। कोटा से 72 कि.मी. एवं सवाईमाधोपुर से 37 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

(21) वैशाली नगर-अजमेर (राज.)

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा.**

卐 महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा.

卐 महासती श्री कृपाश्रीजी म.सा.

卐 महासती श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा.

卐 महासती श्री संवेगश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- श्री जैन श्वेताम्बर संस्था, ओसवाल भवन, पार्श्वनाथ कॉलोनी, वैशाली नगर, अजमेर-305001 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री जीतमलजी कोठारी-अध्यक्ष, मो. 094147-08603
2. श्री रमेशजी सिंघी-मंत्री, 11/48, वैशालीनगर, अजमेर (राज.), मो.098282-71290

3. श्री उम्मेदमल जी चौपड़ा, मो. 099505-32025
4. श्री विवेक जी महनोत, मो. 098291-54156
5. श्री हरकचन्दजी बोथरा, मो. 094140-03616

आवागमन के साधन- अजमेर राजस्थान के प्रमुख शहरों से रेल व बस से जुड़ा हुआ शहर है। ओसवाल भवन रेलवे स्टेशन से 4 कि.मी. एवं बस स्टेण्ड से 3.5 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से टेम्पो एवं टेक्सी उपलब्ध है।

(22) शोरापुर, जिला-यादगिरी (कर्नाटक)

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री लक्षितप्रभाजी म.सा.**

卐 **महासती श्री वैराग्यश्रीजी म.सा ठाणा 3**

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जैन स्थानक, कबाडगिरा रोड़, शोरापुर-585224, जिला-यादगिरी (कर्नाटक)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री किशोरजी छाजेड़-अध्यक्ष, मैसर्स शाह रूपचन्द कन्हैयालाल, पो. शोरापुर-585224 (कर्नाटक), मो. 094481-93300
2. श्री कांतिलालजी आंचलिया, गजानन्द ज्वैलर्स, पो. शोरापुर-585224 (कर्नाटक), मो. 094484-05441
3. श्री सरदारमलजी छाजेड़, मो. 094491-85224

आवागमन के साधन- मुम्बई-चेन्नई रेलवे लाइन पर गुलबर्गा, यादगिरी एवं रायचूर उतरकर बस द्वारा शोरापुर पहुँचा जा सकता है। शोरापुर गुलबर्गा से 108 कि.मी., यादगिरी से 52 कि.मी., रायचूर से 90 कि.मी., बीजापुर से 140 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। शोरापुर बैंगलोर बीदर (Bidar) हाइवे पर स्थित है।

(23) बीजापुर (विजयपुर) कर्नाटक

卐 **व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा.**

卐 **महासती श्री भविताश्रीजी म.सा.**

卐 **महासती श्री महिमाश्रीजी म.सा. ठाणा 3**

चातुर्मास-स्थल- **श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, राम मन्दिर रोड़, पो. बीजापुर-586101 (कर्नाटक)**

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री मदनलालजी बोथरा-अध्यक्ष, Bothra Borss. Back Road Station, Saha Peth, Vijaypur-586101, Dist. Bijapur (Kan.), Mobile No. 094482-33763

2. श्री नितीनकुमारजी दुर्गालालजी रूणवाल-मंत्री, Deepak Medical Store, Station Road, Vijaypur-586101, Dist. Bijapur (Kan.), M. No. 090364-90500, 094491-42822

आवागमन के साधन- सोलापुर रेलवे स्टेशन से 100 कि.मी. की दूरी पर है। बीकानेर-यशवन्तपुर एक्सप्रेस सप्ताह में 2 दिन बीजापुर के लिए उपलब्ध है। सोलापुर से प्रत्येक 20 मिनट के अन्तराल से बस सेवा उपलब्ध है। बीजापुर मिरज से 130 कि.मी., सोलापुर से 100 कि.मी., बेलगांव से 190 कि.मी., हुबली से 200 कि.मी., रायचूर से 210 कि.मी., कोप्पल से 180 कि.मी. और शोरापुर से 160 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

आवश्यक सूचनाएँ

(1)

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर एवं इसकी सहयोगी संस्थाओं की **कार्यकारिणी सभा** 03 अक्टूबर 2015 व **संयुक्त आमसभा** 04 अक्टूबर 2015 को हिण्डौन शहर, जिला-करौली (राज.) में आयोजित की जा रही है। सभी सदस्यगण सादर आमन्त्रित हैं। *-आनन्द चौपड़ा, राष्ट्रीय संघ महामंत्री*

(2)

04 अक्टूबर 2015 को होने वाली संघ की आमसभा की बैठक में अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर एवं सहयोगी संस्थाओं के अध्यक्षों का चयन किया जायेगा, मनोनयन हेतु आप अपने प्रस्ताव बन्द लिफाफे में संयोजक संघ संरक्षक मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.) के पते पर 20 अगस्त, 2015 तक प्रेषित करावें। *-आनन्द चौपड़ा, राष्ट्रीय संघ महामंत्री*

एक अच्छे विचार की विशेषता

श्री मनीष उज्ज्वल

चिन्तन कीजिये अगर आपके पास एक रुपया है और आपके मित्र के पास भी एक रुपया है। अगर आप दोनों मित्र अपने-अपने रुपये को एक दूसरे से बदल लें तो दोनों के पास एक-एक रुपया ही रहेगा। किन्तु, अगर आपके पास एक अच्छा विचार है और आपके मित्र के पास भी एक अच्छा विचार है और आप दोनों आपस में उस अच्छे विचार को बदल लें तो आप दोनों के पास दो-दो अच्छे विचार हो जायेगें। इस तरह हम सभी अपने से मिलने वाले परिचित-अपरिचित व्यक्तियों से अच्छे विचारों का आदान-प्रदान करते रहें और अपने विचारों की पूँजी में निरन्तर अभिवृद्धि करते रहें। यह उपाय निश्चित ही हमारे जीवन निर्माण में सहायक होगा।

-आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना,

डब्ल्यू-570, पार्क रोड़, अन्ना नगर, वेस्ट एक्स., चेन्नई-600101 (तमिलनाडु)

समाचार विविधा

पूज्यप्रवर का भरतपुर से वैर ग्राम होते हुए बयाना पदार्पण

हर ग्राम-नगर किया पदरज से पावन
शीलव्रतियों की संख्या हुई मन भावन

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति, शीलव्रत एवं रात्रिभोजन-त्याग के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी सरसव्याख्यानी श्री महेन्द्र मुनिजी म.सा. आदि सन्तवृन्द पल्लीवाल क्षेत्र के ग्राम-नगरों को पदरज से निरन्तर पावन कर रहे हैं। पल्लीवाल एवं पोरवाल क्षेत्र को धार्मिक क्षेत्र के रूप में परिणत करने में युग मनीषी पूज्य आचार्य हस्ती का महान् योगदान होने से उन्हें पोरवाल-पल्लीवाल क्षेत्र का उद्धारक माना जाता है। उन्हीं के पट्टधर आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रति पल्लीवाल क्षेत्र की अंतरंग भक्ति निरन्तर बढ़ रही है। हिण्डौनवासी आचार्यश्री को 'पल्लीवालों के परमेश्वर' के रूप में देखते हैं तथा जयघोष करते हैं। कोटा चातुर्मास की समाप्ति के पश्चात् पूज्य आचार्य श्री हीरा के पावन पादयुग्म 'चरैवेति-चरैवेति' शब्दों को सार्थक कर रहे हैं। विहार निरन्तर चल रहा है। आपने पल्लीवाल क्षेत्र के अधिकांश गाँवों को उपकृत किया है।

पूज्य आचार्यप्रवर 25 मई को भरतपुर के गोपालगढ़ मौहल्ला पधार गये थे। यहाँ पर 1 जून तक विराजकर श्रद्धालु भक्तों एवं जिज्ञासुओं को लाभान्वित किया। इसी अवधि में 31 मई को भरतपुर में पल्लीवाल संभाग से महुवा, मण्डावर, खेरली, गंगापुर, नसियाँ कॉलोनी, बरगमां, नदबई, सहाड़ी, सेवर, कठूमर, हिण्डौन, वर्धमान नगर, अलवर, मलपुरा, भरतपुर वासन गेट तथा मौहल्ला गोपालगढ़ संघ के अध्यक्ष, मंत्री एवं कार्यकारिणी सदस्यों का सम्मेलन हुआ। इस संभागीय बैठक की अध्यक्षता संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना ने की। आगत संघों ने अपने-अपने धर्मस्थान सम्बन्धी समस्याएँ प्रस्तुत की, जिनका विचार-विमर्श के साथ समाधान किया गया। बैठक में उपाध्यक्ष श्री अमिताभ जी हीरावत एवं अतिरिक्त महामंत्री श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल भी उपस्थित थे। शासन-सेवा समिति के सम्मानित सदस्य श्री नथमल जी हीरावत ने पूज्य श्री की सेवा का लाभ लिया।

ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्दशी 1 जून 2015 को क्रियोद्धारक पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी

म.सा. की 170 वीं पुण्यतिथि तप-त्याग के साथ मनाई गई। इस प्रसंग पर लगभग 125 एकाशन-व्रत की साधना हुई। गोपालगढ़ प्रवास में रोहित, अभिषेक, आयुष, पल्लवी, मोनिका, अनिमा, अभिलाषा, नीलम, बबिता, शिखा, प्रीति आदि ने गुरुदेव को 1008 बार वन्दन किया। इनके अतिरिक्त अनेक बालक-बालिकाओं ने 108 वन्दन का कई बार लाभ लिया।

पूज्य आचार्यप्रवर 2 जून को गोपालगढ़ से विहार कर राजेन्द्र नगर पधारे। भरतपुर के जिला कलेक्टर श्री रविजी जैन एवं कॉलोनी वासियों ने कृष्णा कॉलोनी फरसने हेतु निवेदन किया। पूज्य गुरुदेव 3 जून को जब विहार कर कृष्णा कॉलोनी पधारे तो कलेक्टर महोदय ने सम्पूर्ण विहार में नंगे पैर चल कर श्रद्धा भक्ति का विशेष परिचय दिया। पूज्य आचार्यप्रवर ने संक्षिप्त उद्बोधन में फरमाया कि आत्मा से परमात्मा एवं नर से नारायण बनने का अधिकारी चार गतियों में मनुष्य ही है। शरीर को सम्हालने के साथ आत्मा को सम्हाला जाय। आगमवाणी, भजन, सत्संग, स्वाध्याय, सदाचरण आदि आगे बढ़ने के साधन हैं। जिनके जीवन में आगमवाणी उतरी हुई है, वे देवताओं द्वारा भी पूज्य होते हैं। अपने अधिकारों का निर्वहन उदारता व ऋजुता के साथ कर्त्तव्य समझ कर करें, यही मंगल भावना है। कलेक्टर रविजी ने आचार्यप्रवर के पदार्पण पर कृतज्ञता के भाव प्रकट किए।

4 जून को पूज्यप्रवर रणजीत नगर पधारे। विहार में जिला कलेक्टर रविजी भी अपने आवास से पद यात्रा कर रणजीत नगर तक साथ रहे। भरतपुर से पूज्यश्री का विहार 5 जून को सेवर हुआ। यहाँ से 6 को हबीबपुर, 7 को बछांमदी तथा 8 को अटारी पधारे। अटारी में सुमेरगंज मण्डी संघ चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुआ। पूज्य गुरुदेव ने साधु मर्यादा के आगारों के साथ **व्याख्यात्री महासती श्री पुष्पलताजी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास की स्वीकृति सुमेरगंज मण्डी के लिए फरमाई।** अटारी से 9 को पिंगोरा व 10 जून को मई पधारे। यहाँ तीन दिन विराजे। वासनगेट भरतपुर संघ ने 1 से 10 जून तक विहार सेवा के साथ आतिथ्य सेवा का प्रमोद भाव से लाभ लिया। वीरपिता श्री सुभाषचन्दजी जैन, वीर भ्राता श्री मयंकजी, श्री आलोकजी, श्री सुखदर्शनजी, श्री पवनजी, श्री विमलजी, संघाध्यक्ष एवं मंत्रीजी ने भी विचरण-विहार में सेवा का लाभ लिया। हिण्डौन संघ के युवारत्न बन्धु गंगापुर के पूर्व से ही प्रायः विहार सेवा का लाभ ले रहे हैं। समय-समय पर उन्होंने विहार सेवा के साथ आतिथ्य सत्कार का भी लाभ उठाया। 13 जून को डहरा, 14 को अरोदा पदार्पण हुआ। यहाँ पर निर्वाचित डॉयरेक्टर श्री गोरधन जी जाट ने सेवा-शुश्रूषा का आदर्श प्रस्तुत किया। 15 को नसवारा होकर वीर नाना श्री बाबूलाल जी जैन (श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी के सांसारिक नाना) की विशेष भक्ति पर मोलोनी पधारे।

मोलोनी गाँव में 16 जून को चातुर्मासकाल की उपस्थिति जैसा दृश्य परिलक्षित हुआ। 17 जून को मुण्डिया पधारे। छोटे ग्राम में लासूर एवं सवाईमाधोपुर से भक्तों का आगमन हुआ। 18 को सिरस पधारे, जहाँ जहाडु एवं खेरली संघ दर्शनार्थ उपस्थित हुआ। 19 को जगजीवनपुर में बयाना संघ विनति लेकर उपस्थित हुआ। 20 को पूज्य गुरुदेव वैर ग्राम में पधारे। यहाँ 21 को गोपालगढ़ संघ उपस्थित हुआ तथा 23 को श्री ज्ञानचन्दजी सिंघवी-जयपुर अपनी माता कपूरबाईजी के स्वर्गगमन पर परिवार के साथ मांगलिक श्रवण हेतु उपस्थित हुए। श्री मुकेशजी जैन खेरली वालों की शीलव्रती बनाने कि विशेष प्रेरणा रहती है। उनकी व्यक्तिगत प्रेरणा से अब तक 150 से अधिक शीलव्रती बन चुके हैं। पूज्य आचार्यप्रवर वैर में पाँच दिन विराजे। यहाँ भक्तों के दर्शनार्थ आगमन का क्रम बराबर बना रहा। आतिथ्य सत्कार की भावना प्रमोदकारी रही। वैर ग्राम के संघ सदस्यों में सुन्दर सामंजस्य है। श्री सुमेरचन्दजी, श्री सुरेशचन्दजी आदि सभी श्रावकों की सेवाएँ उल्लेखनीय रहीं। 25 जून को वैर से विहार कर समराया एवं करनावर होकर 27 जून को पूज्यप्रवर का बयाना पदार्पण हुआ है। विहारकाल में ग्रामों में प्रवचन दिन में 2.15 से 3.30 बजे तक हुए।

जयपुर, जोधपुर, कोटा, सवाईमाधोपुर, ब्यावर, गोटन, लासूर स्टेशन, जलगांव, नन्दूरबार, बैंगलोर, चेन्नई, मुम्बई, कुम्भकोणम् आदि स्थानों के अतिरिक्त पल्लीवाल क्षेत्रों से श्रद्धालु भाई/बहिनों का दर्शनार्थ पधारना हुआ। शीलव्रत की शृंखला में- राजेन्द्रनगर में-1, रणजीतनगर में-2, सेवर ग्राम में-4, अटारी में-2, पिंगोरा में-8, मई में-5, डहरा में-9, अरोदा में-10, नसवारा में-1, मोलोनी में-15, मूण्डिया में-4, सिरस में-5, जगजीवनपुर में-1, वैर में-4, समराया में-6, कनावर में-2 आजीवन शीलव्रती बने हैं।

उपाध्यायप्रवर एवं शासनप्रभाविकाजी द्वारा जोधपुर में धर्मजागरणा

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य **उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 6 घोड़ों के चौक में एवं साध्वीप्रमुखा **शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.**, व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 10 पावटा स्थानक में विराजकर जोधपुर नगर को निरन्तर सत्संग, प्रवचन-श्रवण एवं धर्माराधन से लाभान्वित कर रहे हैं। ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्दशी 1 जून 2015 को क्रियोद्धारक आचार्यश्री रत्नचन्द्रजी म.सा. की 170 वीं पुण्यतिथि मनाई गई। श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्यश्री उलटी बात को सुलटी लेते थे। दीक्षा के पूर्व उनकी माता ने जब 'सत्यानाश' शब्द का प्रयोग किया तो उन्होंने कहा कि माता! 'अष्टानाश' कहो तो अच्छा है, इससे सभी (आठ) कर्मों का नाश कर सकूँगा।

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आचार्यश्री रत्नचन्दजी का जन्म, दीक्षा एवं स्वर्गगमन ग्रीष्मकाल में हुआ। उन्होंने हजारों नये श्रावक बनाये। इस दिन 40-45 एकाशन एवं दया संवर हुए। आषाढ़ कृष्णा द्वितीया 4 जून को 219 वाँ क्रियोद्धारक दिवस उपस्थित हुआ। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने बताया कि विक्रम संवत् 1854 में 14 सन्तों के साथ मुनि श्री रत्नचन्द्रजी ने भोपालगढ़ में 21 बोलों के साथ क्रियोद्धार किया था। जोधपुर में 21 मई से 7 जून तक बालकों का शिक्षण शिविर आयोजित हुआ। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने शिविर समापन के समय प्रेरक उद्बोधन दिया तथा कतिपय नियम दिलाए। 10 जून को अष्टमी पर दया-संवर की आराधना हुई। 15 जून को भी इसी प्रकार चतुर्दशी पर 40-45 दया-संवर हुए। 18 जून आषाढ़ शुक्ला द्वितीया को साध्वी प्रमुखा श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. का 82 वां जन्मदिवस उपस्थित हुआ। इस अवसर पर व्याख्यात्री महासती श्री विनीत प्रभाजी, महासती सुव्रतप्रभाजी एवं महासती कान्ताजी घोड़ों के चौक पधारे। महासती सुव्रतप्रभाजी एवं कान्ताजी ने शासनप्रभाविकाजी के जीवनवृत्त पर संवाद प्रस्तुत किया। महासती विनीतप्रभाजी ने गुणानुवाद किया। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने शासनप्रभाविकाजी के संयम-जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संघ में आज भी महासतीजी की धाक है। उनकी 70 वर्ष की दीक्षा पर्याय हो चुकी है। 26 जून को प्रवचन में श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा. ने फरमाया कि तप से भूख सहने की शक्ति बढ़ती है। तप परम औषधि भी है। त्याग से भी शक्ति में वृद्धि होती है। स्वार्थयुक्त सेवा, क्रोधयुक्त त्याग तथा लोभयुक्त उदारता तीनों निरर्थक हैं। 16 से 21 जून तक श्राविका मण्डल का धार्मिक शिक्षण शिविर पावटा स्थानक में आयोजित हुआ। दोपहर में सूत्रकृतांग सूत्र की वाचनी चल रही है। नागौर, चेन्नई, नागपुर, जलगाँव, होलनांथा आदि स्थानों से दर्शनार्थियों ने दर्शन-प्रवचन का लाभ लिया।

श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी का जयपुर में विचरण

सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 का जयपुर के विभिन्न उपनगरों में विचरण चल रहा है। 1 जून को पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. की 170 वीं पुण्यतिथि जवाहरनगर स्थानक में लगभग 200 सामूहिक एकाशन तप की साधना के साथ मनाई गई। श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. के संयमी जीवन पर प्रकाश डाला। श्रद्धेय श्री नन्दीषेणजी म.सा. ने ओजस्वी वाणी में क्रियोद्धार करके शीथिलता को दूर करने वाले प्रसंग की चर्चा की। 2 जून को जवाहरनगर से विहार कर मुनिश्री आचार्य कृपलानी मार्ग, आनन्दपुरी पधारे। यहाँ से गणेशमार्ग बापूनगर, न्यू लाइट कॉलोनी, दुर्गा विहार होते हुए 6 जून को प्रतापनगर स्थित स्थानक

पधारे। यहाँ 16 जून तक क्षेत्र को लाभान्वित किया। 17 जून को विहार कर सांगानेर, मानसरोवर स्थित पल्लीवाल भवन पधारे। श्री अशोककुमारजी जैन 'हरसाना वाले' के सत्प्रयासों से तीन आजीवन शीलव्रती बने- 1. श्री हरिप्रसादजी जैन-पल्लीवाल भवन, 2. श्री बेनीप्रसादजी जैन 'भरतपुर वाले, 3. श्री छोटूसिंहजी भाटी-परमहंसमार्ग। श्री महेन्द्रसिंहजी भाटी एवं श्री भागचन्दजी ने एक वर्ष के लिए शीलव्रत अंगीकार किया। यहाँ से राधा निकुंज होते हुए 20 जून को मुनिश्री मानसरोवर के पोरवाल भवन पधारे हैं।

विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा., विदुषी महासती श्री सौभाग्यकंवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. का भी जयपुर के विभिन्न नगरों में विचरण चल रहा है।

'गुणसौरभ गणिहीरा' पुस्तक पर प्रतियोगिता

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, रात्रिभोजन-त्याग, आजीवन शीलव्रत, व्यसनमुक्ति एवं समाज सुधार के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के **आचार्य पदारोहण रजत वर्ष** के अवसर पर '**गुणसौरभ गणिहीरा**' खुली पुस्तक प्रतियोगिता का प्रारम्भ श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु द्वारा 9 मई 2015 से किया गया है। **गुण सौरभ गणि हीरा पुस्तक एवं प्रश्न पुस्तिका के कतिपय प्राप्ति-स्थलों तथा सम्पर्क सूत्र की सूचना जिनवाणी के जून-2015 अंक में प्रकाशित की गई थी। उसी सन्दर्भ में कुछ नवीन स्थापित किये गये केन्द्रों के सम्पर्क-सूत्र इस प्रकार हैं-**

महाराष्ट्र क्षेत्र- 1. चन्द्रपुर- श्रीमती निर्मलाजी भलगट-99230-46167, **2. सतारा-** श्री संतोष बाबूजी मुणोत-99233-96050, **3. पिलकोड़-** श्रीमती भावनाजी बोहरा-90110-10472, **4. नन्दूरबार-** श्री भूषणजी कांकरिया-90281-55526, **5. हिंगणघाट-** श्री दिलीपकुमारजी गोलेच्छा-94221-40740, **6. माधवनगर-** श्री राजेन्द्रजी सुभाषचन्दजी बेदमुथा-94230-35910, **7. जामनेर-** श्रीमती ज्योतिजी नवलखा-88888-84411, **8. चाँदूर रेलवे-** श्रीमती शिल्पाजी बागमार-94216-06685, **9. बुलढ़ाणा-** श्रीमती ममताजी राखेचा-84849-51728, **10. भड़गाँव-** डॉ. अजित जी जैन-94216-40665, **11. घोड़नदी-** श्रीमती राखीजी संजयजी कोठारी-92262-56769, **12. रत्नागिरी-**श्री दिलीपजी जैन-94232-91218, **13. बड़नेरा-** श्रीमती कान्ताजी उत्तमचन्दजी खिंवसरा-94225-40778, **14. विरार-मुम्बई-** श्री केवलचन्दजी जैन-93253-69904, **15. घोटी-** श्रीमती पुष्पाजी सुखलालजी पींचा-98225-06965, **16. सिरपुर-** श्री सागर हुक्मीचन्दजी जैन-98819-68140, **17. मालेगाँव-** डॉ. वर्धमानजी लोढ़ा-77448-20165, **18. उमरगांव-** श्री श्रेयांसजी मेहता-98980-82213

कर्नाटक क्षेत्र- 1. हावेरी- सीमाजी भण्डारी-80502-46961, **2. अरसीकेरे-** ललिताजी वसंताजी बोहरा-90353-39455, **3. हिरियुर-** श्री विक्रमकुमारजी जैन-99005-95775, **4. दावणगिरी-** श्री सुभाष जी गुगलिया-94481-17415, **5. शिवमोगा-** श्री प्रकाश जी मेहता-94801-42045, **6. चित्रदुर्गा-** नीतूजी बागरेचा-94483-52831, **7. के.जी.एफ.-** श्री दलीचन्द जी नाहटा-94496-35878, **8. इलकल-** श्रीमती कल्पनाजी कटारिया-94817-05571, **9. बेलगाँव-** श्री राजेन्द्रजी कटारिया-94481-26357, **10. हुबली-** श्री उच्छबराजजी जैन-94496-35049, **11. शोरापुर-** श्री सुमतिजी आंचलिया-94826-78946, **12. कोप्पल-** श्रीमती मंजुजी मेहता-94800-24324, **13. गजेन्द्रगढ़-** श्री अशोकजी बाघमार-94481-32552, **14. कुकनूर-** श्रीमती शिल्पाजी तालेड़ा-94816-42427, **15. बीजापुर-** श्री मदनलाल जी बोथरा-94482-33763, **16. बागलकोट-** श्रीमती ललिताजी चोरड़िया-93432-38305, **17. मैसूर-** श्री बुधमल जी बाघमार-98451-26407, **18. होसकोटे-** श्री दीपकजी भण्डारी-93412-59057, **19. मुलबागल-** श्री किशनलालजी भंसाली-94482-49823

मध्यप्रदेश क्षेत्र- 1. नागदा- श्री सुरेन्द्र जी पितलिया-94259-86309, **2. सिंगोली-** श्री शान्तिलालजी गाँधी-94259-92031, **3. जबलपुर-** श्रीमती निर्मलाजी चौपड़ा-93033-18877, **4. इन्दौर-** श्री मोहनलालजी पीपाड़ा-98275-28331

छत्तीसगढ़ क्षेत्र- 1. दुर्ग- श्री महेन्द्र जी कोठारी-94255-55558

राजस्थान क्षेत्र- 1. कोटा- श्रीमती सुनीताजी नवलखा-94620-33844, **2. किशनगढ़-** श्रीमती फूलवन्तीजी लोढ़ा-96723-26111, **3. बेगु-** श्री सुशीलजी सुराणा- 98288-61816, **4. पीपाड़-** श्री सुमतिचन्दजी मेहता-94144-62729, **5. ब्यावर-** श्रीमती सुनीताजी डोसी-94604-77677, **6. उदयपुर-** श्री सागरमलजी सर्राफ-80031-82219, **7. गुलाबपुरा-** सरिताजी डोसी-98750-51667, **8. जयपुर-** श्रीमती मंजुलाजी बम्ब-93142-92229, **9. अलवर-** श्रीमती मंजू योगेशजी पालावत-93140-83492

उत्तरप्रदेश क्षेत्र- कानपुर- श्री मनमोहनचन्दजी बाफणा-95989-89900

दिल्ली क्षेत्र- ईस्ट कैलाश- श्री अशोक जी सुराणा-98110-20399

आन्ध्रप्रदेश क्षेत्र- 1.विजयवाड़ा- श्री पी.सी. मेहता-93921-02781, **2.तिरुपति-** श्री सुखपालजी जैन-85009-59700

गुजरात क्षेत्र- 1.वापी- श्री गणपतजी भण्डारी-98252-33257, **2.उधना (सूरत)-** श्री मनोहरलालजी जैन-92281-67957, **3. नवसारी-** श्री ओमप्रकाशजी जैन-98257-83500, **4. अहमदाबाद-** श्री महावीरजी मेहता-94289-09600

तमिलनाडु क्षेत्र- 1.पोलूर- श्रीमती शर्मिलाजी छाजेड़-94433-83156, **2.चेईयार-** श्रीमती

नन्दिनीजी कोठारी-98420-70887

पांडिचेरी- उर्मिलाजी शाह-98405-42270

प्रश्नपुस्तिका के प्रश्नों में कतिपय सुधार हैं-1. पृष्ठ संख्या 8 प्रश्नावली 4 में प्रश्न संख्या 13 में 'कोटा' के स्थान पर 'कोट' तथा 'नगर' के स्थान पर 'भवन' शब्द पढ़ा जाए। 2. पृष्ठ संख्या 6 प्रश्नावली 3 में भाग ब H में 'संयमप्रभाजी' के स्थान पर 'सिद्धिप्रभाजी' पढ़ा जाये।

प्रश्नों से सम्बन्धित अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र- 1. श्री विनोदजी जैन-094447-34394, 2. श्री सुरेशकुमारजी हिंगड़-094448-52330, 3. श्री नरेन्द्रजी कांकरिया-098411-48948, 4. श्रीमती मनीषाजी कांकरिया-091500-42434-*महेन्द्र कुमार कांकरिया, अध्यक्ष-97109-99990, आर. नरेन्द्र कांकरिया, प्रतियोगिता संयोजक-98411-48948, सुधीर कुमार सुराणा, मंत्री-91506-40000*

बनें आगम अध्येता (5)

उत्तराध्ययन सूत्र की समापक परीक्षा 2 अगस्त को

उत्तराध्ययनसूत्र (12 अध्ययन) की मुख्य समापक परीक्षा 2 अगस्त 2015 को पूर्व की भाँति मध्याह्न 12 से 3 बजे सभी केन्द्रों पर आयोजित की जाएगी। **सम्पर्क सूत्र-** सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन- 0141-2575997, 2570753, **श्राविका-मण्डल अध्यक्ष-**श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा, जयपुर-098290-19396, **महासचिव-** श्रीमती बीनाजी मेहता, जोधपुर-097727-93625

-बीना मेहता, महासचिव

मेवाड़ में प्रचार-प्रसार यात्रा सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा 20 से 22 जून 2015 तक मेवाड़ क्षेत्र में आध्यात्मिक प्रचार-प्रसार कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रचार यात्रा में स्वाध्याय संघ के परामर्शदाता वरिष्ठ साधक श्री फूलचंदजी मेहता-उदयपुर, स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री कुशलचंदजी गोटेवाला-सवाईमाधोपुर, स्वाध्याय संघ के सचिव श्री राजेशजी भण्डारी- जोधपुर, मेवाड शाखा के संयोजक श्री कन्हैयालालजी जैन-भीलवाडा, स्वाध्याय संघ के सह-कार्यालय प्रभारी श्री धीरजजी डोसी-जोधपुर एवं वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रीमती संगीताजी नागौरी-भीलवाडा की महनीय सेवाएं प्राप्त हुईं। कार्यक्रम के अन्तर्गत खारिया मीठापुर, धनोप, भीलवाडा, पारसोली, बेगूं, सिंगोली, मोरवन बांध, नीमच सिटी, बाडी, अरनोदा, सुरपुर, कपासन, दरीबामाइन्स, पहुंना आदि क्षेत्रों में प्रवास हुआ। प्रचार कार्यक्रम में पर्युषण पर्व आराधना हेतु स्वाध्यायी बुलाने की पुरजोर प्रेरणा की गई, जिसके फलस्वरूप 11 क्षेत्रों की मांग प्राप्त हुईं। नये स्वाध्यायी बनने की प्रेरणा से 5

महानुभावों ने स्वाध्यायी सदस्यता ग्रहण की तथा पुराने स्वाध्यायियों की पर्युषण सेवा हेतु स्वीकृति भी प्राप्त की गई। सभी स्थानों पर बालक-बालिकाओं हेतु रविवार संस्कार शिविर की प्रेरणा की गई तथा चल रहे शिविरों की समीक्षा की गई। बच्चों को पाठशाला से जोड़ने के लिए भी प्रयास किये गए। शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा की जानकारी देते हुए नये केन्द्र प्रारम्भ किये गए तथा आगामी परीक्षा हेतु फॉर्म भरवाए गए। *-राजेश भण्डारी-सचिव*

चयनित स्वाध्यायी-प्रशिक्षण-शिविर अगस्त में

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा स्वाध्यायियों की गुणवत्ता अभिवर्द्धन हेतु चयनित स्वाध्यायियों का स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर 09 से 11 अगस्त 2015 तक आचार्यप्रवर श्री हीराचंद्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में हिण्डौन सिटी में आयोजित किया जा रहा है। इस शिविर में कम से कम 5 वर्ष पर्युषण सेवा प्रदान करने वाले स्वाध्यायी, जिन्हें प्रतिक्रमण एवं 25 बोल कण्ठस्थ हों वे ही भाग ले सकते हैं।

शिविर में भाग लेने वाले इच्छुक स्वाध्यायी पत्र अथवा फोन के माध्यम से स्वाध्याय संघ जोधपुर से सम्पर्क कर स्वीकृति प्राप्त करें। शिविर से सम्बन्धित जानकारी के लिए निम्नांकित महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं:- 1. श्री राजेन्द्रजी लूंकड-निदेशक, 093600-25001, 2. श्री कुशलजी गोटेवाला-संयोजक, 094604-41570, 3. श्री राजेशजी भण्डारी-सचिव, 094610-13878, 4. श्री कमलेशजी मेहता- 094142-67824, 5. श्री धीरजजी डोसी- 09462543360, स्वाध्याय संघ कार्यालय 0291-2624891 (समय प्रातः 10 से सायं 5)।

चेन्नई में ग्रीष्मकालीन संस्कार शिविर सम्पन्न

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई द्वारा ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में चेन्नई के उपनगरीय संघों के संयुक्त तत्त्वावधान में आध्यात्मिक एवं नैतिक संस्कार शिविरों का आयोजन किया गया। शिविरार्थियों को सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल, कर्म-प्रकृति, संज्ञा, सवणे णाणे आदि थोकड़ों का प्रशिक्षण दिया गया। शिविरों का संक्षिप्त विवरण-

1. **स्वाध्याय भवन, साहुकारपेट, चेन्नई-** श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद्, तमिलनाडु के संयुक्त तत्त्वावधान में 21 से 31 मई 2015 तक 11 दिवसीय शिविर में 140-150 शिविरार्थियों ने भाग लिया।
2. **आवड़ी-** युवक परिषद् एवं एस.एस. जैन संघ, आवड़ी के संयुक्त तत्त्वावधान में 20 से 27 मई 2015 तक छह दिवसीय शिविर में 55 शिविरार्थियों ने भाग लिया।
3. **कालाड़ीपेट-** युवक परिषद् चेन्नई एवं जैन संघ कलाड़ीपेट के संयुक्त तत्त्वावधान में 24 से 29 मई 2015 तक छह दिवसीय शिविर में 35 शिविरार्थियों ने भाग लिया।

आयोजित समस्त शिविरों में कक्षानुसार परीक्षाओं का आयोजन किया गया। विभिन्न कक्षाओं में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले समस्त परीक्षार्थियों को एवं विद्वान् शिक्षकगणों को श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ तमिलनाडु की ओर से प्रोत्साहन पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया। शिविर समापन के दिन शिविरार्थियों ने अपने अनुभव रखे एवं विभिन्न प्रकार की नाट्य प्रस्तुति दी। *-ज्ञानचन्द बाघमार, शाखा सचिव*

आचार्य श्री नानेश स्मृति समता पुरस्कार हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा "आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार" प्रति दूसरे वर्ष प्रदान किया जाता है। यह पुरस्कार आचरण आधारित है। जिस व्यक्ति के जीवन में समता दर्शन और व्यवहार प्रत्यक्ष रूप में प्रकट हो जाता है वही व्यक्ति इस पुरस्कार का अधिकारी होगा। पुरस्कार के नियम- 1. जो स्वयं को पात्र समझते हों, आवेदन कर सकते हैं। 2. जाति, धर्म, उम्र आदि का कोई बंधन नहीं रहेगा। 3. एक लाख की नगद राशि, प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिह्न श्री संघ के वार्षिक अधिवेशन पर गरिमामय समारोह में सम्मानपूर्वक भेंट किया जाएगा। 4. नामांकन पत्र भी श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के प्रधान कार्यालय समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) से या ई-मेल द्वारा, व्यक्तिगत अथवा डाक द्वारा प्राप्त किये जा सकते हैं तथा भरकर इसी पते पर संयोजक, आचार्य श्री नानेश स्मृति समता पुरस्कार को भेजें। 5. आवेदन की अन्तिम तिथि 15 अगस्त, 2015 है। *-राजमल चोरडिया, संयोजक*

श्वेताम्बर जैन समाज के छात्रों को छात्रवृत्ति

श्वेताम्बर जैन समाज के जरूरतमन्द परिवारों के मेधावी, होनहार, प्रतिभावान छात्र-छात्राएँ, जिन्होंने 8 वीं एवं इससे उच्च कक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की है तथा जिनके परिवार की मासिक आय 10000/- रुपये से अधिक नहीं है, छात्रवृत्ति हेतु आवेदन कर सकते हैं:-

1. इस वर्ष की प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कक्षा की मार्कशीट की एक प्रतिलिपि साथ भेजें।
2. दो लिफाफों पर अपना पूरा नाम, पूरा पता, तहसील, जिला, राज्य एवं पिनकोड, मोबाइल/फोन नं. लिखें।
3. दोनों लिफाफों में दस-दस रुपये के डाक टिकट रखें, उन्हें चिपकायें नहीं।
4. आवेदन-पत्र में आपके परिवार की आय का विवरण विस्तार से लिखें। आप नौकरी करते हैं या व्यापार? व्यापारी बन्धु अपने व्यापार की विस्तार से जानकारी लिखें, अस्पष्ट भाषा नहीं लिखें।

5. आवेदन-पत्र में भी आपका नाम, पूरा पता, तहसील, जिला, राज्य, पिनकोड, मोबाइल, फोन नं. अवश्य लिखें, सिर्फ लिफाफे पर लिखना पर्याप्त नहीं है।
6. आप अपना मोबाइल, फोन नं. एवं पिनकोड सुन्दर अंकों में अंग्रेजी में लिखें।

सम्पर्क सूत्र- श्री लाभचन्द जी कोठारी, सन्तोक तारा जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, डी-120, कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड, बापूनगर, जयपुर-302015-06, मोबाइल नं. 93140-03637

विधवाओं एवं जरूरतमंदों को आर्थिक सहयोग

श्वेताम्बर ओसवाल जैन समाज की निर्धन, वृद्ध, बेसहारा, अशक्त, विधवा महिलाएँ एवं परित्यक्ता, तलाकशुदा बहनें जो अन्य घरों में मेहनत मजदूरी कर जीवन यापन कर रही हैं और जिनकी मासिक आय रुपये 3000/- से अधिक नहीं है। भोजन एवं वस्त्र के लिये पूर्ण विवरण के साथ आर्थिक सहयोग हेतु आवेदन करें- श्री लाभचन्द जी कोठारी 'एम.ए.', गोठी चेरिटेबल ट्रस्ट, डी-120, कृष्णा मार्ग, यूनिवर्सिटी रोड, बापूनगर, जयपुर-302015-06, मोबाइल नं. 93140-03536

प्राकृत भाषा एवं साहित्य पर अध्ययनशाला सम्पन्न

भोगीलाल लहेरचन्द इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली द्वारा 17 मई से 07 जून 2015 तक 27 वीं इक्कीस दिवसीय प्राकृत भाषा एवं साहित्य की ग्रीष्मकालीन अध्ययनशाला सफलता के साथ सम्पन्न हुई। इस कार्यशाला में उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा, बिहार, राजस्थान, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल एवं दिल्ली प्रदेशों के उच्च शिक्षा संस्थानों से समागत आरम्भिक एवं उच्चतर- इन दोनों पाठ्यक्रमों में 42 प्रतिभागियों ने भाग लिया। 21 मई 2015 को इण्डिया इण्टरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में संस्थान की ओर से नवसृजित व्याख्यानमाला के अन्तर्गत संस्थान के उपाध्यक्ष एवं एल.डी. इन्सटीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, अहमदाबाद के निदेशक डॉ. जितेन्द्र बी. शाह का कल्पसूत्र के लघुचित्रों पर आधारित विशिष्ट व्याख्यान प्रसिद्ध कलाविद् विदुषी श्रीमती कपिला वात्स्यायनजी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। 02 जून 2015 को इण्डिया इण्टरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में संस्थान की ओर एक प्रतिनिधि संवाद (Panel Discussion) का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक प्रो. गयाचरण त्रिपाठी के संयोजकत्व में सम्पन्न इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से माननीया कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा जी, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ, प्रो. जितेन्द्र बी. शाह तथा प्रो. जगत्राम भट्टाचार्य, विश्व भारती शान्तिनिकेतन (प.बंगाल), समणी कुसुमप्रज्ञाजी, लाडनूँ सम्मिलित हुईं।

कार्यशाला में वरिष्ठ विद्वान् प्रो. किरण कुमार थपल्याल-लखनऊ, प्रो. धर्मचन्द जैन-जोधपुर, प्रो. जगतराम भट्टाचार्य-शांतिनिकेतन-पश्चिम बंगाल, प्रो. कमलेश कुमार जैन-उदयपुर, डॉ. जिनेन्द्र कुमार जैन-उदयपुर, डॉ. पोरिक शाह-अहमदाबाद, डॉ. अनेकान्तकुमार जैन-दिल्ली, प्रो. गयाचरण त्रिपाठी-निदेशक, प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी'-निदेशक-शैक्षिक, एवं प्रो. अशोक कुमार सिंह ने अध्यापन किया।

07 जून 2015 को आयोजित समापन समारोह की अध्यक्षता श्री राजकुमार जैन ओसवाल-फरीदाबाद ने की एवं दिल्ली विश्वविद्यालय की वरिष्ठ प्रोफेसर दीप्ति एस. त्रिपाठी मुख्य अतिथि थीं।

पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

जैन विद्या संस्थान, जयपुर द्वारा निम्नलिखित पुरस्कार इस वर्ष भी दिए जाने हैं- 1. महावीर पुरस्कार वर्ष-2015 (रुपये 51001/-), 2. स्वयंभू पुरस्कार वर्ष-2015 (रुपये 31001/-) एवं 3. ब्र. पूरणचन्द रिद्धिलता लुहाडिया पुरस्कार वर्ष-2015 (रुपये 5001/-)। पुरस्कारों हेतु पुस्तकें 31 अक्टूबर 2015 तक आमन्त्रित हैं। पुरस्कार की नियमावली, आवेदन-पत्र व विस्तृत जानकारी के लिए जयपुर कार्यालय से सम्पर्क करें- डॉ. कमलचन्द सोगाणी- संयोजक, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड़, जयपुर-302004 (राज.), फोन 0141-2385247

संक्षिप्त-समाचार

अलवर- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी 9 मई 2015 को पूज्य आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 25 वां आचार्य पदारोहण दिवस लगभग 175 एकाशन तप के साथ मनाया गया। महासतीवर्या ने पूज्य आचार्यश्री के जीवन पर प्रकाश डाला। महासती जी ने अपने मुखारविन्द से आचार्य पदारोहण साधना वर्ष के उपलक्ष्य में अब तक 25 आजीवन शीलव्रती बनाये हैं।

दिल्ली- दक्षिण दिल्ली स्थित छोटी दादाबाड़ी में 20 जून 2015 को व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 के दिल्ली प्रवेश पर प्रवचन कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर अनेक विशिष्ट श्रावकों की उपस्थिति रही। अरिहन्त भवन से छोटी दादाबाड़ी तक की विहार यात्रा में अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने हिस्सा लिया। छोटी दादाबाड़ी में झारखण्ड उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया ने स्वागत वक्तव्य दिया। दादाबाड़ी ट्रस्ट के मंत्री श्री वीरेन्द्र जी मेहता ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर विभिन्न संघों के अग्रांकित श्रावकों ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए- श्री बिजेन्द्र

जी जैन-महामंत्री, गाँधीनगर स्थानक, श्री नरेशजी खिंवसरा-अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय प्रवक्ता अरिहन्त मार्गी संघ, श्री केसरीचन्दजी लोढ़ा-संरक्षक, अरिहन्तमार्गी संघ, श्री जगमोहनजी चतुरमुथा-अरिहन्त मार्गी संघ, श्री सुभाष जी ओसवाल-उपाध्यक्ष-अखिल भारतीय जैन कान्फ्रेंस, श्री विजयसुजन्तीजी-सचिव-चाँदनी चौक स्थानक, श्री प्रेमचन्दजी जैन-अध्यक्ष-प्राज्ञ संघ, एडवोकेट श्री जिनेन्द्र जी जैन-रत्नसंघ, श्री अशोकजी जयचन्दा-प्रधान-ऋषभ विहार स्थानक। गाँधी नगर की सुश्री दीपिका जैन ने भजन प्रस्तुत किया। डॉ. सुगनचन्द जैन-ट्रस्टी-आचार्य सुशील आश्रम, श्री प्रमोदजी जैन-ज्ञानगच्छ एवं दादाबाड़ी के कई ट्रस्टी भी सभा में उपस्थित थे। प्रवचन सभा में 300 से अधिक श्रोताओं की उपस्थिति में साध्वी कोमलश्रीजी, संयमप्रभाजी एवं व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी ने प्रेरक उद्‌बोधन फरमाया। श्री सुभाष जी ओसवाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ दिल्ली की ओर से भोजन की सुन्दर व्यवस्था रही।

-अशोक सुराना, क्षेत्रीय प्रधान, दिल्ली सम्भाग, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

भोपालगढ़- श्री जैन रत्न उच्च माध्यमिक विद्यालय, भोपालगढ़ में हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, सामाजिक ज्ञान, गणित, विज्ञान व जैन दर्शन विषयों के जैन अध्यापकों की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार दिया जाएगा। आवेदन हेतु सम्पर्क सूत्र- मंत्री, श्री जैन रत्न उ. मा. विद्यालय, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राज.), फोनः- 09380102607

श्री जैन रत्न उच्च माध्यमिक विद्यालय, भोपालगढ़ में कक्षा ग्यारवीं एवं बारहवीं के विज्ञान एवं वाणिज्य विषय में कक्षा छः से दस में प्रवेश पाने हेतु जैन परिवार के छात्र/छात्राओं से आवेदन आमंत्रित हैं। **उल्लेखनीय है कि इस वर्ष विद्यालय के वाणिज्य वर्ग व विज्ञान वर्ग का परिणाम शतप्रतिशत रहा है।** छात्रों के लिए आवास की व्यवस्था भी है। आर्थिक रूप से कमजोर स्थिति वाले छात्रों को आवश्यकतानुसार शिक्षण व छात्रालय शुल्क में छूट भी दी जा सकेगी। **सम्पर्क सूत्र-** मंत्री, श्री जैन रत्न उच्च माध्यमिक विद्यालय, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राज.), फोनः- 09380102607

भोपालगढ़- श्री जैन रत्न विद्यालय संस्थान, भोपालगढ़ द्वारा 21 दिवसीय धार्मिक व संस्कार शिविर का आयोजन 18 मई से 07 जून 2015 तक विद्यालय परिसर में किया गया, जिसमें 55 शिविरार्थियों ने भाग लिया।

राणावास- वर्धमान स्थानकवासी जैन छात्रावास, राणावास (55 वर्षों से संचालित) में अनुभवी हॉस्टल वार्डन की आवश्यकता है।

हुबली- गो वंश हत्या एवं मांस-निर्यात निरोध परिषद् ने गायों के कत्ल के खिलाफ व्यापक जन-जागरण हेतु केन्द्र सरकार से मांस-निर्यात पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने की पुरजोर

मांग की है। मांस-निर्यात का देश की अर्थव्यवस्था, कृषि, पर्यावरण और जनहितों पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। संगठन की इस मांग के सम्बन्ध में केन्द्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री निर्मला सीतारमन को एक विस्तृत ज्ञापन भी दिया गया है।

बधाई

जयपुर- श्री रीतेश जैन ने "भारतीय समाज में द्वन्द्व निवारण की अवधारणा : गाँधी दर्शन के विशिष्ट संदर्भ में अध्ययन" विषय पर राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से पी.एच्.डी. पूर्ण की। यह शोध-कार्य उन्होंने प्रो. विद्या जैन, निदेशक, गाँधी अध्ययन केन्द्र के निर्देशन में सम्पन्न किया है। वे सम्प्रति एस.एस. जैन सुबोध पी.जी. महाविद्यालय में राजनीति विज्ञान के व्याख्याता हैं।

जोधपुर- श्री हार्दिक सिंघवी सुपुत्र श्री डॉ. वीरेन्द्रराज सिंघवी तथा सुपौत्र स्व. डॉ. गौतमराजजी सिंघवी ने राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित कैट-2014 (Common Admission Test)-2014 में 99.88 परसेन्टाइल प्राप्त किए तथा उनका भारतीय प्रबन्ध संस्थान, कोलकाता में उच्च शिक्षा (MBA) हेतु चयन हुआ। वर्तमान में आप भारतीय स्टेट बैंक में प्रोबेशनरी ऑफिसर के पद पर कार्यरत हैं।

जोधपुर- सुश्री गरिमा ने सीनियर सैकण्डरी (वाणिज्य) की परीक्षा 92.2 प्रतिशत अंकों से तथा सुश्री दिव्या ने 10 वीं की परीक्षा 9 सी जी पी ए से उत्तीर्ण की है। आप दोनों श्रीमती मंजूकंवर-राजेन्द्रकुमारजी ओस्तवाल की सुपुत्रियाँ एवं स्व. श्री बादलचन्दजी ओस्तवाल (भोपालगढ़ निवासी) की सुपौत्रियाँ हैं।

जलगांव- श्री दर्शन ईश्वरजी चोरड़िया को सी.बी.एस.ई. की 10 वीं कक्षा में 497/500 अंक प्राप्त हुए। समाज में, विद्यालय में सभी जगह उनका अभिनन्दन किया गया। ये सुश्री नेहा जी चोरड़िया के भाई हैं।

जयपुर- श्री आदित्य हीरावत सुपुत्र डॉ. राकेश जी हीरावत एवं सुपौत्र श्री कुशलचन्दजी हीरावत (मौन साधक) ने सी.बी.एस.ई की सैकण्डरी कक्षा 9.4 सी जी पी ए से उत्तीर्ण की है। आप सामायिक एवं प्रतिक्रमण करते हैं तथा पच्चीस बोल, भक्तामर कण्ठस्थ हैं।

जयपुर- श्री आदित्य हीरावत सुपुत्र श्रीमती हेमलताजी-दिनेशजी हीरावत एवं सुपौत्र श्रीमती पारसदेवीजी-धनरूपमलजी हीरावत ने सी.बी.एस.ई. कॉमर्स की 12 वीं कक्षा में 96.6 प्रतिशत से अपने विद्यालय में प्रथम व राजस्थान में तीसरा स्थान प्राप्त किया है।

जोधपुर- श्री राहुल कुम्भट सुपौत्र श्रीमती फूलकंवर-किशनमल कुम्भट एवं सुपुत्र श्रीमती किरण-वीरेन्द्र कुम्भट 'एडवोकेट' ने केट परीक्षा उत्तीर्ण की तथा भारतीय प्रबन्ध संस्थान (उदयपुर) में चयनित हुए हैं।

जयपुर- श्री मितुल जैन सुपुत्र श्रीमती चविता-पीयूषजी जैन ने 10 वीं की परीक्षा में 10 सी जी पी ए प्राप्त किया है। उन्हें खेलकूद व धार्मिक प्रवृत्तियों में भी विशेष रुचि है। उन्हें सामायिक, प्रतिक्रमण, भक्तामर व दशवैकालिक के 4 अध्ययन कण्ठस्थ हैं।

इन्दौर- श्री आकाश जैन सुपुत्र श्रीमती चन्दनबाला-डॉ. जम्बूकुमारजी जैन ने इंजीनियरिंग की परीक्षा 7.19 पॉइन्ट से उत्तीर्ण की। आपकी बहिन **सुश्री परिधि जैन** ने इंजीनियरिंग (आनर्स) 8.43 पॉइन्ट से उत्तीर्ण की। दोनों की नियुक्ति टेक महिन्द्रा कम्पनी में हुई है।

इचलकरंजी- श्री श्रेयांश संचेती सुपुत्र श्रीमती नंदा-राजेन्द्रकुमारजी संचेती एवं सुपौत्र स्व. श्री नेमीचन्दजी संचेती ने (H.S.C.) बोर्ड की 12 वीं कक्षा (विज्ञान) में 97.33 एवं JEE Main में 160 अंक प्राप्त किए।

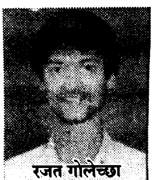
रजत गोलेच्छा

प्रेक्षा चोरड़िया

जयपुर- श्री रजत सुपुत्र श्रीमती विनीता-विमलचन्दजी गोलेच्छा एवं सुपौत्र श्री केशरीमल जी गोलेच्छा ने सी.बी.एस.ई. की 12 वीं कक्षा (कॉमर्स) में 91.2 प्रतिशत अंक प्राप्त किये।

जलगांव- सुश्री प्रेक्षा सुपुत्री श्री संदीप जी चोरड़िया ने 10 वीं सी.बी.एस.ई. बोर्ड में 95.6 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

सवाईमाधोपुर- अदिति जैन सुपुत्री श्री गोविन्द सहाय जी जैन (चकेरी) ने सीनियर सैकण्डरी परीक्षा (कला वर्ग) में जिले की मेरिट में 10 वां स्थान प्राप्त किया है।

कोटा- सुश्राविका श्रीमती हंसा जी जैन धर्मपत्नी श्री अभिनव जी बुरड़ की बैंक ऑफ इण्डिया में द्वितीय स्केल पर पदोन्नति हुई है।

मुम्बई- श्री हर्ष सुपुंत्र श्री नवीनजी मेहता एवं सुपौत्र श्री महावीरचन्दजी मेहता ने सी.बी.एस.ई. बोर्ड की 12 वीं (कॉमर्स) की परीक्षा में 94 प्रतिशत अंक प्राप्त किये हैं।

पीपाड़- श्री निलेश मुथा सुपुत्र श्री संजयकुमार जैन ने सीनियर सैकेण्डरी (कॉमर्स) में 93 प्रतिशत अंक प्राप्त कर राजस्थान राज्य में नौवां एवं जोधपुर जिले में दूसरा स्थान प्राप्त किया है।

श्रद्धाञ्जलि

जोधपुर- सन्तसेवी सुश्राविका श्रीमती इन्दुजी बाफना का 08 जून 2015 को देहावसान हो

गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था, यही कारण है कि आप पूरे परिवार की प्रिय-पात्र थीं। सन्त-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण करने के साथ उनकी सेवा-भक्ति में भी वे सदैव तत्पर रहती थीं। आपके पति डॉ. महावीरलालजी बाफना श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी के मुख्य चिकित्सक के रूप में सेवा देते हुए रत्नसंघीय संत-सतीवृन्द के श्रमणोचित औषधोपचार में निरन्तर अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

चेन्नई- मधुर स्वभावी सुश्राविका श्रीमती शान्तिबाईजी चौधरी धर्मपत्नी श्री शान्तिलालजी

चौधरी का 11 जून 2015 को 73 वर्ष की वय में परलोकगमन हो गया। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाली चिन्तनशील श्राविका थीं। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किये थे। सन्त-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में वे सदैव तत्पर रहती थीं। शेखेकाल अपने यहाँ पधारने वाले संत-सतीवृन्द को भक्ति-भाव पूर्वक निर्दोष आहार-पानी बहराकर अपने-आप को भाग्यशाली समझती थीं। चौधरी परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। आप श्री जयन्ती मुनिजी म.सा. की संसारपक्षीय पुत्रवधू थीं। आप अपने पीछे पति के अतिरिक्त पाँच पुत्रों का संस्कारित परिवार छोड़ कर गई हैं।

जोधपुर- सुश्राविका श्रीमती सुशीलाजी मोदी धर्मसहायिका श्री रणजीतनाथ जी मोदी का

71 वर्ष की वय में 4 जून 2015 को स्वर्गगमन हो गया। आपका धर्ममय जीवन सादगी, सरलता, सौम्यता एवं सहिष्णुता आदि सद्गुणों से ओतप्रोत था। आप नियमित जप-तपाराधना एवं सद्साहित्य स्वाध्याय में समय व्यतीत करती थीं। आपकी इच्छा का सम्मान करते हुए आपके परिवारजनों ने आपके नेत्र एवं देह का 5 जून 2015 को डॉ. एस.एन. मेडिकल कॉलेज, जोधपुर को दान किया। आचार्य भगवन्त पूज्यश्री हस्तीमलजी, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी, उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. एवं संत-सतीवृन्द के प्रति मोदी परिवार पूर्णतः समर्पित रहा है।

कोटा- सुश्राविका श्रीमती कमलेशजी जैन धर्मपत्नी श्री नाथूलालजी का 3 मई 2015 को

देवलोकगमन हो गया। 36 वर्ष की राजकीय सेवा पूर्ण कर आप बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय से सेवानिवृत्त हुईं। शिक्षा विभाग द्वारा आपको बेस्ट प्रिन्सीपल के अवार्ड से भी सम्मानित किया गया। आप सम्भवतः पोरवाल समाज (सवाईमाधोपुर) की प्रथम महिला थीं, जो राजकीय सेवा में नियुक्त हुईं। आप स्वाध्यायशील एवं साधु-सन्तों की सेवा में अग्रणी रहती थीं।

जयपुर- श्री सुरेन्द्रराजजी मेहता का 12 जून 2015 को 87 वर्ष के वय में परलोकगमन हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आप एन.बी.सी. में प्रमुख इंजीनियर रहे। उसके पश्चात् आपने भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति, जयपुर में सचिव के रूप में महती सेवाएँ प्रदान की। रत्नसंघ के संत-सतियों के प्रति आपकी गहरी श्रद्धा थी। आप पद्मभूषण श्री डी. आर. मेहता साहब के अग्रज भ्राता थे।

जयपुर- सुश्राविका श्रीमती कपूरबाईजी धर्मपत्नी स्व. श्री हीराचन्द्रजी सिंघवी (किशनगढ़

निवासी) का 10 जून 2015 को स्वर्गगमन हो गया। आपकी आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत-सतीवृन्द के प्रति श्रद्धा भक्ति थी। धर्मनिष्ठ श्राविका अपने पीछे सुश्रावक श्री ज्ञानचन्दजी सिंघवी का संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

जयपुर- सन्त-सेवी श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती पारसबाईजी धर्मसहायिका श्री भागचन्द जी नवलखा का स्वर्गारोहण 23 जून 2015 को हो गया। धर्म में अनुरक्त सुश्राविका नित्य नियमों का पालन करती थीं। आप सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थीं। आपके जीवन पर आचार्यश्री हस्तीमल जी, आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा., साध्वीप्रमुखा महासती मैनासुन्दरीजी म.सा. का विशेष प्रभाव था।

आलन्दुर (चेन्नई)- सुश्राविका श्रीमती इचरजबाई मुथा धर्मपत्नी स्व. श्री घेवरचन्दजी मुथा का 88 वर्ष की उम्र में स्वर्गगमन हो गया। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करती थीं एवं पिछले 30 वर्षों से रात्रि-चौविहार व्रत का पालन कर रही थीं। आपके पुत्र श्री प्रकाशचन्दजी मुथा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, चेन्नई के उपाध्यक्ष के रूप में सेवाएँ दे रहे हैं।

अजमेर- श्राविकारत्न श्रीमती इन्दुजी धर्मपत्नी श्री उमरावमलजी बोहरा का 20 अप्रेल 2015 को स्वर्गवास हो गया। संघ-सेवा, दीन-दुखियों की सहायता, जीव-दया, नारी-उत्थान आपके जीवन का व्रत था। स्वाध्यायी के रूप में आने कई वर्षों तक सेवाएँ प्रदान कीं।

येसगाँव (नासिक)- श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती पारसबाई स्वरूपचन्दजी संचेती का 8

मई 2015 को 81 वर्ष की वय में संथारे के साथ समाधिमरण हो गया। आप नियमित सामायिक एवं प्रत्याख्यान करती थीं। संयम के प्रति समर्पित सुश्राविका ने अपनी भाणजी एवं दौहित्री को दीक्षा के लिए प्रेरित किया। आपने दो वर्षी तप की आराधना भी की।

जयपुर- श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती उमरावकंवरजी भड़कत्या धर्मपत्नी स्व. श्री उम्मेद

सिंहजी भड़कत्या (टांटोटी) का 83 वर्ष की आयु में 8 जून 2015 को स्वर्गवास हो गया। आप धर्मपरायण महिला थीं। प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करना आपका दैनिक क्रम था। आपने तेले, अठाई, ग्यारह, पन्द्रह, वर्षीतप आदि तपों द्वारा जीवन में धर्म संस्कारों की पुष्टि की। आपकी साधु-साध्वियों की सेवा में गहरी आस्था थी।

जोधपुर- सेवामूर्ति सुश्राविका श्रीमती कमलादेवीजी पारख धर्मसहायिका श्री

जवरीलालजी पारख का 19 अप्रेल 2015 को 64 वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। आप सेवा-भावना की बेमिसाल मूर्ति थीं। आप सहज ही अठाई-नौ आदि की तपस्या कर लेती थीं। प्रत्येक श्रावण व भादवा मास में एकान्तर चलता रहता था एवं रात्रिकालीन संवर व प्रतिदिन 5-6 सामायिक का नियम था।

बिल्लीपुरम्- सुश्राविका श्रीमती केलीबाईजी बम्ब का 103 वर्ष की वय में 26 मई 2015 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सरल, सहज, दया एवं सेवाभाव से युक्त था। आप प्रतिदिन सामायिक-प्रतिक्रमण आदि करती थीं। आप सदैव साधु-साध्वियों की सेवा में तत्पर रहती थीं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा एवं महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता के नेतृत्व में 27 से 29 जून 2015 को 8 श्राविकाओं के साथ मौजपुर, लक्ष्मणगढ़, हरसाना, बिचगांव एवं मण्डावर में श्राविकाओं से सम्पर्क किया गया तथा उन्हें एवं बालक-बालिकाओं को सामायिक लेना व पारना सिखाया गया। हरसाना में श्राविका मण्डल का गठन कर श्रीमती सरोजजी जैन को अध्यक्ष एवं श्रीमती उर्मिला जी जैन को मंत्री तथा मौजपुर में श्रीमती मिथिलेश जी जैन को अध्यक्ष तथा श्रीमती लवली जी जैन को मंत्री मनोनीत किया गया। -*बीना मेहता, महासचिव*

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष)

सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15432 से 15442 तक 11 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

10000/- श्रीमती मधुजी राजेन्द्रचन्दजी सिंघवी (जोधपुर वाले), दिल्ली, स्व. श्रीमती मानकँवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री किस्तूरचन्दजी सिंघवी, जोधपुर की पावन स्मृति में।

5100/- श्री हस्तीमलजी, महेन्द्रकुमारजी, ललितकुमारजी, ऋषभजी, मनीषजी गोलेच्छा एवं समस्त परिवार, ब्यावर-अजमेर, चि. यशवंत कुमारजी सुपुत्र श्रीमती पुष्पाजी-हस्तीमलजी गोलेच्छा संग सौ.कां. खुशबूजी सुपुत्री श्रीमती रतनकुँवरजी-अशोक कुमारजी बोहरा के 6 जून 2015 को सम्पन्न शुभ-विवाह के उपलक्ष्य में।

3100/- श्रीमती सौभाग्यकंवरजी गोलेच्छा धर्मपत्नी श्री मीठालाल जी गोलेच्छा, ब्यावर, सुश्री सोनम सुपुत्री श्रीमती पुष्पा-महेन्द्रजी गोलेच्छा संग चि. राहुल जी बाफना सुपुत्र श्रीमती प्रसन्न-दिनेशजी बाफना के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

2100/- श्रीमती कांतादेवीजी, विनयचन्दजी बम्ब, जयपुर, सुपौत्र श्री अनमोलजी सुपुत्र श्रीमती रीतुजी-अमितजी बम्ब का 10 वीं सी.बी.एस.ई परीक्षा में 90% अंक से उत्तीर्ण होने की खुशी में।

2100/- श्री ज्ञानचन्दजी सिंघवी, जयपुर, पूजनीय श्रीमती कपूरबाईजी धर्मपत्नी स्व. श्री हीराचन्द्रजी सिंघवी 'किशनगढ़ वाले' के 10 जून 2015 को स्वर्गगमन होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

1500/- श्रीमती प्रेमलताजी, प्रकाशजी नवलखा, मुम्बई, चि. प्रतीकजी सुपुत्र श्रीमती कान्ताजी दिनेशजी नवलखा एवं सुपौत्र श्रीमती प्रेमलताजी प्रकाशजी नवलखा (अजमेर वाले) का सी.ए. की परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर नियुक्ति होने की खुशी में।

1101/- श्री लड्डूलालजी, त्रिलोकचन्दजी जैन, चौरू, चि. अनिलजी संग सौ.कां. प्रियंका का 19 जुलाई 2015 को शुभ-विवाह सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1101/- श्री ओमप्रकाशजी, टीकमचन्दजी जैन (बिलोपा वाले), नवसारी, नूतन गृह प्रवेश के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री चौथमलजी, ओमप्रकाशजी, विमलकुमारजी (गांवडा वाले), इन्दौर, चि. जयजी के शुभ-विवाह के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती चविताजी पीयूषजी जैन, जयपुर, सुपुत्र मितुलजी जैन (सुपौत्र श्री बी.एस. निर्मलजी श्रीमती पुष्पाजी जैन) के 10 वीं बोर्ड में 10 सी.जी.पी.ए. आने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री नाथूलालजी, संदीपजी जैन, कोटा, श्रीमती कमलेशदेवीजी जैन की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्रीमती सुनीता कुमारीजी कमलचन्दजी बैद, जयपुर, नूतन गृह प्रवेश की खुशी में।

1100/- श्री जैन सा, जयपुर की ओर से सप्रेम भेंट।

1100/- श्री भीमसिंहजी, नरेन्द्रसिंहजी, सुरेन्द्रसिंहजी भड़कत्या, जयपुर, श्रीमती उमरावकँवरजी की पुण्य स्मृति में।

1100/- श्रीमती विद्यादेवीजी कोठारी, जयपुर, सुपौत्र की सगाई के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती मंजूकंवरजी-श्री राजेन्द्रकुमारजी ओस्तवाल, जोधपुर, सुपुत्रियों सुश्री गरिमा एवं सुश्री दिव्या ओस्तवाल के सी. सैकण्डरी एवं सैकण्डरी परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री कन्हैयालालजी, पुखराजजी, पंकजजी, दिलीपजी चौधरी 'पहुँना वाले', भीलवाड़ा, अपने नवनिर्मित कार्यालय सत्यम् शूटिंग के अवसर पर।

1100/- श्री निर्मल कुमारजी, नरेन्द्रकुमारजी पारख, जोधपुर, श्रीमती कमलादेवीजी पारख धर्मपत्नी श्री जंवरीमलजी पारख का 19 अप्रेल 2015 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री राजूलालजी, नरेन्द्रमोहनजी, जिनेन्द्रकुमारजी जैन 'श्यामपुरा वाले', सवाईमाधोपुर, श्री नरेन्द्रमोहनजी जैन के प्रधानाचार्य पद से 31 मई 2015 को सेवानिवृत्त होने पर।

1100/- श्री मनीषकुमारजी, अमितकुमारजी बोगावत, नागपुर (महा.) सहयोगार्थ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के सत्साहित्य के लिए अर्थसहयोग

67,264/- श्रीमान् रतनलाल सी. बाफणाजी, जलगाँव, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल से प्रकाशित पुस्तक "विचारों के आभूषण व सबको प्यारे प्राण" के पुन: प्रकाशन हेतु।
श्रीमान् विनोदजी, पूर्णिमाजी, विवेकजी, विज्ञानजी लोढ़ा, जयपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल से प्रकाशित पुस्तक "उत्तराध्ययन सूत्र भाग-1" की 3100 प्रतियों के मुद्रण हेतु।
श्रीमान् प्रमोदजी मुणोत, जयपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल से प्रकाशित पुस्तक "संस्कारम्" की 1000 प्रतियों के मुद्रण हेतु।

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

संघ-सेवा सोपान के अन्तर्गत साभार प्राप्त

9000/- वीर पिता श्री उसबचन्दजी सालेचा, हुबली, जीवदया एवं शिक्षा-दीक्षा सहयोगार्थ।

9000/- वीरमाता श्रीमती शोभादेवीजी सालेचा, हुबली, शिक्षा-दीक्षा सहयोगार्थ।

8000/- वीरभ्राता श्री महेशचन्द्रजी सालेचा, हुबली, शिक्षा-दीक्षा सहयोगार्थ।

1100/- श्रीमती चन्द्रकलाजी जैन, जोधपुर, संघ सहायतार्थ।

1100/- श्री सागरचन्दजी हुकमचन्दजी सेठिया, शिरपुर, अपनी भानजी सौ. कां. रूपाली बोहरा-निफाड़ के मायरा एवं विवाह सम्पन्न होने की खुशी में संघ-सहायतार्थ।

1100/- श्रीमती रक्षिताजी मेहता, जोधपुर, जीवदया हेतु।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार प्राप्त

5000/- श्री जौहरीमलजी गजराजजी छाजेड़, जोधपुर, सहयोगार्थ।

3000/- श्रीमती मधुजी-राजेन्द्रचन्दजी सिंघवी 'जोधपुर वाले', दिल्ली, स्व. श्रीमती मानकंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री किस्तूरचन्दजी सिंघवी की पावन स्मृति में।

1100/- श्री पी.सी. जैन, श्रीमती चन्द्राजी, रचितजी, सुमनजी अब्बाणी, जोधपुर, चंचलमल पारसकंवरजी अब्बाणी की पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री कन्हैयालालजी, पुखराजजी, पंकजजी, दिलीपजी चौधरी 'पहुँना वाले', भीलवाड़ा, अपने नवनिर्मित कार्यालय सत्यम् शूटिंग के अवसर पर।

1100/- श्री राजूलालजी, नरेन्द्रमोहनजी, जिनेन्द्रकुमारजी जैन 'श्यामपुरा वाले', सवाईमाधोपुर, श्री नरेन्द्रमोहनजी जैन के प्रधानाचार्य पद से 31 मई 2015 को सेवानिवृत्त होने पर।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

120000/- श्री महावीरचन्दजी राजेशजी, राकेशजी ललवाणी, चिन्तादरीपेठ, चेन्नई, सहायतार्थ।

24000/- श्री राजमलजी, प्रसन्नकंवरजी, मनोजजी, नेहाजी कवाड़, मुम्बई, सहायतार्थ।

12000/- श्री दलीचन्दजी-प्रकाशबाईजी नाहटा, के.जी.एफ.-कर्नाटक, अपने शादी के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में।

12000/- श्री उत्तमचन्दजी, राहुलकुमारजी नाहटा, के.जी.एफ.-कर्नाटक, सौ. कां. मोनिका सुपुत्री श्री उत्तमचन्दजी नाहटा संग चि. अभिषेकजी के विवाह के उपलक्ष्य में।

12000/- श्री सोहनलालजी बोथरा, भोपालगढ़, सहायतार्थ।

12000/- श्री प्रेमलताजी बोथरा, भोपालगढ़, सहायतार्थ।

12000/- श्री महावीरचन्दजी बोथरा, जलगांव-भोपालगढ़, सहायतार्थ।

12000/- श्रीमती उषाजी धर्मपत्नी श्री महावीरजी बोथरा, जलगांव-भोपालगढ़, सहायतार्थ।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. B. Budhmal Bohra**, Poojaa Foundation, W-570, Park Road, Annanagar West Extn., Chennai-600101 (Mob. 9543068382)*

आगामी पर्व तिथि

द्वितीय आषाढ़ कृष्णा 14, बुधवार	15.07.2015	चतुर्दशी,पक्खी
द्वितीय आषाढ़ शुक्ला 8, शुक्रवार	24.07.2015	अष्टमी
द्वितीय आषाढ़ शुक्ला 14, गुरुवार	30.07.2015	चतुर्दशी, चातुर्मास प्रारम्भ
श्रावण कृष्णा 8, शुक्रवार	07.08.2015	अष्टमी
श्रावण कृष्णा 14, गुरुवार	13.08.205	चतुर्दशी
श्रावण कृष्णा 30, शुक्रवार	14.08.2015	पक्खी, आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. की 89 वीं पुण्य तिथि
श्रावण शुक्ला 8, रविवार	23.08.2015	अष्टमी

जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी

गुणगान

गुरुवर के गुणगान
करना है होकर एकतान।।

परिष्कार

गुरुकृत तिरस्कार,
शिष्यहित आत्मपरिष्कार।।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

रत्न संघ के अष्टम पट्टधर परम पूज्य आचार्य भगवंत 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सतीमण्डल की असीम कृपा एवं रत्नसंघ के संघनिष्ठ गुरुभक्तों के पूर्ण सहयोग से गत 9 वर्षों से युवारत्न छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक उन्नति एवं नैतिक व आध्यात्मिक जीवन में अभिवृद्धि करने के लिए छात्रवृत्ति योजना निरन्तर चल रही है। संघ द्वारा योजना का आगे विस्तार कर दिया गया है।

इस वर्ष के लिए इच्छुक छात्र-छात्राएँ चयन समिति से आवेदन-पत्र मंगवा कर पूरित आवेदन पत्र चयन समिति के पास प्रेषित कर सकते हैं । इस योजना से संबंधित नियमावली इस प्रकार है-

नियमावली

1 आवेदक को प्रतिदिन 1 नवकार मंत्र की माला जपने का संकल्प करना होगा।

2 आवेदक सदाचारी हो एवं उसे सप्त कुव्यसन का त्याग करना होगा।

3 आवेदक को एक महीने में 5 सामायिक करने का संकल्प करना होगा।

4 चयनित विद्यार्थियों को अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित शिविरों में भाग लेना अनिवार्य होगा ।

5 छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत **Scholarship Requisition Form** के आधार पर चयन समिति के निर्णयानुसार छात्रवृत्ति की राशि प्रदान की जायेगी। छात्रवृत्ति राशि की अधिकतम सीमा निम्नानुसार है।

Class	**Up to Class 10th**	**11th & 12th**	**Graduation & Post Graduation**	**Professional etc.**
Maximum Limit	Rs. 6000/-	Rs. 9000/-	Rs. 12000/-	Rs. 27500/-

6 चयन समिति के अनुसार **Scheme 1st** में उन विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा जो व्यावहारिक शिक्षण में कम से कम 70% और धार्मिक शिक्षण में 60% से अधिक अंक प्राप्त करेंगे। इससे कम अंक वालों को **Scheme 2nd** में मान्य किया जायेगा।

7 सभी विद्यार्थियों को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर द्वारा आयोजित परीक्षा देना अनिवार्य है।

नोट- लाभान्वित छात्र-छात्राएँ प्राप्त छात्रवृत्ति राशि को भविष्य में अपनी अनुकूलता अनुसार संघ को वापस प्रदान करते हैं तो उनका स्वागत है।

आवेदक की योग्यता- आवेदक की आयु 12 वर्ष से अधिक एवं 30 वर्ष से कम होनी चाहिए। आवेदक रत्न संघ का सदस्य होना चाहिए।

आवेदन पत्र प्रेषित करने का स्थान :-B. Budhmal Bohra, "Pooja Foundation", Door No. 921, 1st Floor, Poonamalle High Road, EVR 1st Lane, Chennai-600084(TN), Mob.-09543068382, Email- guruhasti_scholarship@yahoo.co.in

आवेदन पत्र प्रस्तुत करने की अन्तिम तिथिः- पूरित आवेदन पत्र प्रस्तुत करने की अन्तिम तिथि 31 अगस्त 2015 है। आवेदन पत्र उपर्युक्त पते से मंगवाया जा सकता है। आवेदन पत्र की प्रतिलिपि (Photo-Copy) मान्य होगी। छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें- मनीष जैन-09543068382

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 69 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 11 से 18 सितम्बर 2015** तक रहेंगे। अत: देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **05 अगस्त 2015** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहर का नाम......................जिला.............प्रान्त................
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता..
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं...
   ....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं...
   ....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन.......................................
   ....
6. समस्त जैन घरों की संख्या...
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.....................................
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.........................
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव..
10. अन्य विशेष विवरण...

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, फैक्स-2636763,मो.-9460441570(संयोजक),9461013878(सचिव), 94142-67824,9462543360(का.प्रभारी),ईमेल-swadhyaysanghjodhpur@gmail.com

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079 के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री सुधीर जी सुराणा, फोन नं. 09380997333 (मोबाइल)044-25295143 (स्वाध्याय संघ)

अलविदा बाईपास सर्जरी

अब बाईपास सर्जरी के बारे में कभी ना सोचियें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी

(ई.ई.सी.पी.)

द्वारा प्राकृतिक बाईपास करवायें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) में क्या होता हैं :-

हृदय रोगी को साधारणतया 35 दिन तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन जो कि एफ.डी.ए., अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त है, पर दी जाती है । यह थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन के विशेष प्रकार के बिस्तर पर रोगी को लिटाकर दी जाती है। तीन बड़े हवा से फूलने वाले कफ पैड जो ब्लड प्रेशर उपकरण के कफ पैड की तरह के होते हैं, उन्हें रोगी की पिंडलियों, जांघ एवं कमर के निचले हिस्से पर बाँधा जाता है एवम् इन कफ पैड के इनफ्लेशन एवम् डिफ्लेशन की क्रिया को मशीन से जुड़े कम्प्यूटर द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस सारी प्रक्रिया का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ मशीन के पर्दे पर अवलोकन किया जाता है। मशीन पर उपचार के दौरान कफ पैड के फैलने पर रक्त पूर्ण दबाव से हृदय की ओर जाता है एवं इस दबाव के कारण हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियों में रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होकर इन धमनियों को क्रियाशील कर देता है व हृदय को प्रयाप्त मात्रा में रक्त मिलने से व्यक्ति को एन्जिना दर्द (छाती दर्द) नहीं होता हैं। 35 दिन तक यह थैरेपी लेने से हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियाँ स्थायी रूप से खुल जाती है और छोटी-छोटी धमनियां आपस में जुड़कर नई धमनियों का निर्माण करती हैं।

श्रीमती गुलाब कुम्भट मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

समर्पण हार्ट एण्ड हैल्थ केयर सेन्टर

ए - 12, इण्डस्ट्रीयल एस्टेट, उद्योग भवन के पास, न्यू पावर हाउस रोड़, जोधपुर (राज.)

Email : samarpanjodhpur@gmail.com

फोन : 2432525

सम्पर्क : धिरेन्द्र कुम्भट 93147 14030

卐 चारित्र आत्माओं के लिए ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क उपचार 卐

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।

– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती

डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अंतर में सच्चाई चाहिए और व्यवहार में सफाई चाहिए, वही प्राणी संसार में अपना आत्म हित कर जगत के सामने आदर्श रख सकता है ।

- आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

Gurudev

SURANA™
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

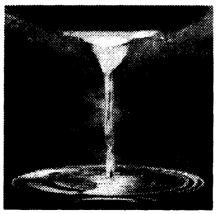
Electric Arc Furnace

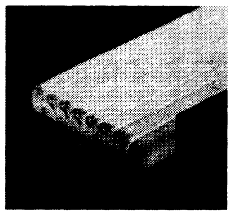
Billets

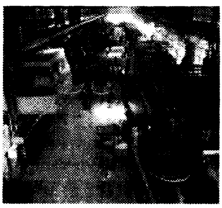
Rolling Mill

Captive Power Plant

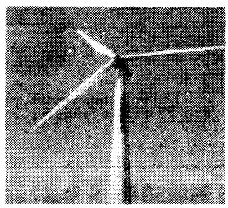
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

।। पूण्यार्जन का सुनहरा अवसर ।।

सदस्यता अभियान से जुड़िये, गुरु भाईयों की शिक्षा में सहयोग करिये।

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना संघ की महत्त्वपूर्ण योजनाओं में से एक योजना है, अब इस योजना की निरन्तरता के लिए समिति पदाधिकारियों ने निर्णय लिया है कि छात्रवृत्ति योजना में अर्थसहयोग के लिए सदस्यता अभियान प्रारम्भ किया जायेगा, जिसमें सदस्यों द्वारा प्रतिवर्ष अर्थसहयोग किया जायेगा। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य	रजत स्तम्भ सदस्य
(5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	(1 लाख रुपये प्रति वर्ष)	(50 हजार रुपये प्रति वर्ष)

नोट–सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

जो भी अनन्य गुरुभक्त योजना में अर्थ सहयोग करके सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं एवं एक छात्र के लिए 12000/- रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का सहयोग करने के लिए चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है –

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address – AXIS BANK LTD. Anna Salai,Chennai(TN) IFSC Code – UTIB0000168
PAN No. – AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पूण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची –

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)	रजत स्तम्भ सदस्य (50 हजार रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई।	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस,चैन्नई।	
युवारत्न श्री हरीशजी कवाड़, चैन्नई।	श्रीमान् लक्ष्मीमल जी लोढ़ा,जोधपुर।	
श्रीमान् राजीव नीताजी डागा, ह्यूस्टन	श्रीमान् दलीचंद जी सुरेशजी कवाड़, पून्नामल्लई।	
	गुप्त सहयोगी, चैन्नई।	
	श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई।	
	श्रीमान् राजेशजी विमलजी पवनजी बोहरा, चैन्नई।	
	श्रीमान् गणपतजी हेमन्तजी बाघमार, चैन्नई।	

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें-

B.Budhmal Bohra - Poojaa Foundation, Door No. 921, 1st Floor, Poonamallee High Road, EVR 1st Lane, **CHENNAI-600084** (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें- मनीष जैन, चैन्नई **(Mob.095430 68382)**

स्वाध्याय से ही आप आत्म-निर्माण
और समाज-निर्माण के साथ जिनशासन
को समुन्नत करने में समर्थ होंगे।
-आचार्य हस्ती

K.L. COTTON MILLS
T.M.J. No. 1393
kelico®
remembering quality

KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER
• PACHPADRA • PALI • ERODE

K.L. ASSOCIATES

'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali - 306 401 (Raj.)
Mobile: 094141 22757
135, N.M.S.Compound, ERODE - 638 001 (T.N.)
© Off : 3205500, Mobile: 93600 25001

Jai Guru Heera Jai Guru Hasti Jai Guru Maan

शाश्वत सुख के लिए प्रतिपल प्रयत्न करने वाले जीव मुमुक्षु कहलाते हैं। ये जीव साधक भी हो सकते है और श्रावक भी।
- आचार्य श्री हीरा

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

॥श्री महावीराय नमः॥

॥जय गुरु हस्ती॥ ॥जय गुरु हीरा-मान॥

रात्रि भोजन त्याग रूप व्रत को आत्म-कल्याण के लिए स्वीकार करना चाहिए।
– भगवान महावीर

रात्रि भोजन त्याग के साथ-साथ भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार करके ही अन्न ग्रहण करना चाहिए।
– आचार्य हस्ती

अहिंसा परमो धर्म

रात्रि भोजन सदोष व तामसी आहार होता है। समाधि का अभिलाषी साधक ऐसी तामसी आहार से दूर ही रहता है।
– आचार्य हीरा

रात्रि भोजन करें या न करें, अगर त्याग नहीं है तो उसे दोष लग ही रहा है। अतः रात्रि भोजन का प्रत्याख्यान करना आवश्यक है।
– उपाध्याय मान

सामूहिक रात्रि भोजन आयोजन त्याग हेतु विनम्र अपील

प्रभु वीर का शासन मिला, गुरु भगवन्तों का सानिध्य मिला।
श्रद्धा-भक्ति के भाव जगे, सामूहिक भोज रात्रि को तजे॥

रात्रि भोजन त्याग जैनों की प्रमुख पहचान है।

रात्रि भोजन करना दुर्गति का कारण है।

रात्रि भोजन अनर्थदण्ड व पाप का कारण है।

आओ - हम सब संकल्प करें कि सामूहिक रात्रि भोजन का आयोजन कदापि नहीं करेंगे।

विनीत – समस्त जैन समाज

सौजन्य से : मधु कवाड़, चैन्नई

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 जुलाई, 2015
वर्ष : 73 ★ अंक : 07 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 जुलाई, 2015 ★ द्वितीय आषाढ़, 2072

waterfront
at KALPATARU riverside PANVEL

Premium 2 & 3 BHK residences

022 3064 3065

Promoters: **M/S Kalpataru + Sharyans**

Site Address: Opp. Panch Mukhi Hanuman Temple, Old Mumbai - Pune Highway, Panvel - 410 206. I **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. Tel.: + 91 22 3064 3065 I Fax: + 91 22 3064 3131 I Email: sales@kalpataru.com I visit: www.kalpataru.com

Images are for representative purposes only. This property is secured with Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate / Permission would be provided, if required. Conditions apply.

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन